॥ अथ भूमिका ॥

प्रगट हो आज कल के जमाने में आल्हा की गांव २ वा शहर २ में [illegible]र मार हो रही है और बहुत सी किताबें आल्हखंड की छपी हैं लेकिन [illegible]ीना लाखन ठीक २ नहीं मालूम हुआ और गाने वा पढ़ने वाले ठीक २ [illegible]त्त धर्म जो आल्हखंड में हैं उनको नहीं जानते न गाते हैं सो यह नवीन किताब आल्हा रतन गौना लाखन जो अभी तक कोई बात किताबों में पाई और कोई २ बात गाने वालों की जबान पर थी वह ढूंढ़ २ करि कोई २ बात रामायण वगैरः से ढूंढ़ २ कर इस में लिखी हैं जो किसी आल्हा खंड वा आल्हा गाने वालों को आजतक नसीब नहीं हुई होंगी क्योंकि इस में मौके २ पै सत वा धरम और दुनिया के नसीहत वा ज्ञान पैदा होने की बातें दोहा वा कविता वा कुड़रियों वा छंद आल्हा में गाई हैं देखने से वा पढ़ने वा सुनने से गुण मालूम हो जाइगा कि प्रथम भगवान के दस अवतारकी लीला गाई है फिर महादेवकी अस्तुत वा आल्हा के तीन जनम का हाल गाया है और जन्म के मिती वा सन् [illegible] और महोवा छोड़ कर कनवज में रहे वहां से गौने की लड़ाई शुरू [illegible] गई है (१) [illegible] [illegible] का [illegible] कांवर को जाना और [illegible]सुरी से लाखनि का छिपकर भाग आना और ऊदनि का कांवर को जाना और कांवर में खालिर [illegible] और बमूजिब खत तिलका रानी के ऊदनि का कैद होना । (२) और दुवारा कुसमा का चिट्ठी भेजना आल्हा के पास रिजगिर में और आल्हा वा लाखनि का कांवर को घ-[illegible]ना और इंदल का सीस देवी को चढ़ा कर नटरा बनकर ऊदनि की कैद छुड़ाना और समर यानी घोर युद्ध होना और जादू की लड़ाई में सबका [illegible]द होना और ऊदनि को सुवा बनाकर पिंजरा में बंद करि कैं किले पर [illegible]ांस गाड़कर टांग देना (३) ऊदनिका कील काटकर पिंजरे में से उड़-[illegible]ा और सिरसा में पहुंचना और असली सूरत होना और महोवा से [illegible]लिखान वा ब्रह्मा वा जैचंद व सुभिया वेड़नी वा जो राजा काबू थे [illegible]बको लेकर कांवर में जाना और जोगी बनकर सबको तलासकर असली [illegible]ूरत बनाना और इंदल का जिन्दा होना और अमर कराना और सू-[illegible]ज को मारना और जादू वाली औरतों को जीत और कामशाह को [illegible]ीत कर कांवर में अपना दखल करके, लाखनि को गौना लेना और क-[illegible]वज को लौट आना धुनि आल्हा पुरवी राह में गाया है ॥

पता=टीकाराम कौम लोधी साकिन मौजा बुलाकीपुर

लुहरना जिला इटा

॥ विषय सूची ॥

पुस्तक मिलने का पता—

टीकाराम कौम लोधी साकिन मौज[illegible]

बुलाकीपुर लुहरना

पोस्ट व जिला इटावा

श्रीगणेशायनमः ॥

आल्हारत्नगौनालाखन

॥ आल्हा रत्न गौना लाखन ॥

कुडरिया।

जग माया दाया करौ, आया तुम्हरे थान। कृपा हमपर कीजियो दास आपनों जान ॥ दास आपनौ जान कंठ पै बैठ भवानी। दुष्टन करु सिघार सन्त करु निर्मल बानी ॥ गावत टीकाराम रामगुण दस अवतारा। पूरण देउ कराय वखानै सब संसारा ॥

दोहा ॥

दशअवतार बखानिहैं जो धारे कर्तार; रक्षा कीनी भगतपै दुष्ट करै सिंघार॥

चौपाई।

जब २ होय धरम की हानी। बाढ़ें असुर अधम अभिमानीं ॥
तव २ हरि धरि बिबिध शरीरा। हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा ॥
धुनि आल्हा सूक्ष्म बिस्तारा। जो सुनि गावै सब संसारा ॥

छन्दआल्हा। प्रथम मत्स्य अवतार धारण करना ॥१॥

जब २ भीर परत भगतन पै तब २ आनि धरे अवतार। दश अवतार धरे जग मांही सब कौ गाय करौं विस्तार ॥ शंखास्वर जो हतो निशाचर चोरो करी वेद की जाय। बिना वेद जब दुनियां हुइ गई सुर मुनि सब लागे घबरान ॥ करी टेर तब पारब्रह्म सों सुनियो दीनबन्धु भगवान। धरती डूबि जाय सागर मैं खलबल परिगयो सकल जहान। लै वेदनि सागर मैं बैठो सुर नर कंपि २ रहि जाय। तब हरि मत्सरूप धारण करि शंखास्वर डारो मरवाय ॥ लैके वेद दये ब्रह्मा को जै जै भई स्वर्गमें जाय। ठीकाराम गाइ धुनि आल्हा कछु थोरी सी लिखी बनाय ॥

अथकूरमयानीकच्छअवतारधारणकरना२

श्री मन रम्भा वारुणी अमी शंख गजराज। कल्पद्रुम शशि धेनु धन धन-वन्तर बिष बाज ॥

चौदह रतन मथे ठाकुर ने सो मथि काढ़े समुद्र मझार ॥ धनि कूरम करता वपु धारी नित नई लीला रचत अपार ॥ देवता दानव सिगरे मिलि के समुद्र मथन को करी विचार । दीनागिर की रई बनाई नारे शेशनाग तैयार ॥ लय पर्वत पानी में डारो सो पाताल समानो जाय । करि करि पौरुष देवता हारे दानव वैठि रहे खिसियाइ ॥ कूरम रूप धरो तिरलोकी तब गिर धरो पीठ पै जाइ। चौदह रतन काढ़ि सागर में सो सब जानै सकल जहान ॥ श्रीरमा मनि रम्भा निकरीं और वारुणी अमी गजराज । कल्पवृक्ष और शंखधेनु शशि धनवन्तर निकरे विषराज॥ धनि २ लीला है कूरम की करता तीनलोक भगवान। टीकाराम कही थोरीसी तुमहो धनि २ भगवान

अथ बारह अवतार धारण करना ३ ॥

हिरनाक्षजोधाभयो समर न माड़ेकोइ। करीचटाई धरणिकी रसातालरहोसोइ

छन्दआल्हा ॥

लय धरती धसि रसाताल में सोयो नींद छमासी जाय । बिना मही जलु सब दुनियां में हुइगई जलामई संसार ॥ चढ़े विमानन देवता बिलखैं दुनियां होन लगी लिचार । अस्तुति कीनी सब देवतानने अरु जल रहो नैन में छाय । जल्दी नाथ खबर अबलीजौ कीजौ कृपादृष्टि भगवान ॥ सुनि स्वर बानी पारब्रह्म ने सूकर जन्म भयौ तैय्यार । छींकत ब्रह्मा सूकर जन्मा छिन में धरती लई उठाय ॥ भई लड़ाई जब निश्चर सौ टूटे रोम श्रीभगवान । टूटे रोमा कुश हरि कीना धरती जल पै दई धराय ॥ जै जै कार भयो नभ मांहीं अपनी शक्ति सौंपिदई जाइ । टीकाराम गाय कर भांखै नैया दीजौ पार लगाय ॥

अथ नरसिंह अवतार धारण करना ४ ॥

हिरणाकुश निज पुत्र कौं देत दुःख अति घोर । रक्षा कीनी भगत पै निकरे खम्भा फोर ॥ निकरे खम्भा फोरि निशाचर उदर बिगारा । घोर महा विकराल कंपि गयो सब संसारा ॥ गावत टीकाराम भक्तहित करी न देरी। सुत को लियो बचाय पिता तन करदई ढेरी ॥

छन्दआल्हा ॥

पिता पुत्र को अब झगड़ो है सो प्रह्लाद करो तैयार । पिता कही

बिन एक न मानी वसि गये रोम २ में राम॥ कोऊ पढ़तु है बीघा विश्वा कोऊ बांचत दमरी छदाम॥ रामनाम प्रह्लाद पुकारै नाहीं और नामसे काम कबहूं डार देत परवत से कवहूं जल में देत डराय। कबहूं डार देत अग्नी में कबहूं घुड़की देय दिखाय॥ तो हू रटना राम नाम की लागी कुंवर श्री प्रह्लाद। सौ सौ कही एक ना मानी जानी नहीं दूसरी बात॥ लाल खम्भ हिरणाकुश करिकै तब प्रह्लाद दियो बंधवाइ॥ तेगा नग्न करो निश्चर ने धमकी दई बहुत खिसियाइ॥ अब मैं देखों तेरे ठाकुर को जो खम्भा में करैं सहाय। कोइ बचावैं जा अवसर मैं अबहूं चेतु मूढ़मति आइ बड़ी ग़रीबति आधीनी ही तब बालक ने दिया जवाब मोमैं तोमैं खर्ग खम्भ में सबही में हरि रहे समाय॥ तान सिरोही हुय निरमोही म्यान सौ खैंच लई तलवार खम्भ फार नरसिंह रूपधरि खम्भ से प्रगट भये भये भगवान॥ भारी शब्द भयो दुनियां मैं तीनों लोक उठे दहलाय॥ कंपि देवता स्वर्ग लोक मैं नीचे शेश नाग दहलाय। तारी खुलि गई शिवशङ्कर की छूटे ध्यान मुनीश्वर क्यार॥ ब्रह्मा कंपे ब्रह्मलोक में धरती धसी रसातल जाय। पेट फारिकै तब निश्चरको नहु २ डारो उदर विगार। सुमन वृष्टि भई स्वर्ग लोक से जै जै देवता रहे पुकारि॥ जब धरि मारी हिरणाकुश कौ टीकाराम करो विस्तार॥

बावन औतार धारण करना ५॥

कवित्त।

बावन ब्रह्म लये औतार गये वलिद्वार छले जेहि कारी। मांगि लई लघु भीख जबै तब तीन लता सों सब भुई हारी॥ शुक्र सिखावन मानिलै भूपति जाही तैं जल रुद्र विचारी॥ होनी हती एकही अंखिया सब ठाड़े ही रहे उन कोर ही डारी॥

छन्द आल्हा॥

भारी यज्ञ करी वलिराजा राजाइन्द्र लगे घबड़ान। गरदी लैहै स्वर्गलोक की पूरण यज्ञ लेइ करवाय॥ जाय पुकारे श्री ठाकुर पै तब त्रिलोकी सुनी पुकार। राजा वलिके छल के काजै बावन जनम न धरौ मुरार॥

चौपाई।

बावन जन मन धरो मुरारी। मांगत भीख राज बल द्वारी॥
मांग २ राजा वलि बोले। सत के बचन नेंक नाहिं डोले॥

जो मांगत सो पावत स्वामी । तव रानी सैं बोलत स्वामी ॥
जीती सरतु यही मिजवानी । मांगन होय सो मांगि लै रानी ॥

कवित्त ।

मांगिले राज तिहूपुर को और मांगिले री वैकुन्ठ निशानी । सोरह सिंगार वारह आभूषण जोवन जोर नई रजधानी ॥ इन्द्रहू को इन्द्रासन मांगलै सत्त रहे की यही मिजमानी ॥ बारहिं बार कृपाल कहैं तोहि मांगने होय सो मांगले रानी ॥

जवाब रानी को भगवान सैं ॥

कवित्त ।

हाड़ेल हारि दई धरती और फेर न पांव धरै महिमांही । रैनि को त्याग दियो चकई वह कंथ को देखत शत्रु की नांही ॥ ऐसे कही प्रभु दानी भये और मो वलि द्वार पसारत वांही ॥ गंगा लौटि पछौहीं वहैं पर मंगनि पै हम मांगत नांहीं ॥

चौपाई ।

रानी बोलत सुनो मुरारी । मो दर्वाजे बने भिखारी ॥
मंगनि पै हम मांगत नांहीं । दै हो कहा जो है जगमाहीं ॥

कवित्त ।

ए कर्तार मैं तो सैं कहों विधि भूलि कै काहू को दै जिन टोटो । काहू के भाग लिखे मति माल सो माल के काजै महीपति पोटो ॥ तुम का अपने जी जानत नाहिं कि मांगन से कछु और न छोटो । मागन द्वारगये बलि के और पहिले ही बावन वनिकै छोटो ॥

दोहा ॥

साईं वे नर मरचुके जो कछु मांगन जाहिं । उन से पहले वे मरे जो मुंहसों निकरै नाहिं ॥ अपुचीती होती नहीं प्रभुचीती तत्काल। जान कहत वैकुण्ठ वलि पठै दये पाताल ॥

छन्द आल्हा ॥

मांगु २ ठाकुर जी वोले तब रानी ने दियो जवाब । बड़ी गरीवति आधीनीसों और ठाकुर कों दियो जवाब ॥ नित उठि दर्शन मिलैं आपके जामेरे जी रहै समाय ॥ छलन गयेते राजा वलिकों सो हरि आप ही रहे

छलाय । जै जैकार भयो नभमाहीं देवता फूल रहे वर्षाय ॥ टीकाराम धन्नि करि गावै वलि के भये पहरुआ जाय । ऐसे राम वचन के गाढ़े राजा वलि के द्वारें ठाढ़े ॥

(६) श्रीपरसराम अवतार ॥ छन्दआल्हा

जब अभिमान बढ़ौ छत्रन कौं दुनियां होनलगी विषमार । महादुखारी जब प्रजा भई टेरै हाय २ करतार ॥ टेर सुनी जब त्रिलोकी ने तब भयो परसराम अबतार । मारि २ कें सब क्षत्रिनकों मारि उतारौ भूमि को भार ॥ क्षत्री हीन मही हरि करिकें विप्रन करी भूमि भर थार ॥ करी अकच्छ भूमि क्षत्री विन नहिं कोई कांक्षि देतु संसार । नाम सुनत ही परसरामको क्षत्रीकांछि खोलि देंय हाल॥ जै जैकार भयो दुनियांमें देवता फूल रहे वरषाय ॥

चौपाई ॥

क्षत्री गरव बढ़े जगमाहीं । भृगु के सुत हुइ गरव नशाहीं ॥
छत्र नछत्र करी महि हीनी । गरव करो जिन जग में कोई ॥
गरव अहारी है प्रभु सोई । जिन २ गरव करो जगमाहीं ॥
सो सब खोये छिन के माहीं ॥

श्रीरामचन्द्र श्रीमहाराज अजुध्या जी में औतार लेना ॥ ७ ॥

कुड़रिया ॥

अवधपुरी सरजू निकट रामलीन अवतार । रक्षा कीनी भगत की दुष्ट करे संहार ॥ दुष्ट करे संहार धरम दुनियां में छायो । गुरु की यज्ञ कराय जनकपुर धनुष उठायो ॥ गावत टीकाराम मान भूपन के मारे । परसराम संवाद लछिन जब वचन उचारे ॥

जवाब परसराम जी को लक्ष्मण जीसैं

कुड़रिया ॥

छोटो है खोटो बड़ो राम तोर लघु भाइ । जानतु नहिं प्रभाव मम काल रहो नियराय ॥ काल रहो नियराय कुड़ारा मारतु जाकैं । छिट क-

टाय रिस खाय दौड़ झपटत हैं जाकें ॥ गावत टीकाराम राम जब बोले हसिकें । आगू बढ़िकें जाय लछिन जब बोले तकिकें ॥

जवाब लक्ष्मणजीको परसराम ॥ कवित्त ।

लक्ष्मण वात कही हंसिके तुम ब्राह्मण हो हम बोलत नाहीं । कहो तो दान मंगायकें देयं सो जाउ वनै अवधै हम जाहीं ॥ हमरे कुलकी रीति यही मुखसों कहिकें हम बदलत नाहीं । खोलैं काढ़ि अकस फिरें सो निकक्ष करे तिन में हम नाहीं ॥

छन्द आल्हा ।

सीलै व्याहि राम घर आये नित नव होत मङ्गलाचार । रामराज की होत त्यारी वाही अवधपुरी दरवार ॥ शंका खाई है देवतनने तब उन कुमति दई पठवाय । चेरी मन्थरा जो केकई की बैठी कुमति कंठपै जाय ॥ वां मति फेरी है रानी की गवनी कोप भवन में जाय । सुनत खबरियां रनवासन की राजा गये केकई पास ॥ राजा बोलत हैं रानी सों का दुख भयो केकई नार । गर्दी हुई है रामचन्द्र की मङ्गल गावौ महिल मझार ॥ तब रानी समझावन लागी गरदी होय रामकी आय । कौन बूझि है मेरे भारथ कों वे माठा के मोल विकायं ॥ हम चेरी हैंयगी कौशिल्याकी घोड़न लीदि उठावें जाय । जासों स्वामी समझावति हैं। वनको जायं श्रीभगवान ॥ चौदह वरष रहैं वन माहीं गरदी देउ भरत को जाय । सुनत खबरियां वनोवास की धरतीं गिरे तमारी खाय ॥ खबरि फैलिगई अवधपुरी में रैयति रोवै जार बजार । कीनीं त्यारी वनोवास की जब सीता ने सुनो हवाल ॥ खाय पछाड़ गिरी धरती पै तब रघुवर ने दियो जवाब । कोमल रूप उमरि है थोड़ी सुनियो जनकदुलारी क्वार ॥ कठिन वास है व्या वान को घर ही रहो जान की क्यार ।

जवाब श्रीजानकी जी को ॥

राम विपिन सुनि मैथली लगो वज्र सम वैन । अति अधीर पति पाद गहिं कहत नीर भर नैन ॥ कहत नीर भर नैन बैन भरि २ दृग रोवै । तुम विन सूनौ धाम राम सुख तुम पद सेवै ॥ गावत टीकाराम साथ हरि लैना जै हो । करि हों अपनों घात खाय विष मैं मरिजैहों ॥

छन्द आल्हा ॥

जासों चलि हों संग तुम्हारे वन में झेलों दुःख अपार । सीता स-

हित और लछमण जी संग सुमन्त लये करवाय ॥ गंगा उतरे प्रयागराज में पहुंचे चित्रकूट निजधाम । बैसरनी मन्दाकिन गंगा सुन्दर सुर तहां कुटी बनाय ॥ लौट सुमन्त चले राजा तें राजा को वचन सुनाये जायं । सुनत वतक ही सुमन्त जी को धधका भयो करेजा जाय ॥ हाय सीता हाय लछमण कहिकैं धरती गिरत राम रटि राम । प्राण छोड़ि दये हैं दशरथने अरथी भूमि गिरी भहराय ॥ भयो बुलौआ तब भारथको आये भरत शत्रु हलुराय । धसतहिं देखो अवधपुरी कों रोवत प्रजा लखी अपार ॥ छाय उदासी गई भारथ कें गवनें भवन केकई क्यार । माता बोलत है भारथ सों बेटा मानों वचन हमार ॥ राम लछिन बन कों पठवाये कीजे राज अवधपुर जाय । सुनत वतक ही निज जननी की गोरे वदन स्याह परि जायं ॥ हिलकी भरि२ रोवैं जर २ आंसू रहे नैन में छाय । तचिकैं भारथ बोलन लागे माता तेरो बुरो हुइ जाय॥ नालति तेरे जा जीवन कों जो मुंह हमैं दिखाऔ आय ॥

कुड़रिया ॥

भूप अरन रघुनाथ वन मातु वचन सुनि कान । विकल हृदये बोले भरत सुनु माता अज्ञान ॥ सुनु माता अज्ञान वंश नांशन में लागी । छिन में दियो जराय फूंस कों जैसे आगी ॥ पतिकों लीनो मारि रांड़ हुइ वैठी घर में । चुरियां डारी फोरि जहीती तेरे मन में ॥

छन्द आल्हा ॥

सुनत वतकही तव भारत की जननी गिरी भूमि भहराय । क्रिया कर्म करो भारत ने भेंटे राम विपिन में जाय ॥ चित्रकोट से आगे पहुंचे जो हरि गईं जानकी क्यार । लंका कोपि चढ़े रघुराई मारन काज निशाचर क्यार ॥ रावण कुम्भकरण वलधारी लंका कोट सोवरन क्यार । कोटिन महल बने सोने के कोटिन चांदी के दरबार ॥ सुन्दर पर्वत की चौटी पै बंगला बनो निशाचर क्यार । बारावनके मारन काजें लंका कोपि चढ़े भगवान ॥ कोटिन सेना लै बन्दरन की नहिं रीछनि की कछू सम्हार । चौगिरद घेरि लयो लंका को पहिरा विकट दये लगवाय ॥ निधरक पांसे मन्दोदरि संग खेलतु लंका के मैदाना । बारावन ने जाना जानी किनपै चढ़े श्रीभगवान ॥ हंसि २ पांसे दोनों खेलें निधरक वैठे महिल मझार । खुली वतीसी मन्दोदरि की रामादल में भयो उजियार ॥ देखि अचम्भो

गढ़लंका को चौंकत कहात श्रीभगवान । कै वादर लंका में घुमड़ें कै विजुली तड़पै असमान ॥

जवाब रामचंद्र जामवन्त से कवित्त ॥

नहिं मघमास नहीं झरमेह नहीं कहुं भूमि हरी झमकी है। नां कहुं पावस वोले हैं मोर नहीं कहुं गरज सुनी घन की है ॥ ना इत चन्द उगे उत भानु नहीं कहुं तारनकी झलकी है । जां महाराज बड़ो अचरज विन वादर वीज कहां चमकी है ॥

चौपाई ॥

कै घन घोरि लंक घन आवे । चमकि २ विजुली दरपावे ॥
लंका कोटि कगूंरन माहीं । चमकति विजुली मन घन माहीं ॥
अचरज अपर लंक में भारी । जामवन्त वोलो वलधारी ॥

जवाब जामवन्तजी को कवित्त ॥

हैमपुरी त्रिपुरारिपुरी पुरदेव वनी शिवशंकर की है ॥ साइर नीर के तीर वसे जां देवनि की सब ही झंकी है । खेलति नारि पिया संग सारंग पांसिन कों जव हीं झपटी हैं ॥ हंसी नारि नव जोवन सों विन वादर वीज वहां चमकी है ॥

छन्द आल्हा ॥

महिमा देखि २ लंका की तव लछिमन कों दियो जवाव । वान मारि देउ जा लंका में खाइन कोटि गिरै भहराय ॥ धनुष चढ़ायो है लछिमन ने सर रोदा पै धरो जमाय । सुमिरन करिकें मात पिताको और सरजूको ध्यान लगाय ॥ अवधपुरी को सुमिरन करके छूकें चरन श्रीभगवान । वान चूकि जाय जो लंका में ठाड़ो गिरों समुद में जाय ॥ एकदांइकें वान छोड़िदयो लंका गुरज गिरो भहराय । पांसे छूटि परे हाथन सें सोने मुकट गिरत भहराइ ॥ शंका खाई तव रावन ने धधका भयो कलेजा जाय । वोलै रावन काहे सुनु कामिन का हैं हालो शीश हमार ॥ वोलै मन्दोदरि तव रावन सों पीतम हरी विरानी नारि। दोनों वीर चढ़े लंका पै तुम लै मिलो जानकी नारि ॥ गरजै रावन सुनु मनभावन क्यों दहलाय मन्दोदर नारि । लंका कोट समुद चौफेरो मेरो कहा करें भगवान ॥ कुम्भकरण सो भाई मेरें जो वन्दरन को करत अहार । सुनि पिय वानी परम

स्यानी बिलखानी हुइ दयो जवाब ॥ एक दिन गये हते पंपापुर हुइगई भैंट वालि सों जाय। टांगि पालनै दये अंगद के खेलौं अंगद पांइ चलाय टोरन धनुष गये तुम स्वामी अजमावत एक भुजा गमाय। अधम निलाज लाज नहिं आवै अपने हाथ बुलायो काल ॥ अब हम जानी कन्थ हमारे हौ दिन थोरे के महिमान। मेरी चुरियन पै रूठे हौ बूधें गिरी समुद में जाय ॥ एक न मानी वा रावन ने सन्मुख लड़ो रामसों जाय। जो जो मारे सो सब तारे सो दये परमधाम पहुंचाय ॥ गावै सुनै जाय वैकुण्ठै लीला औन श्रीरघुराय। टीकाराम गाय थोरी सी धुनि आल्हामें लिखी बनाय ॥ भूलचूक जो होय लिखने में अपने पेट समुझ रह जाय ॥

श्रीकृष्ण अवतार ॥ ८ ॥

द्वापर युग वसदेव के सो मथुरा प्रगटे जाय। वाल चरित करि कुञ्ज-वन वसे द्वारिका जाय ॥ वसे द्वारिका जाय यहां कन्सादिक मारे। घर २ माखन खाय भक्त हित असुर संहारे ॥ गावत टीकाराम रूप लिलहारी धारैं। राधा के हरि जाय भवन पै बचन उचारैं ॥

छन्दआल्हा।

कंस निशाचर मथुरा उपजो जा बालकके करे हलाल। पाप छाय गयो सब दुनियांमें धर्मकी ध्वजा गिरी भहराय॥ गऊ द्विजको कोऊ मानत नाहीं तब हरि आन धरे अवतार ॥ बन लिलहारी कृष्ण मुरारी सुन्दर रूप धरो कर्तार। गोदनहारी जाति हमारी कोई नारी लेउ गुदाय ॥ टेरें राधा लिलिहारी कौ तब ढिग अपने लई बुलाय। सुन लिलहारी बात हमारी तन में गोदो कृष्णमुरारि ॥ पीतम प्यारो आंखिनतारो जारों तीन लोक को राज ॥

कवित्त।

कालि लख्यो जमुना मग में सखि नन्द को नन्दन कुञ्जविहारी। ता दिन तें प्रगटौ विरहा अरु टोरें ही डारै अनंगम हारी ॥ उनहारि सखी उन पीतम की ननदी मुख देखत जीवत हूं री ॥ गोदि दै अंग में श्याम को रूप सो अरे लिलहार की गोदन हारी ॥ १ ॥ श्यामल रूप हतौ हरि को और जैसे घटा निशि भादों की कारी। गोपसखा सब संग लिये अरु कुञ्जनि रास रचौ बनवारी ॥ गोपिन संग विहार करी अब जाय करी कुविजा घरवारी। श्याम बिना कल कैसे परे सो अरे लिलहार की गोदन-

हारी ॥ २ ॥ दाहिने अंगलिखौ सजनी वे तो चार भुजा के बांके बिहारी दन्त पे नाम दमोदर को और कंठ पे गोदि दै कृष्ण मुरारी ॥ हाथ पै नास लिखो हरि को दोउ जोबन बीच लिखो बनवारी ॥ मन मोहन कौं मन में लिखि दै सो अरे लिलिहार की गोदनहारी ॥ ३ ॥ काम हमारो यही सजनी परदेशी सही पर-हैं रुजगारी । तुम जोही कहौ हम सोई करें तेरे अंग ही अंग में बेधौं मुरारी । वृखभान लली वरसोने खड़ी बड़े राजन की तुम राज दुलारी । दी हौ कहा मुख सों जो कहो हम हैं लिलहार की गोदन हारी ॥ ४ ॥ दें हौं मैं हार हज़ारन के दुलरी तिलरी हमुली अतिभारी । दें हौं छला दोउ हाथन के ककना बड़ मोल गढ़े हैं सुनारी । दीहौं अभूषण तोय सखी अब पैंधन की अपनी तन सारी ॥ मोतिन माल गले जो परी सो अरे लिलिहार की गोदन हारी ॥ ५ ॥
सावन मास लगे सजनी भरि नैनन भेटों मैं कुञ्जविहारी । लखैं घनश्याम झुकैं बदरा बुंदियां जो परें मानो लागै कटारी ॥ पपिया नल कुञ्जन कूक करै अरु सूनी सेज अंगार से भारी । श्याम बिना कल नांहि परे सो अरे लिलहार की गोदनपारी ॥ ६ ॥ सावन मास लगे सजनी सपने नहिं पीतम देत दिखाई । अलगारिन कोयल कूकि रही अरु बोलत हैं पपिया दुःख दाई ॥ सोवत से सखी चौंकि परी अरु देखति हौं अपनों ना कोई । एरी सखी दुख कासों कहों मैं पहिले हसी हसिके फिर रोई ॥
दोहा ॥ जाहिर हुय दरशन दिये मिले राधिके जाय ।
नित नव लीला करत हैं ब्रजमण्डल में जाय ॥

अथ रासलीला वर्णन ॥ कुन्डलिया ॥

रास रचो वन्शी बजा गोपिन मन अति चाव । गोपिन के हर नाम कहि टेरत कहि २ नांउ ॥ टेरत कहि २ नाम सुनत घर सुधि बुधि भूली । तजी कुटुम परिवार फिरैं त्रिय हाँसी फूली ॥ गावत टीकाराम सखिन संग राधे धांई । बावन खंड उजार फिरत तरवर की छांई ॥

कवित्त ।

सुनत श्रवन सुधि बुधि सब भूलि गई ककना के धोखे नथ पैंधि लई करसें । कैसो करौं मेरी बीर धरी नहिं जात धीर लगी है सुरति मेरी नन्द के कुंवर सें ॥ सासु और ससुर नन्द दौरानी सब पीतम समेत

सौत छोड़ि आई घर में ॥ वंशी को सुनि सब आल बेहाल भई वंशी ब-
जाई श्याम सोरठि सुघर में ॥

अथ भजन ॥ विहरत फिरत कुञ्ज विन्द्राबन सखिन मध्यरमनी । तो
या की सुत ता सुत कौ सुत तासुत भषु वदनीं ॥ तिमि रिपु सुत भ्राता
पितु वाहन ता अरि कटि छुवनी । शैल सुतापति ताके वाहन ता वाहन
नैनों ॥ वैनी छूटि रही सुख ऊपर शोभा अति वैनी । मानो चंद चंद से
गोरी नाचत उड़ति फनी ॥ दाड़िम दशन अधर बिम्बाफल मृदु कोकिल
बैनी ॥ सूर श्याम गति निरखि देखि छवि बाढ़त प्रीति घनी ॥

छन्द आल्हा ।

कुवार की पूनो रास रचो है निर्मल जोति चन्द्रमा क्यार । रास भ-
वन रचि विन्द्राबन में वन्शी बजी नन्द के लाल ॥ धरि अधरन पै वंशी
फूंकी तीनो लोक मौहि रहि जांय । सुनि २ वंसुरी कसकल पसुरी सोवत
उठीं गोपिका नारि ॥ सोवत पति कौ तजि बालक कौ वनको धाई ध्यान
लगाय । सुनति अवाजें धरि २ भाजें गाजे जहां कन्हैयालाल ॥ ही मत-
वारी ब्रज की नारी जारी देह मदन रहो छाय । कोई २ सखियां आधी
रतियां छतियां ध्यान धरें भगवान । कोई २ तिरियां वारी उमरिया
मनमें धरें ध्यान भगवान ॥ कोई २ बाला फूलन माला आला रूप अनो-
खी चाल ॥ कोई २ नारी सुन्दर सारी वारी वैस मदन तन खान । कोई २
धानी कोई वसन्ती कोई २ चीर हजारी क्यार । कोई धानी कोई रेशमी
सारी तन में रही समाय ॥ कोई नारी अति सुकुमारी जिनके रूप न ब-
रने जांय । धनि ब्रजबाला धनि नदलाला ग्वाला धन्य संखुरा क्यार ॥
भोंकें कढ़नी कर में नथुनी उलटे भूषण वसन बनाय । अपने २ ठाठ बनाये
अपने २ हुस्न बनाय ॥ रास मंडली के चौफेरें सखियन मिलत न माना
पार। अपने २ साज सम्हारे अपने २ रही मिलाय॥ कोई तन त्यागी घर २
भागी भागी मिली श्याम सौ आइ । लै लै बाजे सखिया साजे बाजे २
रही मिलाइ ॥ गावें बजावें नचे नचावें उछलति उमगति रही मचाय ।
धनि २ शोभा है वा दिन की जा दिन रास रचो भगवान ॥ जो ब्रजलता
हती ब्रजमंडल फूली लहर २ लहराय । उठे सुगन्धे ब्रज मन्डल में चलते

पवन बन्द होय जांय ॥ देवता मोहे स्वर्ग लोक में बरषा होत फूल की जाय । ध्यान छूटि गये ऋषि मुनियन के साधू रह गये ध्यान लगाय ॥ छूटि समाधी गई शंकर की जमुना धार चलत रुकि जाय । जीव चराचर देव निशाचर मोहे सकल जीव संसार ॥ अकल विकल शिवशंकर हुइ के धरिके भेष गोपिका क्यार। रास मंडलीमें नाचत हैं जै जै भई स्वर्गमें जाय। जै जै बोले श्री कृष्ण जी धनि २ गोपेस्वर महराज ॥ धनि २ घड़ी बड़ी वा दिनकी ब्रजमें रास रचो ब्रजराज । नित नव लीला करो ब्रजमें फिर हरि बसे द्वारिका जाय॥ तजि ब्रजगोपी और राधिका जोगकी बातें रहे लखाय ऊधौ हाथ संदेसो भेजो बांचत राधा रहीं रिसाय ॥ गोपी ब्रह वर्णन ॥

जवाब राधिका का ऊधौ जी से कुड़रिया ।

जरि कै राधा ने कही ऊधो सें समझाय । सब लायक कुवरी भई राखी कंठ लगाय ॥ राखी कंठ लगाय जही मोहि आवत हांसी । चेरी नारि कुनारि नीच कंसाकी दासी । कहै राधिका नारि कहोऊधो उन हरि सों । अनहक आवत जात कहा नातो उन सों और हम सों ॥

छन्द आल्हा ।

कुवरी नारी सौति हमारी प्यारी हुय गई पिये हमार । दावादार दाव ना चूके काहे सखि कुवरी सौति हमार । धनि ब्रजबासी आवति हांसी दासी के हरि दास कहांय ॥ वनि आये की सब बातें हैं ऊधो मन में लेउ विचार ॥ एक दिना हरि मम ग्रह आये हम सों मांगि २ दधिखात अबसुनियत महाराज भये हरि सोवे चढ़े खड़ाउन जात ॥ छींड़ि २ दधि माखन खायो तवना मुख धोये कछु हाथ । अब सुनियत महाराजा धि-राजा सो हरि सौ२ वार हनात ॥ जरत पतंत संग दीपक के ऊधो धाइ२ लिपटात । अब न वने मोहन से हम से ऊधो अनहक आवत जात । जो गंगा देविन को दुर्लभ तामैं कूकर लगे हनान ॥ कुवरी किंकर वश करि गिरधर जो हरि गोदिनदेखि लजांय । धनि २ब्रजमंडल गोप गोपिनी राधा कुबरी धनि ब्रजराज ॥ धनि २ कंस वंश सवतारे कैसेहूं धाये ध्यान लगाय टीकाराम अल्प कर भाखी धुनि आल्हा में दई सुनाय ॥

गऊ लोक से धरती लैके सो ब्रज मंडिल दई मिलाय । ब्रज चौरासी में मथुरा है जां श्रीकृष्ण लये औतार ॥ तीनलोक से मथुरा न्यारी होगई

दुनियां के दरम्यान । जानै धाओ जौन ध्यानमें तामें ताकों परे दिखाय॥ दुश्मन रूप कंस ने धाये पाये वैर रूप भगवान । गुआल गोपने जान सजाती पाई मुक्त धरी निज ध्यान ॥ गोपी जानै पतिसम हरि कों तरिकैं चली स्वर्ग में जाय । नन्द यशोदा सुत करि जानै, मानै भगत श्रीभगवान ॥ अमृतरूपी नाम तुम्हारो कैसेहूं पायो पियो अजान । सो भयो अमर आद्य दुनियां में सो वेदन ने कही पुकारि ॥ टीकाराम धुनी धुनि आल्हा सुनि कैं दीजो पार लगाय ॥

अथ बुध यानी श्रीजगन्नाथजी अवतार ॥९॥

छन्द आल्हा ॥

वन तप धारी निज देहसों बैठे जगन्नाथ दरवार । दरशन पावैं जो स्वामी के जनम के पाप छार हुइ जांय ॥ जो कोऊ अटका जाय चढ़ावै खटका मिटत जमनि के जाय । हे जगस्वामी मैं बड़कामी पापी तारे दरश दिखाय ॥ हो जगकर्त्ता मैं आतुरता नैया दीजो पार लगाय । देवकीनन्दन काटैं फन्दन विनवौं वार २ शिर नाय ॥ शेषशारदा पार न पावैं गावैं धावैं जनम बिताय । मैं मतिमन्द मूढ़ अतिभारी चिरुअन चाहौं समुद अचाय ॥ टीकाराम गाय हरि लीला ध्वनि आल्हा में लिखी बनाय । भूलचूक जो जामें होवै सो सब लीजो चतुर बनाय ॥

चौपाई ॥

दरशन करि जगदीश द्वारा । जन्म के पाप होयं जरि छारा ॥
जो कोई अटका जाय चढ़ावै । जम के खटका से छुटि जावै ॥

अथ निहकलंक अवतार होगा ॥

महापाप दुनियां में हो है मानुष हुइ हैं पसू समान । बहिन भानजी निजसुत पतिनी नहिं कोई मानै सकल जहान ॥ नीच कौमके राजा उपजैं प्रजै राखैं दुखी बनाय । शूद्र बैठि व्यासगद्दी पै हरि की लीला देयं सुनाय ॥ ऐसी रचना होय जगत की तव हरि आन धरैं औतार । मारि२ कैं सब पापिन कों तब धरती को उतारैं भार ॥ दश अवतारन की लीला है ध्वनि आल्हा में करी बखान । गावै सुनै जांय वैकुण्ठै तापै कृपा करैं भगवान ॥ दश अवतारन की महिमाकों दशौ इन्द्री ध्यान लगाय । होय अधम पापी पर निन्दक सोहू स्वर्गधाम को जायं ॥

चौपाई ॥

टीकाराम दशौ अवतारा । ध्वनि आल्हा कुच्छिक विस्तारा ॥
पढ़ै पढ़ावै गाय सुनावै । निधरक मनसा लक्ष उठावै ॥

दोहा ।

सम्हल मुरादाबाद में विप्रवर घर जाय ।
कुआरी कन्या गर्भ से प्रगट होयं हरि आय ॥

अथ दूसरा खण्ड ॥

अब श्रीमहादेव के श्रापसों पांच इन्द्र को क़ैद होना और श्रीद्रोपदीजी को पांच पति को वरदान पाना और राजा द्रोप के यज्ञकुण्ड से द्रोपदी जी उत्पन्न हुईं और पांचो इन्द्रको पांडव के घर जन्म लेना और पांचो भाई की स्त्री द्रौपदीजी हुईं फिर महादेव के श्राप सों पांडव यानी अर्जुन वगैरह पांचौ भाइयों को मय द्रोपदी हिमालय में गल जाना और—

महोवे में अवतार लेना ॥

कुड़रिया ॥

शिव समान दाता नहीं विपति विदारन हार । परदा मेरी राखियो सो वरधा के असवार ॥ वरधाके असवार शम्भु तुम औगढ़ दानी । शीश विराजै गंग और अरधंग भवानी ॥ गावत टीकाराम सदा रहौ घट में शिवा शिव । हरहरि एक समान गाय कहि वेदनि शिवा शिव ॥

छन्द आल्हा ॥

तालबीर वेताल पहरुआ ठाड़े सिंह रहे सन्नाय । और वीर सब सोय गये हैं नियरें नार सिंह नरांयं ॥ चौंसठि जोगिन नगिन्न कालिका भैरों के संग रहीं भन्नाय । एक नाग कोपीन चढ़ायें दौसनियारे कंध लनाय ॥ शेष नाग शिरहानें तकियां तन में भस्म रमाई जाय । आक धतूरन के बन लागे भंगन मिलत न माना पार ॥ तुलसीदास आस रघुवर सौं शिर पै गंगधार लहराय । योगी दिगम्बर तुम को गैये जिन घर पारवती सी नारि ॥ खड़ो नादिया दरवाजे पै सेवामें ठाड़ी गवरि सी नारि । ओढ़ें व-घम्बर मृगछालन को गुदरीमें शेषनाग लहरायं ॥ तारी लागी शिवशंकर

की डोरी लगी रामसों जाय। सुन्दर वगिया है शंकर की शोभा कहात शरम जी लाग॥ मधुरी वानी पंछी बोलत डोलत चित्त मुनीश्वर वयार। धनि २ शोभा है परवतकी हरदम वहै गंग की धार॥ कोमलरूप उमरि है थोड़ी बेटी जौन हिमाचल क्यार। लयें घडुलना हैं वारू को सिंचती पेड़ धतूरन क्यार। धनि २ गौरा है पति बौरा सेवा में ठाड़ीं रहाति हजूर॥ लयें कटोरा ठाड़ीं गौरा भोरा भंग बांटि लई जाय। तीनों रथ जोगिन के आये उतरे स्वर्गलोकसें आय॥ चली जोगिनी है गौरा लें जोगिन रहगईं शीश नवाय। बोलें जोगिनी जब गौरा सों बेटी सुनों हिमाचल क्यार॥ बड़े घरानेकी बेटी हौ राजा बड़े हिमाचल राय। बड़ो पुरानो जा डुकरा है खुपड़ी तलक दांतु एक नाहिं॥ खट २ खट २ नारी बोलत सकुरत देह खाल झुकिजाय। भिनिर २ जाकें माखीं भिनकें देह में कोढु रहो चुचिआय॥ बाट मरघटा जिन की हेरै बैठी मीचु रही मुंह वाय। डगमग डगमग गर्दनि हाले डोकरु आज मरें चाहैं काल॥ आखिर विधवा होने परि है तब हुइ जै है कौन हवाल। हालत बुरी पती तुम्हरेकी सुधि लड़कैयां वयस तुम्हार॥ तुम्हें हंसौआ को डर नाहीं ओ लाड़िली हिमाचल क्यार। वीर विहीन महीका हो गई कै भूपनिकें नहीं कुंआर॥ अनहक बौरी भई डोकर पै कांहें करी जिन्दगी खुआर। जोगिन वानी सुनी भवानी हरखानी हुइ दयो जवाब॥ बड़ी गरीवति आधीनी सों तब गौराने दियो जवाब। करमहुसारे लिखी फकीरो जो कर्त्ताने लिखी लिलार। मगन फकीरी सुनौ सखीरी हमें अमीरी क्या दरकार॥ पीतम प्यारो आंखिन तारो जारों तीन लोक को राज। जो पति त्यागी परम अभागी तिन की विगरि जिन्दगी जाय॥ बावा नाहीं जे जग माहीं हैं शिर मोर देवतन क्यार। हैं अविनाशी कैलाशवासी दासी हुइकें करों क्यार॥ ऐसी करणी का मेरी है जो सेवा मैं करों बनाय। उलटी सुलटी अंगिया घुटती और धतूरा देत मिलाय॥ घोट घांटिके छानछूनिकें शिव शंकर कों देत पिवाय। पी पी भंगा हो पी नंगा देह भुजंगा लेत लगाय॥ पी की निन्दा जो त्रिय करि हैं सरि हैं नर्क जेल में जाय। प्रेम परखिकें जोगिन बोली जै जै पारवती औतार॥ जै जै शब्द भयो नभ माहीं देवता फूल रहे बरषाय। बार २ और शीश नायकें हरषित चलीं जोगिनी क्यार॥ तारी जागी शिव शंकर की गौरा रहिगई माथ नवाय। करि २ विनती गौरा विनवैं स्वामी वार २ वलि जाउं॥ अधम उदारन हौ जगपावन नैया दीजो पार लगाय। हो शिवशंकर मैं अति किङ्कर मोपै कृपा

करौ भगवान ।। लाज हमारी महिमा तुम्हरी मैं हों नारी कुमति कुनार। औगुन मेरे नाथ घनेरे चेरे तारे अधम मुरारि ।। सुन२ बानी औगड़ दानी जानी विनये गवरि सी नारि। डिम २ डिम २ डमरू बाजो बाजो शंख महादेव क्यार ॥ ठड़ो नादिया है दरवाजें तासों शंकर कही सुनाय ॥

अथ श्री महादेव जी के श्राप सों पांडवोंको मय द्रोपदी हिमालय में गलजाना और महोवे में अवतार लेना कौरवों का अवतार दहली में ॥

दोहा ॥

उतपति आल्हा उदनि की दोनों युग अवतार ॥
वीर पमारो गाय हों गोने को विस्तार ॥

कुड़रिया—आल्हा अम्मर हो गये देवी के वरदान । साखो सब जग कहात है कृपा करी भगवान ॥ कृपा कर भगवान जगत्में निधरक डोले। चले धर्म की रीति झूठ कबहूं नहिं बोले ॥ गावत टीकाराम सूर सूरन में वाला । जाही सों जग कहे गाय छन्दन में आल्हा ॥

छन्द आल्हा ।

करी त्यारी अब चलने की देखें पंडनको दरबार । तारी बाजी महादेब की धरती मागी धरम द्वार ॥ सेना साजति है शंकर की भूतन मिलत न माना पार। भूत परीत अिन्द शम्भूगण डांकिन सांकिन सजे अपार ॥ नारसिंह भैरों साजत हैं साजत वीर और वेताल । लै लै खपरा भरि २ खपरा नाचत चली जोगिनी जाइ ॥ साजत शिम्भू गाजत शिवगन भाजत ध्यान मुनीश्वर क्यार। कान खजूरन के कुन्डल हैं सो कानन में लिये डराय ॥ पीरी ततैयां हैं टोपी में भौंरा भनन २ भन्नाइ । चढ़े खड़ाऊं है गोहन की करिया सनन २ सन्नाय ॥ खुटी वन्नाई विषखपरन की लप २ जीभें रहे चलाय । एक नाग कोपीन चढ़ाये दो करिहा सो लये लगाय ॥ एक नाग को तकिया करि लयो दो कन्धा पै लये धराय । एकमन यारौ धरौ सीस पै दो ले लये पीनिया धाइ ॥ डोरू बाजे जब परवत में डंका बजो महादेव क्यार । छाती धर२होत शेषकी शंका भई देवतन क्यार ॥ कूदि नादिया पै बनि वैठे हैं अरधंग गवर सी नारि । बारह घंटा नद्दी गन के हो रही घंटन की भनकार ॥ घन २ घन २ घंटा बाजें बाजें जंग नादिया क्यार । कूंच बोलि दयौ है परवत से हस्तनापुरकी सूध लगाय। चार घड़ी चौरासी पल में पहुंचे जहां पंड दरबार ॥ पांचौ बेटा कौता

वाले पांचौ इन्द्र के अवतार। राउ युधिष्ठर जो राजा थे उपजे धरमराज औतार॥ अर्जुन पंडा सुत कोंता के उपजे अंश इन्द्र के क्यार। भीमसेन हैं अंश पवन के कोंता कोख लये औतार॥ सहदेव नकुल माद्री जाये जो हैं अंश अश्वनी कुमार। पांचौ बली शूर हैं भारी जो हैं द्रोपदि के भरतार। भारत जीतौ कुरुक्षेत्र में कौरव को दियो वन्श नसाय॥ निधरक राजकरैं दुनियांमें जबना रहौ दुसरिहा क्यार। निकुला पहिरापै ठाढ़ो है कर शर धनुष साधि रहिजाय। होनहारको को मेटतु है पहिले रचिराखी भगवान॥ दवौ नादिया शिवशंकर को दरबाजे पर पहुंचो जाय। घण्टा घोर भई नट्टीगन बंगला हलो पंडवन क्यार॥ संखां खाई है नकुला ने धधका लगौ कलेजा जाय। कै वैरी सिर ऊपर आयो कै वैरी लई भुम्मि दवाय॥ धनुष उठायो है नकुला ने सररोदापै दियो जमाय। हियरा डटि कै शिवशङ्कर को सौहीं वान साधि रहि जाय। नजरि घूमिगई शिवशङ्कर की गुस्सा बढ़ो बदन में जाय॥ तब असराफौ शिवशंकर ने पंडा खंड बंड होय जांय॥ जाउ द्रोपदी मृत्युलोक में कलयुग देहली के दरम्यान। वेटी हुइ हौ पृथीराज की और कुल वहू चन्देले क्यार॥ तीन महीना अरु सत्तरह दिन तुम पै हुइहै समर अघाय। गढ़ उरई की समर भूमि मैं जै हैं दोऊ वन्श नसाय। कौरा उपजैं गढ़ देहली में पण्डा नगर महोवे जाय॥ दै असराफ गये शिवशङ्कर और कैलाश पुरी को जायं। गरदी दे के परीक्षत को पण्डा गले हिमालय जाय॥ सीजि हिमालय पांचौ भाई संग ही गली द्रोपदीनारि। आदि जन्म मैंने सब गायो अब आगेको सुनौ हवाल॥

अथ कौरव व पांडवों को अवतार लेना कलयुग में तकमीनन सन् १२०० में

अथ कौरवों का अवतार सन् ११३२ ई० में॥

सोमदेव अजमेर के राजा जो भये अग्निवन्श चौहान। तिन कौं वेटी अनंगपाल की व्याही चन्द्रकुवंरि सरनाम॥ कही मान के उन विप्रन की वेटी कुआ दई डरवाय। असुत्थामा जो अम्वर थे तिन वेटी कौ लयौ कढ़ाय॥ पृथीराज मठियामें उपजे असुत्थामाके स्थान॥ शब्द वेदके वान

सिखाये हुय गये शब्दवेद चौहान ॥ देहली छोड़ी अनंगपाल से अपनी धुआई दई फिराय ।

कुड़रिया—कही न मानी विप्र की भये तौर मतिहीन । किल्ली से दिल्ली भई अनंगपाल भये छीन ॥ अनंगपाल भये छीन हीन भयो राज अकाजा । दिल्ली गरदी लई भयो पृथ्वीपति राजा ॥ गावत टीकाराम होय जो करता ठानी । तौमर गरदी गई भई पृथी रजधानी ॥

अथ सूरवा धवल वग़ैरह को वल ॥

दोहा ॥

सौ मनुष्य वल होत है, एक जोधा में होय ।
सौ जोधा को वल सदा, सो एक सूर में होय ॥
सौ सूरन वल राखता, एक सामन्त वलवान ।
सौ सामन्तन सौ समर, जीते धवल प्रमान ॥
सौ धवलन कौ जीति कै, होय सबल सिरदार ।
अस्सी गज वल सवल में, जो दीनो करतार ॥

कुड़रिया—दस हजार यौधा वली और सोलह सौ सूर । एकसे आठ सामन्त हते एक धवल निज बीर ॥ एक धवल निज बीर सबल पृथीराज नवीनो ॥ उम्मर सोरह साल व्याह अगमा संग कीनो । गावत टीकाराम लई समौगिन हंसकर ॥ शब्द के वान चलाय लये वहुराजा वशकर ॥

छन्द आल्हा ।

सन ग्यारहसे कहि वत्तिस में वनमैं जन्म पिथौरा क्यार । सन् ग्यारह सौ अड़ताजिस मैं गरदी लई देहली क्यार ॥ पृथीराज दिल्लीपति होय गये जो जरजोधन के औतार । ताहर वेटा पृथीराज को जो तो कर्ण केर अवतार ॥ चौड़ा सामन्त पृथीराज को दौनाचार्य के अवतार । वेला वेटी पृथीराज की जो थी द्रोपदि के अवतार ॥ सो वेला ब्रह्मा को व्याही भई कुल वहू चंदेले क्यार । सन् ग्यारह से तिरानवे मैं हुइ गई सती सारधा क्यार ॥ तीन महीना सत्तरह दिन लौं उरई वजी ढाल तलवार । उत्पति गाई मैं दिल्ली की अब महुवे के सुनौ हवाल ॥

अथ महोवे को व्यान ।

कुड़रिया—चन्द्रवन्श राजा भये चन्देरी पतिराय ॥ पारसमणि शशि ने दई चन्द्रग्रहको आय । चन्द्रग्रहको आय किला कालिञ्जर कीनो तिनके कुल में आय जन्म परमाल ने लीनों ॥ गावत टीकाराम ब्रह्म कीरति बनवायो । कीरत सागर नाम महोवे में खुदवायो ॥ छन्द आल्हा

कीरत ब्रह्म के भये चन्देले माया धनी रजा परिमाल । बासुदेव महोवे के राजा जो परिहार गुटइयाटार ॥ तिनके लड़का माहिल भोगत सारे जौन चन्देले क्यार । अगमा मल्हना तिलका ब्रह्मा जो थी बहिन महीपति क्यार एक से एक रूप गुण आगरी देखत रूप पड़ी सरमाय ॥ मल्हना व्याही चन्देले ने जबरन महुवो लओ छिड़ाय । घोड़ा पपीहा और पतिसावद सो इन्द्र ने दियो गहाय ॥ तब से वैर भयो माहिल से झुरि २ मरत महीपति राय । सो ही माहिल की चुगिलिन में बारह बाट भये परिमाल ॥ उत्पति गाई चन्देले की अब आल्हा को लिखौं हवाल ॥

अथ पांडवों का अवतार लेना महोवे में सं० ११६० से

छन्द आल्हा ॥ पण्डा उपजे नगर महोवे सब ने आन धरे अवतार । आल्हा उपजे नगर महोवे राउ युधिष्ठर के अवतार ॥ सन् ११६० ई० जेठ सुदी दशमी शुभवार । सो वे अमर भये दुनिया में जेठे पूत देवला क्यार सन् ग्यारह से सतहत्तर में होइ गयो व्याह बनाफर क्यार ॥ सन् ग्यारह से कहि इकसठ में जनमन भयो वीर मलिखान ॥ सन् ग्यारह से अठहत्तर में व्याही गजमोतिन गुणखानि । सन् ग्यारह से कहि बासठ में ढेबा सहा देव अवतार ॥ ब्रह्मा उपजे नगर महोवे अर्जुन पण्डा के अवतार । सन् ग्यारह से अब चौसठ में है वैसाख सुदी अखतीज ॥ सन् ग्यारह से नवआसी में बेटी व्याही धनी चौहान ॥ वेला बेटी पृथीराज की करिदई दोऊ बन्श की हानि । मीरा सय्यद बनरस वाले जो वे भोमसेन अवतार ॥ कीचक द्वारत भोजन खाये उपजे मुसलमान घर जाय ॥ इन्दल उपजे नगर महोवे जो अहिबरन वैर अवतार । सन् ग्यारह से अब तिरेसठ में धांधू आन धरे अवतार ॥

लाखन का जन्म कनवज में ।

मिती अगहन सुदी ५ सन् ११६१ ई० में जन्म और ११८२ ई० में विवाह और वैसाख सन् ११८३ में गौना हुआ ॥

सवैया।

लाखन भूपन में इक सुन्दर रूप छटा लखि काम लजावे। लाखन की गिन्ती दल में अरु लाखन सूरन में चलि जावे॥ लाखन सूर हने छन में लखि ताहि भजै रिपु प्रान बचावै॥ ऐसो महा बलवान सो लाखन लाखन में तलवारि चलावे॥

छन्द आल्हा।

सन् ग्यारह से कहि इकसठ में लाखन आन धरे अवतार। बेटा हुयगये रतीभान के निकुला पंडा अवतार॥ सन् ग्यारह से कहि व्यासी में होय गयो व्याह कामरू क्यार। सन् ८३ में गौनों लीनों जाको आंगू करै विस्तार

अब ऊदलको जन्म महोवेमें जेठसुदी दशमी सन् ११६५ ई०

दोहा—जादिन ऊदल जन्मियों नगर महोवे आय।
घर २ घर धरती हली शेश करोटा खाय।

सवैया।

धन २ अञ्जन माय वली हनुमत सो ज्यायो। घर २ लङ्का जारि पारि सागर के आयो॥ धन २ अङ्गद वीर पांउ गढ़ लङ्क जमायो। धन २ ऊदल सूर धवल दुनियां में गायो॥

कुड़रिया।

डंका भारत बीच में घर २ दओ बजाय। नाम भिड़इया परि गयौ सुन नरेश भयखांय॥ सुन नरेश भय खांय विजयको वाजो डंका। लड़ि के अफरो नांहि मरन की नाहीं शङ्का। गावत टीकाराम धवल ऊदनि रन-वङ्का॥ हाथ काल लय चलत करत शूरन के फङ्का।

छंदआल्हा।

ऊदन जन्मो नगर महोवे ववरा वाहन के अवतार। जेठ सुदी दशमी सुभ घड़िया वढ़िया भयौ उदैचन्द लाल॥ सन् ग्यारह से काहे पैंसठ में जनमों देव कुंवरि को लाल॥ घर २ घर २ धरती हालै सालै सूर करेजन जाय। छाती धर २ होत शेश की नीचें लचक २ सिर जांय॥ देवता कम्पे स्वर्ग लोक में मढ़िया हली शारदा क्यार। दिन में तारे टूटन लागे जग में छाय गयो अंधियार॥

धुरो हालि गयो जैतापुर को जां नित बजै ढाल तलवार। तेगा टंगे हते खूंटिन पै म्यानसे उगिल परीं तलवार॥ घोड़ा हींसत हैं घुड़सारिन सोवत सूर उठे भन्नाय। गरदी हलिगई पृथ्वीराज की धरती शब्द गिरो भहराय॥ कंपि पैंडुरी गई राजा की धधका भयो करेजा जाय। सांगै गड़ी हतीं बंगला में सो धरतीमें गई समाय॥ म्यान सिरोही जो बंगला में सर सर म्यान गिरो भहराय। कलंगी टूटि परी माथे की तबला दुकत बन्द हुइ जायं॥ परी खलबली है बंगला में इकदम सुन्नसान हुइजाय। पृथ्वीराज तब बोलन लागे चन्दभाट कों दियो जबाब॥ कौनैं कारन गरदी हाली हाले सूरबीर सिरदार। कैं कोई सूर भयो दुनियां में कैं रजपूत लये अवतार॥ तीन लोकके करतम करता कैं खुद आन धरे अवतार। चन्दभाट तब बोलन लागो कंठ भगौती रही बताय॥ काहू नरेश घर लड़का जन्मों तुमसों रोज बजे तलवार। तीनबेर गढ़दिहली लूटै मारै मान पिथौरा राय॥ सुनि २ बातैं चन्दभाट कीं राजा रहिगये सोच विचार। गोदी तें डारि दयो दिवला ने आंसू भरे नैन में जाय॥ उलहत बाबुल जानै भकिलये आगे करि हैं कहा हवाल। आंगन फेंकि दयो ऊदल कों आंगन डरे लुहरवा भाय॥ खबरैं पाईं रानी मल्हनापल की तुरत करी तैयार। मल्हना पहुंची दस पुरवा में जां वे डरे उदयसिंहलाल॥ झारि पोंछ ऊदल कों रानी सिंहिन दूध करे तैयार। पंडित अपने कों बुलवायो जो कुल पूज चन्देले क्यार॥ ल्यावौ पत्रा द्वापर वालो चारौ वेद कहौ समझाय। कैसी घड़ी जू लड़का जन्मौ लच्छन नाम कहो समझाय॥ कैसो नाम करै दुनियां में सौ सब भेद सुनावौ आय। चिन्तामन पांडे आवत हैं साठिकु गहैं हाथ में आय॥ खोलि पत्रा बांचन लागे अरु ज्योतिषको रहे मिलाय। लगनि साधि चौघड़िया साधौ ओ महारानी महोवे क्यार॥ ऐसी घड़ी जू लड़का जन्मो दुसरौ नहीं रचो करतार। नामकरण जाको ऊदल है बबरा वाहन के अवतार॥ नाम अमर दुनियां में करि है करि है जग जाहर तलवार। जोलौं धरती कायम रहि है कीरति गावै सकल जहान॥ दृष्टि शनीचर जा ऊदल कें देखत किला होयं वीरान। वीर विहीन मही सब करि है करि है दखल चंदेले क्यार॥ सहजहिं घोड़ा को तंग खेंचै गढ़ियां छोड़ि भजैं गढ़वाल। सातबेर कलकत्ता मारै बारहवेर देश बंगाल॥ कलकत्ता नित आवैं जावैं दिल्ली नित आवैं नित जायं। किला तोरि गढ़पतिन जीतिकें ध्वाई फिरै चन्देले क्यार। बिन टीका अरु

विना लगुन के भांवरि सात लेयं डरवाय ॥ डग्ड बांधि कर ता राजा के जवरन पांय लेय पुजवाय । दूध मगाये हैं वाविन के फौहा दये उदय-सिंहलाल ॥ और कै सखियन सात सौंक हैं इन के नगिन सात तलवार। आंगन नांचीं रानी मल्हना वंगला नचे रजा परिमाल ॥ छटी करी है रानी मल्हना और डटुौन रजा परिमाल । ऐसें जन्म भयो ऊदल को अव आगे को सुनो हवाल ॥ सात वरष की जव उम्मरि में ऊदल खेलन लगे शिकार । सीखि लड़ाई लई समर कीं ऊदल सब बांधे हथियार ॥ पांच वछेड़ा जो उड़नेते सो रानी ने दये गहाय । वे घोड़ा सब मुखसों वोलैं जब पर हतें वछेड़न क्यार ॥ घोड़ा पपीहा लुनि आल्हा कों मलिखेकों दई कबूतरी जाय । हरि नागर ब्रह्मा को दीनो ऊदल दयो वेंदुला जाय ॥ घोड़ा सनुरथा दयो ढेवाकों जो महारानी महोवे क्यार । चढ़ि २ घोड़नि कों फेरत हैं आधे सरग करें अधवार ॥ वारह वरष की है उम्मरि में माढ़ों वाधि गये तलवार । करिया मारो जम्बै मारो माढ़ौ टापनि दई उड़ाय ॥ वंशहानि जम्वै की करिदई ऊजर खेरो दयो कराय । जा कोल्हू में दशरथ पेरे जंबै को सब घर दयो पिराय ॥ ईंट २ माढ़ौकी खेदी गदहन हर दीनौ चलवाय । घर साबित कोई ना राखौ घर २ ऊक दई फिरवाय ॥ जौन देश की करैं त्यारी सो गढ़ फतै लेयं करवाय । करे सामनो जो ऊदलको सो फिरि स्वग वेठि पछिताय । श्वेतवन्ध और रामेश्वरनौ वाजी टाप वेंदुला जाय ॥ उदय अस्तनों फिरी धुआई डंका बजो बनाफर जाय ।

अथ ऊदल को वावनगढ़ में विजय को झंडा घुमाना ॥

छन्द आल्हा ॥

मारी माड़ौं वंशन छांड़ो राढ़ोरचो राजगढ़ जाय । नैनागढ़ में कूदे जल में पल में परलै दई दिखाय ॥ मारी मीना करि विन जीना लीना तिलक राज दरवार । मारि सिरोहिन वसकरि विसहिन दुलहिन लई वीर मलिखान ॥ मारी मुहरम जीती मकरंद फुलवा वियाही लहरवा जाय । मारी दिल्ली करि दई विल्ली घर २ पिल्ली दई बुलाय ॥ हाथी पछाड़े सूर सिंहारे ब्रह्मा की सात लईं डरवाय । मारि आगरा आजमेर कों अलवर खलबल दई कराय ॥ अमृतसर अम्बाला जीतो अरु लाहौर लई ललकार ।

अटक कटकनों सेन समुदनों बाजी टाप बेंदुला क्यार ॥ काश्मीरको क-सकर छोड़ो जम्बू में जय दई बुलाय। अलवत्ता कलकत्ता कनखल कोकन कान गहें मिमयाय ॥ रोड़ी भक्कर मारी टक्कर शक्कर सर्वत लई वनाय। मछली बन्दर लूटो घर २ हंहिकर लयो हैदराबाद ॥ जीत जलन्धर बैठि कलिञ्जर ललतपूर मारो ललकार। जीत जोधपुर धाय धौलपुर जैपुर में जय दई कराय ॥ नागपूर को नरघा करदयो भरतपूर भाजो भहराय। चरखारी चरखानों फेरी बूंदी बांदी लई बनाय ॥ मारी नबंर नरघा क-रदई पन्ना झन्ना दये उड़ाय। मारो हुलकर भाजो जलकर बीकानैर करी वेकार ॥ बांधि बढ़ोघा करि दयो रोधा जोधा सब ही लये बंधाय। मु-लतानिन कों मेवातिन कों तिलंगान तहलई कराय ॥ दानापुर पै दार द-राई दतिया दांतन दई चवाय। मारौ पटना करिदयो छिछना मगधदेश में दई वुलाय ॥ देश ग्वालियर हरदम हाजिर रीवां सींवा लई दवाय। मारी टिहरी भाजी महरी समथर थर्र थर्र थहराय॥ वौरीगढ़ कों वारि २ कें वांदा बांदी लयो कराय। मारी टरकी क्रिरिनावर की काविल कावू लई कराय ॥ बलख बुखारो पूना सितारो मारो शहर बंबई क्यार। खु-रासान जों जापानिन कों अराकान कों दयो गिराय ॥ चढ़िकें चीनें खेल नवीनै जर्मन जवरन लई लुटाय। जो घर घाले हैं ऊदल ने सो घर वसें ना ऊजर होयं ॥ वनि वहुरुपिया घर २ घूमें वाना वदलि करैं तलवार। आधौ अंगु धरैं औरति को आधो धरत मरद को जाय ॥ वनि मनिहारि महल में घुसिजाय। चुरियां महिल आवैं पहिंधाय ॥ महिल देखि जब वाहिर कढ़िजायं पाछैं तोप देत लग वाय। ता नंगर से जे जब निकरें करिदेंय दखल रजापरिमाल ॥ वीर विहीन मही सब करिकें विजय को डंका दयो वजाय। निधरक सोवैं नगर मझोवें जैसें सिंह बनीमें जाय। निधरख घूमें सब दुनिया में हैं निशंक वनाफर क्यार ॥

अथ माहिलका चुगली खाकर म-होवेसे निकला देना और कनवजमें रहना।

कुड़रिया ॥

चूके राजा रङ्क सब और साधू मुनिनाथ। मानस की तो क्या चली चूकत हैं सुरनाथ ॥ चूकत हैं सुरनाथ तुपक वर्छी अरु गुम्मा। चूकत पण्डित मूढ़ चतुर और काजी मुल्ला ॥ गावत टीकाराम कला नटहू को चूके। सो सौ सोहैं खाय चुगिल कबहूं ना चूके ॥

छन्द आल्हा—करि २ चुगली वा माहिलने जो परिहार गुटइयाटार। करि २ चुगली सब दुनियां में और गढ़ करिदये पनियाढार ॥ कांटो साले जो करील को और बदरी को सालै घाम। साल सौतिया जैसे साले और बैरी को साले नाम ॥ तैसें सालि रही माहिलकें घायल डरे महीपतिराय। मेरो महोवो मेरे बाप को सो चन्देले लयो छिड़ाय ॥ वो दिन कर्त्ता कब ल्यावेगो मिटि है वंश बनाफर आय। अकिलो ऊदन जो मरिजावे महुवो तुरत ही लेंउ छिड़ाय ॥ करिकें चुगली पृथ्वीराजसों घोड़ा मांगे धनी चौहान। जो घोड़ा तुम दैहो नाहीं महुवो लूटें धनी चौहान ॥ शंखा खाई चन्देलेने आल्हा ऊदनि लये बुलाय। पृथ्वीराज ने घोड़ा मांगे बेटा घोड़ा देउ पठाय ॥ तब ऊदनिके मुखसें निकरी दादा सुनो चन्देले राय। जिन घोड़न पै चढ़े चन्देले तापै का चढ़ें पिथौराराय ॥ जौलों कांधे पै शिर रैहै घोड़ा हम दैवे के नांय। सुनि २ बातें वा ऊदनि की गुस्सा भये चन्देले राय ॥ कठिन तलाकें दईं ऊदनि को महुवो खाली देउ कराय। मुंह दिख रहियो जिन महुवे में अन्त ही करो नौकरी जाय ॥ अन्न जो खावो नगर महोवे मानों खावो गऊ को मांस। संग महरियनके जो सोवो मानों परे बहिन के साथ ॥ बात शालिगई वा ऊदन के सूखी गई कलेजा चाट। वोली गोली से जादे है और बिनु घाय पार कढ़िजाय ॥ महुवो त्याग दयो आल्हो ने सिब घरकिन को संग लगाय। बावनगढ़ में जे घूमेंते काहूं बाघ न टेकी जाय ॥ विपता परगईतौ आल्हापे काहू बात न बूझी आय। ग्याभन घोड़ी थी आल्हा की सोतो गई डांग में जाय ॥ चीत नखत की हाय घामन में बारो बरौना गयो कुम्हिलाय। पान निघट गये पानदान के तिरियन ओष्ठ गये कुम्हिलाय ॥ ऐसी विपता इनपे पड़िगई जैसी नलपै पड़ी बनाय। सब दुनियांकी आश छोड़िकें तब कनवज की सूध लगाय ॥ देवतन कनवज की निंय डारी विठूर ब्रह्मा रची बनाय। अजयपाल कनवज में हुइगये राजा बेन चक्कवे राय ॥ तिन के घर में रतीभान भये तिनकें भये कनौजीराय। लाखनि उपजे गढ़ कनवज में नकुला पण्डा के अवतार ॥ ता कनवज में आल्हा पहुंचे राजा जैचन्द के दरबार। बड़ी गरीबति आधीनीसो आल्है मिले कनौजी राय ॥ गांजर जीती वा ऊदनि ने तब रिजगिर में दये बसाय। सात डराय लईं लाखनकी बांकी रहो गैनवा क्यार ॥ एकसाल को अर्सा गुजरो फिर माहिल को सुनो हवाल। मन २ माहिल सोचन लागे मन ही मन में रहे बिचार ॥ खटकत बैरी जिन ना मारे ताकी जननी के बुरे हवाल। जिनके बैरी सुख

में देवें तिन के जियतब को धिरकार ॥ सोच समझकें माहिल चल भये पहुंचे जैचन्दके दरबार । लगी कचहरी है जैचन्दकी वैठे सूर धवल सिरदार ॥ माहिल पहुंचत खन वंगला में तवला ठुकत वन्द हुइजांय । माहिल उतरि परे घोड़ी से घोड़ी थाम लेत थनवार ॥ माहिल पहुंचे हैं वंगला में लाखनि बैठक दई डराय । छत्री वैठे जो वंगला में जी में बढ़िगये सोच अपार जब २ माहिल कनवज आये तव २ वजी ढाल तलवार ॥ कछू दारि में अब कारो है धारे चरन महीपतिराय । छेम कुशल जैचन्दने पूछी माहिल सव ही दई सुनाय ॥ बड़ी गरीवति आधीनी सों तब माहिल ने दियो जवाब वात न कहि हैं हम काहू की ना हम चुगिल धरें हैं नाम । जाकी विगरत हम देखत हैं दोनों हाथ वनावें हाल ॥ मानो ताको भलो होत है ना मानो तो जानै वलाय । आंसू भरि २ रोय देय जर २ राजा सुनो कनौजीराय ॥ नागादिन राजा तुम आये नीके गये कनौजीराय । जो महिमा समुन्दर की घटिगई रावण वसो परोसै जाय ॥ तैसे राजा तेरी कनवज में धुआई फिरै वनाफर क्यार । नीके होते आल्हा ऊदनि क्यों चंदेले देते कढ़ाय ॥ जिन हड़ियन में जिन ने खाओ ताही में दीने छेद कराय । जा दिन विगड़े वा ऊदनिसे तव नहिं वनि है कछू उपाय ॥ कही हमारी आगू अइ है राजा बार २ पछिताउ । सांची कहैं तें जग रूठत है और झूठी में राम रिसांय ॥ जो जो वातें हम सुनि पांई सो सव तुम कों दई सुनाय ॥

जवाब माहिल को लाखनिसों—सवैया ।

निरशंक दिवला लाल काल की नाहीं शंका । बावनगढ़ सर करे विजय को वाजो डंका ॥ सोवत सिंह जगाय जमनि तुम आई झंका । विचलत लेय प्रान किला जो फूकें लंका ॥

छन्द आल्हा ॥

सुनत वतक ही तब माहिल की फिर लाखनि ने दियो जवाब । ऐसे नाहीं देवै वाले जो घटि करें हमारे साथ ॥ जव २ तुम कनवज में आवत तब तुम नई सुनावत वात । वे सब लायक देवे वाले हैं समरथ वनाफर राय ॥ पगिया पलटी राजघाट पै गंगा खाई संग हमार । कुम्भी नर्क परै सो

जाई लागै घात गऊ को पाप ॥ सायत विचलै देवे वारे जो घटि करें ह-मारे साथ । तौ का हमने छोड़ि धरी है उनहूंकेदी हैं गर्भ नवाय ॥ कौन सूर जा महि पै उपजो जो दुइधरीं झेलैं तलवार । मानुष की तो कौन चलावे दानव देव गहैं तलवार ॥ तरकी धरती ऊपर करिदेंउ ऊपर की तर देंय धसाय । दई विनोती सब भारत कौं हैं कामाल बनाफर राय ॥ कही सो कहि लई अबना कहियो माहिल जीभ दाबि मुंह जाउ । करै बुराई मेरे यार की ऐसी तुम्हैं मुनासिब नाहिं ॥ है कोई हाजिर मेरे बं-गला में जाय बंगला से देउ कढ़ाय ॥

जवाब लाखन ॥ कुड़रिया ॥

काढ़ो बेईमान कौं ढका लगावो जाय । करै बुराई यार की झूठ सु-नावै आय ॥ झूठ सुनावै आय बात तब गावत राढ़ो । है कोऊ हाजिर दूत भूत माहिल सिर मारो ॥ गावत टीकाराम भूत माहिल सिर झारो । पकरि चुगिल की मूंछ सभा से वाहिर काढ़ो ॥

छन्द आल्हा ॥

चुपहिं २ सरकी तब माहिल और महिलनकी सूध लगाय । जां आठ महिल हैं कर कंचनके सोरह महिल रेखता क्यार । जां हैं डोढ़ीं ठाढ़ी लौंड़ी ठोढ़ी चूमें स्वर्ग पताल । बोलत माहिल हैं लौंड़ी सों रानी कों खबरि देउ करवाय ॥ बांदी बोलत है तिलकासों माहिल ठाड़े पमरि दुआर । भयो बुलौआ तब माहिल को डोढ़ी गये महीपतिराय ॥ बैठक डारि दई रानी ने वैठे चुगिल महीपतिराय । हसिकें तिलका बोलन लागीं की हैं भई महिर महीपतिराय ॥ बड़ी उदासी रूखे मनसों बोलन लगे महीप-तिराय । नाम हमारे की वदनामी रानी छाई सकल जहान ॥ जैचन्द राजा सिर्रो हुइगये लाखनि परी ज्ञान पै गाज ॥ सबु घरू बौरो काज विगोरो कैसें चलें राज दरबार । तुम हौ रानी परम स्यानी हौ महारानी चतुर सुजान ॥ जासों रानी कही मानिलेउ तुम आल्हा कों देउ कढ़ाय । भले जो होते देवें वाले मलहना क्यों देती कढ़वाय ॥ जा दिन विगरे बा ऊदनि सों कनवज ली है दखलु कराय । कैद भोगि हैं जैचन्द राजा ला-खनि को लेय शीश उतारि ॥ दासी बनावें तुम्हैं देवै की दाना दरो अ

छेड़न क्यार । कहे हमारे को दुख पायो जल्दी मिलै अंगारू आय ॥ सौ सौ कही एक ना मानी माहिल ने लई गङ्गा उठाय । जो जाभें मैं झूठी भाखैं तौ इकलौता पूत मरिजाय ॥ तिरिया जाति बुद्धि है थोड़ी रानी के जी गई समाय । ऐसी सलाह महीपति दीजो सहजहिं काम सफल हुइ जांय ॥ सांप मरै ना लाठी टूटै सहजहिं मिटै बनाफरराय । तब ही माहिल बोलन लागे रानी सांची कहौं सलाह ॥ भारी राजा कामशाह हैं समधी जौन बघेलेराय । घर २ जादू है कांवर में जां है राज महिरियन क्यार ॥ लाखनि जावें हैं गोने को और ऊदनि को संग लिवाय । होय लड़ाई बसुरीगढ़ में लाखनि भाजें समर पराय ॥ अकिलो ऊदनि जब रहि जावे वाहो [illegible] के दरम्यान । तब लिख परिमानो तुम कनवजते भेजो कामशाह दरबार ॥ जा लिख दीजो वा पातीमें घटिया पूत देवला क्यार । राज छीड़ि लयो सब कनवज को सब घर कैद लयो करवाय ॥ गौनो करे है जो कुसमा को और ढेवासंग देय कराय । इज्जति अपनी हमरी चाहौ वैरी कों कैद लेउ करवाय ॥ इतनी करनी समधी करि लेउ तब छाती को डाहु बुझाय । अपनी जड़िकें माहिल चलदये अब तिलका को सुनो हवाल ॥ बांदी टेरी है तिलकाने तू लाखनिकों ल्याउ बुलाय । चलभई बांदी तब डोढ़ीलैं पहुंची लाखनि के दरबार ॥ बांदी बोलति है लाखनिसों चलिये महिलनके दरम्यान । तुम्हे बुलावन मैं आईहूं चलिवे तिलकाके ढिंग आय ॥ उठो अचानक बंगलामेंसे मानो सिंह बनीको भाय। आगू डलैता भाजत आवें हटु २ करत खास बरदार । मतवारे लौ घूमत आवै शंका जाहि काल की नांहि ॥ जां है ड्योढ़ी रानी तिलकाकी चरणन शीश नवायो जाय ॥ गोदी उठाय लयौ माता ने अरु छाती सौं लयो लगाय । बैठक परि गई तब लाखन कौ बोलन लगे कनौजी राय ॥ कौन आपदा माता परिगई जो जल्दी से लियो बुलाय । तिलका रानी बोलन लागी लालन मेरे कन्हैयालाल ॥ तुमने राखो है ऊदनि कौ घटिया वन्श बनाफर लाल । जादिन बिचलै देवे वारै हनि बुकरा सौ करै हलाल ॥ कही हमारी बेटा मानौ और गोने को होउ तयार । संग लिवाय जाउ ऊदनि कौ जानि न पावै बनाफर राय ॥ धोके दैके छल बल करि के अकिलो छोड़ि उदयसिंह लाल । मोको अपनो जैसो पाओ घर भजि आवो लला हमार ॥ अकिलौ ऊदनि जो रहि जैहै बेशक परै कैद में जाय ॥ जा

ऊदनिके मरजानेसे निधरक राज भोगियो जाय। अकिले आल्हा जो रहि जे हैं वे तावे में चलैं। तुम्हार रस में वैरी मारे जावें, क्यों विष घोरि करे तैयार। सुनि २ बातें महतारी की जी में बढ़ि गयो सोच अपार ॥ मन २ सोचें मनै विसूरे धधका भयो करेजा जाय। छाय उदासी गई देही में आंसू रहे नैन में छाय॥ लेत उसासें भये रुआसें निकसे हाय २ भगवान ॥ काहे माता बिरन होय गई काहे परी ज्ञान पै गाज ॥ आल्हा ऊदनिसे मित्री कहुं ढूढ़े मिले न सकल जहान। जा घटि माता बनि है नाहीं चाहौ पहुम लौट हुइ जाइ ॥ मिलिके दग़ा करे काहू को सो नर परि है नर्क मझार

अथ तीसरा खंड ॥

जैसा किसी कवि ने कहा है ॥ दोहा ॥

दग़ादार सबसे बुरो दग़ा यारको देय। आगू राह चलायके पाछे दहमें देय ॥ दग़ा सगा होता नहीं ना मानै करि देख। दग़ा करो जिन यार सौ तिनका घर चल देख ॥ वाली रावण ने करो जलयोधन अरु कंश। दग़ा करो जग आइके सो देखे निरवंश ॥ तुलसी बांझ सपूत के सो सपने में दुख जाय। आप सिवाहे ओर भरि लड़िकन सौ कहि जाय ॥

छन्द आल्हा ॥ प्रीति असीलन सौ निभहलि है वैंया पकरि लगावै पार प्रीति न करिये कोई कूरन सौ नैया बोरत धार मझार ॥ सो का माता वा ऊदनि संग अरु घट करै कनौजी राय। जियत जिन्दगी टांको लगि है मरि गये परि हैं नरक मझार ॥ सीस सौंपि दयौ मैं ऊदनि कौ चाहे सिर धर से लेय उतार। तौ हू घटि हम से ना बनि है सांची मानौ बात हमार ॥ इतनी सुनिके बोली सुदिके जरिके कहै तिलकदे माय। नौ दश मास उदर में राखौ मैंने झेले दुःख अपार ॥ सो माता की आज्ञा टारे तो को बार २ धरकार। मात पिता की आज्ञा टारी छुवारी भई कंस की जाय ॥ तैसे फजियत तेरी हुइ है कुम्भी नरक देखिहौ जाय। मन में लाखन सोचन लागे जी में बढ़ि गये सोच अपार॥ मात पिता गुरु आज्ञा टारे तिनके बिगरि आनसी जाय। गोल एकहू के नाही हैं खोटी रची श्री भगवान ॥ अपने मुख आइ हम ना कहिहैं तुमहीं सङ्ग देव पठवाय। बांदी टेरी तब तिलका ने अरु रिजगिर को दई पठाय ॥ तू लय अइये वा ऊदनि को मेरे महिलन के दरम्यान। बांदी पहुंची वा ऊदनि

पै बोली देव कुवरि के लाल ॥ तुम्हें बुलाओ है तिलका ने चलिये सङ्ग हमारे आय। उठो अचानक बंगला में से मानो सिंह वनी में जाय ॥ मतवारे लौ घूमत आवै शंका जाय काल की नाहि। चारि घड़ी को अ-रसा गुजरो पहुंचो डयोढ़ी के दरम्यान ॥ तीन पैग पै तेगा धरदियो अरु धरि दई ढाल तलवारि। दै परिक्रमा रानी तिलका का सिर धर दियो चरन पै जाय ॥ हाथ जोरि कर ऊदनि बोलत माता दीजै भेद बताय। काहे कारन माता मोको तुरता फुरत लियो बुलवाय ॥ काम बताय देव बंगला में सो करि बैठे उदयसिंह राय।

जवाब तिलका रानी का।

कुंडरिया—माघ गेंहूं चैत घी भादों मास कपास। बहू मायके धिय घरे जब तब होत विनास ॥ अव तब होत बिनास बहुत जो राखै इन को स्यानी कुसमा बहू लाल सोचो तो मनको। गावत टीकाराम लाल स्यानों लाखन है ॥ गौनों लेउ कराय कामरू जा ऊदनि है ॥

छन्द आल्हा ॥

घर में स्याने लाखनि बेटा कुसमा स्यानी बहू हमार। गौनो लैलेउ तुम कुसमा को ह्वौ समरथ लुहरवा क्यार ॥ देर न कीजे अब जाने में च-लिकें आवो उदयसिंहलाल ऊदनि बोलत हैं लाखनिसों मालिक जल्द होउ तैयार। करो त्यारी अब चलनेकी गौनों लेउ पद्मिनी जाय ॥ बारी उमरिया है भौजी की अरु मसभीजत ददा हमार। देर करन को मौका नाहीं आपुन जलद होउ तैयार ॥ इतनी कहिके ऊदनि बांकुड़ा पहुंचो सैयद के ढिंगजाय। करो त्यारी चाचा साहब गौनो लेय कनौजी जाय ॥ सैयद बोलत हैं ऊदनि सों बौरे भये उदयसिंहराय ॥ माड़ौ जानी वा क-रिया की जालै लये बापके दाउ। घर २ जादू है कांउरमें जां हैं राज म-हिरियन क्यार ॥ गंगिया तेलिन भगिया धोबिन जिन के मारें कपै ज-हान। नौसे बुटकीं मारें चुकटी घुड़की देत धरा फटि जाय ॥ भीत च-लति है वा कांवर में काठ की फौज करै तलवार। सुआ परेवा तीतुर करिदेंय बरधा गरधा हैंइ बनाय ॥ काहू नारीके वश में परि ह्वौ दरि ह्वौ दार नीच घर जाय। जासों बेटा समझावतु हों नीचो बैठु उदैसिंहराय ॥ ऊंच नीच कों तैमा सोचै राढ़ो २ रहो पुकारि। बात २ पै राढ़ो माढ़े च-लते राह बिसा है बैर ॥ हरदम भूत चढ़ो राढ़े को तोकों रहतु लुहरवा

भाइ। अलि की भूवरि तैं जिन मूलै नीचो वैतु उदैसिंह राय॥ तड़कै ऊदनि तब सैयद पै चाचा जल्द होउ तैयार । रस में चलि हौ तौ यश हुइ है नाहीं लैंहौं दैंउ प्रान॥ तब सैयद समझावन लागे संगे लेउ बनाफर जाय। जातौ चाचा वनि है नाहीं आल्हा कैसे हु जान न दैंय॥ हीला हवाला कछु ना करियो चलियो जल्द होउ तैयार । सैयद जानी जौना मानैं तब फौजनि कों करो त्यार॥करो बहानो है गांजरिको डंका धनो उदैसिंहराय। जी न धराय दये घोड़नपै हाथिन हौधा दये धराय॥ तम्बू लदि गये हैं गाड़िन पै सो आगू को दये बढ़ाय। घोड़ा वेंदुला पै ऊदनि है सैयद सिंहिन पै असवार। कूंच बोलि दयो है रिजगिरि से पहुंचे जैचन्द के दरवार॥ जादौं बोलतु है लाखनि सों देर न कीजे ददा हमार। इतनी सुनके डंका बाजो साजो कुंवर कनौजीराय॥ फौजैं साजति हैं लाखनि की फौजनि मिलत न माना पार। सुनी खबरियों हैं ज़्वाननि ने सब ने बांधि लये हथियार॥ तेरह पलटन रंगरूटनिकी चौविस तुरिक पठाननि क्यार। असी सैकड़ा सांकरि वाले और बखतरिया वीस हजार॥ सुरहीं साजति है लाखनि की बंगला सजे कनौजी राय। सजिकैं लाखनि जब ठाड़े भये माताको दयो शीश नवाय॥ तिलका बोलति है लाखनिसों बेटा सुनियो ध्यान लगाय। गोली बाजति खन खेतनिसे भजियो कुंवर कनौजीराय। सोई कान भुरही के कहिदई मेरो कुंवर मिलैयो आय॥ चरन लागि के महतारी के हौदा तुरत बनत असवार। गंगाजी को शीश नवायो कूच को बाजो लंगाड़ो जाय । कूंच बोलिदयो है कनवजसे और कमरू की सूधि लगाय। राति हू दौरें दिन हू दौरें वटिया गिनत धूप न छांह॥ वीस दिना को धावा धरिकैं वसुरीगढ़में हनो निशान। कलशा चमकत हैं सोनेके ऊपर धरी तोप जंजाल। ऊदनि बोलत हैं सैयदसों पुरिषा बनसके खिरदार। किला कौन के जे कहियत हैं जासों नगिन घुमैं तलवारि । जा है वसुरी लालशाह की जासों नगिन घुमैं तलवारि। डेरा डारि दये ऊदनिने तम्बू डांगनि दये लगाय॥ हाथी घोड़ा जो लश्कर में सो खेतनि में दये ढिलाय। खेत उजारि दये वसुरी के रैयत भजी बघेले क्यार। जाय पुकारी लालशाह पै सुनियो दीनबन्ध महाराज । दोहू दिना रहे वसुरी में ऊजर रैयत होय तुम्हार। इतनी

सुनिकें कामशाह के आंखिन रही लालरी छाय । डंका बजो समर दल साजो हाथी सजो बघेले क्यार । जीन धराय दये घोड़न पै हाथिन हौदा दये धराय । तोपें धरिदईं हैं चरखिनपै सो आगे को दई जुताय । खेत भराय दयो राजाने जैती खम्भ दयो गड़वाय । मुरचा बंदी करि फौजनि की पाती लिखत बघेले राय । लिखे हकीक़त परवाने में लाला देव कुंवरि के लाल । होय अभिलाषा जो लड़नेकी जल्दी बांधि आवौ तलवार । जो इच्छा होवे मिलने की जल्दी मिलो अनारू आय । चलो डाकिया वा ऊदनि पै जां दरवार कनौजी राय । बांची पाती भव की छाती लड़वै देशराज को लाल । है रनवंका समर न संका फंका करत नरेशन क्यार । मारू डंका हो निरशंका इकदम कूच दयो करवाय ॥ लालशाहके जाय मुहरापै ऊदनि फौजें दईं लगाय अब कल नाहीं है ऊदनि को घोड़ी आगू दई बढ़ाय । लालशाह ऊदनि से बोलत क्यों गनरहे भुजनि मड़राय । काहैं भावई तुम्हरी आई ल्याई वसुरी के मैदान । रड़िया दुखिया को घर जानो मेरे घर बांधि आये तलवार । खेल लौंड़ियन में खेले हो अबकें परो मर्दसों काम । जियत निकरि जाय जा वसुरी से तौ हुइ लागो बाप हमार । ऊदनि बोलत लालशाह सों क्यों तेरी अकलि भई हैरान । ऊपर धरती नीचें करिदेंउ तरको जाय धरौं असमान । अबै तो बढ़ि २ बातैं मारो नेक में मांगो धरम द्वार । चारि घरीकी काहे मारनमें करि हौ स्वर्गलोक में ठौर । गुस्सा खाई लालशाह ने तोपनि आग दई लगवाय । धुंआ उड़ानैं चहुं चक्किन के चहु लगि छाय रहौ अंधियार । फुकति मड़ैयां सील शकरमें चारो लग होत आवै अंधियार । गीध मड़ैयां छावत आवत गावत गीत भूत बेताल । सूंड़ि लपेटा हाथी झपेटा मानों सिंह चपेटा खांय । धावैं सूरा भाजें कूरा वीरा लड़त समर ललकार । इकदम हल्ला लालशाह ने अरु ऊदनि पै दयो कराय । भजे सिपाही तब कनवज के घोड़ी बड़ी बनाफर क्यार । एक कनैयापै सैयद हैं दोनों हाथ गहैं तलवार । जा गति वीतति हैं दंगल में और लाखनि को सुनो हवाल । पहिलेंई गोला के वाजत खन वे भुरईकों गये भजाय । सो वे पहुंच गये कनवज में मातै मिले महिलमें जाय । जा गति करिदई बिन लाखनि ने अब वसुरी को सुनो हवाल । राजा बोलत हैं ऊदनिसों हम तुम खेलैं जूझ अघाय । जा मन भाय गई ऊदियाकें राजा लालशाह सिरकार ॥ चोट आपनी पहिले करिलेय जा है रीति महोबे क्यार । इक-

इम गांसी लै राजाने सोऊदनि पै दई चलाय। ढाल रोपिदई गैंड़ा वाली खाली चोटि दई करवाय। फिरिकैं भाला लै राजाने सो ऊदनि पै दियो चलाय। तौ हू वचिगयो देशै वारो राजा नगिन गही तलवार। टूटि सिरोही गई राजा की खाली मूंठि हाथ रहिजाय। सोच फिकिर में राजा परिगवे बढ़िगये कुंअर उदैसिंहराय॥ कावा देकैं तबहाथीको बाजी टाप शीश गज जाय। मारि महावत गुरजदार कों वंद हौदा के दबे कटाय। काटि भारकस दबे हौदा के ढका दयो डाल को जाय॥ राजा डारि दयो हौदा से धरती भयो धमाको जाय। ढिंग ही सैयद जे ठाड़े थे राजा के झपट लये बंधवाय॥ लूटि बोलि दई है बसुरीकी घर२आगी दई लगाय। हाथ जोड़कें लालशाहने तब ऊदनि को दियो जबाब॥ संग आपके कांउर चलि हैं सहजहिं दी हैं विदा कराय॥

मुश्क खोलि दई तब राजा की और चलने को भये तयार। जब तम्बून में ऊदनि पहुंचे खाली खेमा लखे उजार॥ मूड़ मारिदयो है धरनीमें रोवन लगे उदयसिंह राय। तब समझावत हैं सय्यदको चाचा करिहौ कहा उपाय॥ लाखन भाजि गये कनवज को और घटि करी हमारे साथ। जो हम लौटि जांय कनवज कौ तो जग हुई है हंसी हमार। ऊदनि लौटन के नाहीं हैं चाहो लौटि जांय भगवान॥ बिन गौने के हम ना लौटे चाही लौटि जाउ असवान। करी घटियाई उन लाखन ने पलिया पलट हमारे साथ। जैसा किसी कवि ने कहा है।

अब ऊदनिको अफसोस करना और दोस्तीकी बातें कहना।

दोहा—समान ही सों कीजिये ब्याह बैर अरु प्रीति। सार बचन गहि लीजिये यही जगत की रीति॥ देखो प्रीति की रीति को अलपहू सरस बिकाय। कपट खटाई परत ही विलग होय रस जाय।

अथ कुड़रिया।

यारो साहर इक भले कायर भले न पचास। सायर रन सन्मुख लड़ैं कायर प्रान की आस॥ कायर प्रान की आस देखि रन से भजि जावैं। आप हसावैं लोग जगत मैं नाम धरावैं॥ कह गिरधर कविराय बात धारी जगु जाहर। साहर भले हैं पांच संग सौ भले न कायर॥

कबित्त ।

प्रीति कहा करिये उन सौ जिनके कछु पेटकी थाह न पैये । कहैं कछु और करैं कछु और कहा तिन सौ नित नेह बढ़ैये ॥ जो अपनी मर्जी नहिं जानत वाहू से दूरि सदा नित रहिये । जो दिन आज सो कालि सखी करि ओछे की प्रीति सदा दुख सहिये ॥ ज्ञान घटै ठग चोर की संगति रोस घटै मन के समझाये । प्रीति घटै नित मांगन से और मान घटै नित के घर आये । नारिप्रसंगसे जोर घटै अरु नीर घटै ऋतु ग्रीषम आये ॥ पाप घटै कछु पुण्य करैं अरु रोग घटै कछु औषधि खायें ॥

छन्द आल्हा ॥ रोइ २ के ऊदनि बिलखै जा घटि करी कनौजी राय । कूच बोलि दयौ है बसुरी से और कांउरकी सूध लगाय ॥ तीन दिना लौ धावा करिके दावो धुरो कामरू क्यार । किला दिखानो कामशाह कौ चमके कलश सोभरन क्यार ॥ साठ हाथ की जहां लगी पै झूमति जहां नगिन तलवारि ॥ ऊदनि बोलत हैं चाचा सों किनके किला धरे असमान ॥ तब सय्यद समझावन लागे यही है किला कमरिहा राय । डेरा डारि दये ऊदनि ने तम्बू तुरत दये लगवाय । ऊंचे खाले तम्बू लागे निहलन लागे उरद बजार । लगी बजरियां हैं तेगन की और ढालन के लगे बजार ॥ जीन उतारि धरे घोड़न के हाथिन हौदा धरे उतारि । फेंटे छुटि गईं रजपूतन की सब ने खोलि धरे हतियार । पाती भेजौ कामशाह को चाचा जल्द देउ पठवाय । कागज़ लैके कलपी वारो पाती लिखी बनाफर राय । सिद्धि श्री सरनामा लिखि के बौरा लिखत उदयचन्द लाल लाखन भेजे हम आये हैं और ऊदनि है नाम हमार । गौनों करिदेउ तुम कुसमा को जो है बहू तिलकदे माय । हीला हवाला जो कछु होवै तौ कमबख्ती लगै तुम्हार । होय लालसा जो लड़ने की तो मति देर लगैयो जाय ॥ पाती भेजत हैं आपुही को ख़त को जल्दी देव जवाब लैके पाती दई हरिकारै लैजा कामशाह दरवार ॥ जा लै सड़िया वा लय खडुवा जल्दी दीजो ख़बरि लगाय । खैंची सांकर बैठो जमकर हसिकर चलौ अनोखी चाल । बावन बजरिया बियालिस गुदरी बासठ नाघे उरद बजार ॥ लगी कचहरी है राजा की वाही बंगला के दरम्यान । खड़े छबीला हैं बंगला पै पहिरा विकट तिलंगन क्यार । नौ से कुर्सी हैं बंगला मैं मोढ़ा परे तीन सौ साठ एकओर फौजें हैं मुगलन की इकओर फौज पठानन क्यार । जाय हरि-

कारा दाखिल हुइ गयो वाही कामशाह दरवार। झालावारे नै ललकारो वज्जम वारे दियौ जवाव। पांउ अगारू कौ ना धरियो नहिं सिर गिरे भूमि महराय। कौन देश की पाती लाये किन राजन ने दई पठाय॥ पाती लाये हम ऊदनि की जो हैं मित्र कनौजी राय। इतनी सुनि दरवानी भाजो राजै खबरि सुनाई जाय। भयौ बुलौआ हरिकारा को पहुंचो बंगला के दरम्यान। लौटि कनातें जे दरियाई झालरि पलट मौतियन क्यार। तीन कुंनसैं तेरह मुजरा अरु राजा को सात जुहार॥ काढ़ि खलीसी सों पाती को सो धरि दई मेज़ पै जाय। पाती दै हरिकारा लौटो पाती पढ़ी कमरिहा राय। बड़ी खुशी भई कामशाह कौ जो घर आये उदयसिंह राय। सूरज बेटा को बुलवायो बोलत कामशाह महाराज। धनि २ हम कौ तुम कौ बेटा धनि है भागि कामरू क्यार। करौ सजनई है कामवरि की देखत इन्द्रपुरी सरमाय। घर २ कहि देव सब कामरि मैं महिलन ख़बर देव करवाय। कछु २ सखियां हैं महिलन मैं कछु नगर से लेउ बुलाय। ढोलक धरिलेव सब आंगन मैं महिलन होय मंगलाचार॥ सजै बज़रियां सब कांउर की अरु चौपरि के सजैं बजार। साहूकारी है कांउर में हैं हीरन के जहां बज़ार। चौकन २ फर्श बिछाओ और समियाने देव लगाय। सढ़हा तिवारे अरु चौवारे गली गलीचा देव बिछाय। बंदन वारी हैं सोनेकी झालर टंकी मोतियन क्यार। दुय२ कुर्सी दश२ मोढ़ा सब के द्वार दये डरवाय। कहुं २ हाथी कहुं २ घोड़ा सब के द्वार दये बंधवाय॥ घर २ घर में परे बधाई घर २ होयं मंगलाचार। जितनी तिरियां हैं कांवर में रच २ खब करैं सिंगार॥ ले २ माला सब फूलन की रंग केसर को करैं तय्यार। जौन गली होय ऊदन निकले बरषा होय फूल की ज़ाय। छुटैं पिचक्का रंग केसर के और अबीरकी धुन्ध उड़ाय॥ जो २ हुक्म दयो राजाने सो सूरजने करो तय्यार। धनि सजाई है वा दिन की तीनों पवन बहैं तत्काल। तन की पीरा घटै शरीरा जीरा लहर २ लहराय॥ सीतल मन्द सुगन्द शमीरा खोवत काम उठै भन्नाय॥ तबर जा समझावन लागे सूरज मानों कही हमार। ले नज़राना देउ ऊदन को संगही लावौ ऊदय सिंहराय॥ लखैं तमाशा वह कांवर को जो भई खुशी बघेले क्यार॥ इतनी सुनके सूरज ठाकुर अपनी घोड़ी करी तय्यार। एक पहर के जे अरसा में पहुंचे तम्बुअनके ढिंग जाय। देख साहिबी वा ऊदन की सूरज हो गये हाल बेहाल॥ दरबानी से बोलन लागे कहां वे देवकुमरि के लाल।

कलसा चमकत हैं सोने के ऊपर [illegible] खाय । वही कचहरी है ऊदन की बैठो सिंह महोबे क्यार ॥ सूरज बोलत दरबानी सों हमरी खबर देउ करवाय । तब दरबनी गयो बंगला में जाय ऊदन से कहो हवाल ॥ सूरज आये हैं मिलने को कहा है हुक्म ऊदयसिंहराय ॥ तब ऊदन समझावन लागे जल्दी भीतर देउ पठाय । चल दरबानी गयो दरवाजे तबसूरज को दयो पठाय सूरज पहुंचे जबबंगला में उठि कैं मिले उदैचंदलाल ॥ छाती लगाय लयौ ऊदनि कौं और नजराना दयौ गहाय । होति खातरी है सूरज की जो है रीति नरेशन क्यार ॥ बोलत सूरज हैं ऊदनि सें ओबांकड़ा महोबे क्यार । तुम्है बुलायौ है राजा ने सो चलन कौं होउ तय्यार ॥ लगी लालसा सब रैयति की पाक कैं पड़ी देउ कराय ॥ एक दैनकौं बासाकरिकैं सब कौं दरसन देउकराय । हमै चलन में उजर नहीं है चाचा आवै संग हमार बिन सैयद चाचा की आग्या सूरज हम चलने के नाहि ॥ सूरज चलि भये तब सैयद पै झुकि कैं करी बंदिगी जाय । दयौ नजराना तब सैयद कौं तब सैयद ने दियौ जवाब ॥ नाम गांव अपनौ बतलावो पिता सहित सब देउ सुनाय । हम हैं बेटा कामशाह के और सूरज है नाम हमार ॥ ऊदनि बुलावन को आये हैं चाचा आग्या देउ कराय संग लिवाय जांउ ऊदनि कौं तैसोई यहां जांउ पठवाय । साफ जवाब दयौ सैयद ने कांवर राज महिरियन क्यार । राढ़ी लड़िका दे वै वारौ चलते राह बिसाहै रारि ॥ सो जैहै जौ वोकांवर मैं बेशक होय घरी सी रारि । छिन न केल कौ जू लड़िया है बढ़िया सूर महोबे क्यार ॥ अलल बछेरा सूर अनेरा वयसकिशोरा राज दुलार । रेख उठंतौ राढ़ि मचंतौ हंतौ सूरध बल सिरदार ॥

जवाब सैयद कौ सूरज सैं ॥

कुड़रिया ॥

जायौ दिजला माय नै धनि २ ऊदनलाल । गायौ भारत बीच में भयौ काल कौ काल । भयौ काल कौ काल लड़त नहि नैकअघायौ ॥ ब्रह्मा रचना रचत शिशु सिंघार अघायौ । गावत टीकाराम जगत पालक सरमायौ ॥ नित नये राढ़े रचतु लड़तु नहिं नैक अघायौ ।

छन्द आल्हा ॥

जासौ सूरज कही मानि लेउ हमना भेजैं उदैसिंहराय। तब सूरज ने गंगा खाई बीच में दये श्री भगवान॥ सांची जानी तब सैयद ने आग्या तुरत दई करवाय। तब ऊदनि से सैयद बोले बेटा मेरे लहुरवा बयार॥ कठिन मवासी जा कांमर है जां है राज महिरियन क्यार। चोरी चोरा छुप आल्हा तैं आये कांवर के मैदान॥ मन कों वस करि इंद्री कसिकर रहना खबरदार हुसियार। इतनी सुनि कैं ऊदनि साजत वाही तंवुआ के दरम्यान। गंगा जल सैं नहाय धोय कैं धोती पहिंद पोतिया क्यार। पैंधि जिजाम मिसरीवालौ जामा पैधै दुदामी क्यार॥ बख्तर पंहि धै ईसपात कौ जो चिंतामन गढ़ौ लुहार। तवा जड़ा बहुत है छाती पै सेल्हा लगत ठनाके खाय। टोपु झालरी है माथे पै तेगा लगत धार झरि जाय। कुंडल सोहत हैं कानन में हातन कड़ा सोबरन क्यार॥ पाग बैंजनी है माथे पै कलगी धरी सोबरन क्यार। हीरा जड़ाऊ की कलंगी है मन रबि किरन रही दरसाय। रेख उठंतो जा ऊदनि है और नैन मैं जरत मसाल। वांह सरारो भुजु भरि छाती साढ़े सात हात को ज्वान॥ भाला बाधै नाग दौनि कौ सेल्हा बरदवान कौ जाय। लई कमानी है मुलतानी गिरवर सात सेर कौ खाय॥ बारह खंजर सोरह बिछुआ और हनि वांधे मूठि कटार। सोरह करदैं कमरि बांधे कमरि कटारी लई लगाय॥ अगल बगल पै दौ पिस्तौलैं करिहां दौ झूलैं तरवार कड़ावीन दहिने पर वांधे वत्तिस टका नवाबी खाय। पेटी वांधे वारूदन की गोली बीस लेत डरवाय। नीचैं सुनार कौ वंद खैचें ऊपर सड़सिन जड़त लुहार लयें हथोड़ा वढ़ही ठोंकें बख्तर कड़ी झना का खाय। खैंचि मुदरिया दई कम्मरि की करिहा सिंह वरन होय जाय। सजि के ऊदनि जब ठाड़ो भयौ मानौ सिंह वनी को जाय।
तब ललकारो थनवरियाकों घोड़ा वैंदुला करौ त्यार। तब थनवरिया भाजत आवै फेरो हाथ वछेरा क्यार॥ हींसत घोड़ा है वंगला में वोलत वंगलाके मैदान। कौन देश की लगी भावई कहंकों चढ़े लुहरवा क्यार॥ तब थनवरिया बोलन लागो देखें कामशाह दरबार। कानन सुनी कामर अब देखें पैखें काम शाह दरवार॥ दो थनवरिया यामें आवें दो जाय देत दिलासा जांय। करचे दूधनि सों हनवायो फिर पानीसों दियो हनवाय।

पीठ दुशालासों पौंछत है ऊपर जीन दियो धरवाय ॥ जीन सुन्हेरी मखमल वारो रेशम तंग दयो खिचवाय । लगे वकसुआ सोनेवारे औरतन नसों जड़ी लगाम ॥ डारि दुभागा दये घोड़ाकें जामें काम सोवरन क्यार । जड़ीं कनौती है मोतिनसों सुहरा जड़े जवाहर लाल ॥ परी हमेलें हैं सुहरनि की दुहरीं परीं हमेलें लाल । वारन २में मोती हैं हीरा लौटि गुही किसवारि ॥ दुमची लागी है रेशम की कलंगी धरी सोवरन क्यार ॥ पांय पैंजनी जंगें गुंजें है झनकार हमेलन क्यार । सवालाखकी कलंगी झलकति ललकति फिरति शीश पै जाय ॥ लोह के नाल कढ़ि पांयन के आसीधात जड़ाये नाल । धन्नि सजाई है घोड़ाकी चढ़ि हैं देवकुंवरि के लाल ॥ घोड़ा वरनो कै असवारे दुश्च में एक न वरनौं जाय । अज्ञा लैके तब चाचा की अरु सारथकों शीश नवाय ॥ कूद वैंदुलापै वन वैठे दयो लशकर से कूंच कराय । जायके पहुंचो है फाटक पै राजा मिले अगारू जाय ॥ रैयत राजा सब कांमरके उमड़े देखन को तत्काल ॥ हाथी वैठो कामशाह को पैदल भये भूमि भूपाल। घोड़ासे उतरो जब ऊदनि है राजा छाती लयो लगाय ॥ आंसू छायरहे नैननमें वार २ विनवै शिरनाय । बड़ी गरीबी आधीनीसों ऊदनि रहगयो माथ झुकाय ॥ जैसे चाकर हम जैचन्दके तैसे लगत आपुके आय । धन्नि सराहौ कामशाह ने धनिरे देव कुंअरि के लाल ॥

दोहा—पाक फौंपड़ी कीजिये दास आपनो जान ।
नर नारी जीवस्थि रही मो घर करौ पयान ॥

छन्द आल्हा ॥

फिर वन वैठतु है घोड़ापै कोड़ा लयो हाथमें जाय । चटकत कोड़ा दंदकत घोड़ा मोड़त मुरक २ पै जाय ॥ वाउन वजरियां जो कांवरकी देखत चले उदैसिंहराय । संग में हाथी कामशाहको डंका वजतु अंगारू जाय ॥ यही सड़क में ऊदनि निकरै वरषा होय फूल की जाय । जो नर नारी वा कांवर के देखत रूप रहे हरखाय ॥ छाति २ सों पांति २ सों नारी ठाड़ीं नूर वनाय । सूंड़ २ सों मुड़गा छिनसों मनु रवि किरन रहे छुटकाय ॥ वां कांउर के काहे छज्जनपै तिरियन रही लालरी छाय । देखैं कामिन मनु मन भामिन मानौ नागिन सीं लहरांय ॥ कोई २ सारी पहिंद सुन्हारी नारीं ठाड़ीं पमर द्वार । कोई २ नारीं अति सुखवारीं सा·

ड़ी पहिर रेशमी क्वार ॥ कोई २ नारी देख सुखारी न्यारी फिरैं पुरुषनैं जाय । कोई २ नारी गहैं किवारी कारी नागिन नों लहरांय ॥ कोई २ नारी चढ़ीं अटारी वारी वैसरूप गुणखान । कोई २ नारीं हैं मतवारीं जारी देह मदन की खान ॥ नारि नवेली हैं अलवेलीं हेली मेली फिरैं विहार । हैं मृगनयनी अरु पिकवैनी वैनी गुही मोतियन क्यार ॥ कोई २ कामिन हैं गजगामिन भामिन फिरैं भड़कती चाल। कोई २ नारीं घूंघट मारैं दुआरैं ठाड़ीं चित्त लगाय॥ कोई तिरियां वारी उमरियां विरियां गहैं पान की आय । कोई वाला फूलन माला आलारूप अनोखी चाल ॥ कुकटक हेरैं पलक न फेरैं टेरैं सुनैं सुनावहिं नाहिं। लै लै माला भाजैं वाला डाला गरैं लुहरवा जाय ॥ लै पिचकारी मारैं नारीं भारी धुंधि अवीरन क्यार । लै लै गजरा कर२ मुजरा गजरा गुथीं देंय डरवाय। कोई २ स्यानी चढ़त जवानी जानों नहीं जगत व्यौहार॥ रूप देखिकैं वा ऊदनि को तिरियां मोहिं २ रहिजांय । गौनें वारी भौनें बैठी व्याही लेती उसासैं जाय ॥ जो थीं कुंआरीं वा कांवरमें सो मन ही मन रहीं विचारि । ऐसे पति जो हम को मिलिजांय तौ हम ठाड़ीं करें ट्यारि ॥ जा गति ह्वै रही है तिरियन की सो गति लिखत कलम शर्माय । कबहूं घोड़ी धरती नाचै कबहूं पंख रहै फैलाय ॥ नहु २ धरती घोड़ा खूंदै जगैं झनन २ झन्नांय । घोड़ा की कलंगी अरु ऊदनि की दोनों एकमेल हुइजांय ॥ मारे २ यौं गजरन के घोड़ा पै ढके उदैसिंहराय । कोतल घोड़ा करी ऊदनि को हाथी हौदां लये विठाय ॥ माझ बजरिया में पहुंचत हैं वरषा भई फूल की जाय ॥ हौदऊ भरि गयौ है फूलनि सों केसर रंग गली वहि जाय । गावैं गारी छातिन नारी न्यारी २ रहो सुनाय ॥ आये हमारे देवै वारे सारे सूरज के सरदार । वहिन तुम्हारी वड़ी छिनारी नारी भई जादवां जाय ॥ जाति तुम्हारी ओछी भारी वारी वहिन करी वरनारि । फूला फुलाओ अति सुख पाओ गाओ गीत कामनी क्यार । मोज उड़ाई मयके आई फिर सोतीघर दई पठाय । सुनि २ गारी जब ऊदनि ने और धीरे से लगे वतान जानी रीतैं हम कांउर की जही है रीति कामरू क्यार ॥ औरन के संग सात डारि के घर ही गौनो लेंय मनाय । खाय खेलि के घर अपने में फिर गौने को करैं विचार । जितनी तिरियां जा कांउर में सब वेश्यापन रहीं दिखाय । पर पुरुषन के फूल मारतीं हंसि २ अदा रहीं दरसाय ॥

भली रीति तुम मातापिता की सिर पै दार दरौ दिन रात । घरमें कुसमा स्यानी करि लई गौनों करत कपल तुम गात । सुनि २ बातें जब ऊदनिकी नारी सब लागी हरषान । गजरनि ढकिगये जब हौदा में तब राजा ने दियो जवाब ॥ गजरा बन्द करौ सब नारी गजरा फिर दीजो डरवाय । तीन दिनो हियां ऊदनि रहिहैं जाही कामरि के दरम्यान । धन्नि सराहत मात पिता को ऊदनि धन्नि घरी अवतार ॥ धन्निसरा है उन तिरियन को जिनके कंथ उदयसिंह राय । धन्नि घरी है आज शहर की दर्शन मिले उदयसिंह राय । परी वधाई सब कांमरि में तिरियां करैं मंगला चार ॥ चली सवारी वा ऊदनि को जां है कामशाह दरबार । भारी बंगला कामशाह को जामें जड़े जवाहर लाल । हाथी ठाड़ो करिराजाने गोदी लये उदयसिंह राय । आधी गरदी पै राजा है आधी पै ऊदनि लये विठाय ॥ घर में रानी मंगल गावें कुसमा झांकि २ लखि जाय । होय महिमानी वा ऊदनि की निधरक रहैं उदयसिंह राय । होनहार को को मेटतु है जो करता ने लिखी लिलार । सत सों डोलै झूठ न बोलै तौलै धरम सनातन बयार । मन को वसकर इन्द्री कसकर हंसकर रहे लहुरवा बयार ।

अब तिलका रानी ने चिठ्ठी भेजी कामशाह अपने समधी के पास ॥ दोहा ॥

विपति वरावर सुख नहीं जो थोरे दिन होय ।
भलो बुरो पहिचानिये जानि परै सब कोय ॥

छन्द आल्हा ॥ विपति अवेरा सबपै परिगई एकदिन सवै सताओ जाय । ईंठ मीठ अरु भाई बंधवा जनिये असने होंय सहाय । बने बनौआ को सब कोई विगरे सभी संग छुटि जाय । सांचो संगी सोई दुनियां में जो असने में होय सहाय । एकदिन परिगयौ महादेव पै जब भस्मास्वर परो पिछार । इक दिन परिगयौ रामचन्द्र पै बन में हरी जानकी नारि । सीता हरन मरन जशरथको लागी शक्ती लछिमन बयार ॥ होनहार कौ को मैंटतु है विपति में विपति परी करतार । इकदिन परिगयो नल राजा पै विपता परी पंडवन बयार । सोई भावई गढ़ लंका में रावण के गई शीश विसाय । सोई भावई घर २ घूमै जाने कबै ढका दप जाय ॥ सोई भावई वा ऊदनि को अरु कांवर में जाय दिखाय । नेकी में अब नागा हुय हैं जो सिर परे उदयसिंह राय ॥ छूटि सुमिरनी की बातें गईं अब कनवज

को सुनो हवाल । टीकाराम गाय यों भाखैं सब पै कृपा करे भगवान ॥ लाखन पहुंचत खन तिलका ने पाती तुरत करी तैयार । लिखी हकीकत कामशाह को समधी साहब सुनी हवाल । धोके लड़िका देवै वारे हम कनवज में लये वसाय ॥ करि घटिआई वा ऊदनि ने गरदी लई कनौजीराय जैदन्द राजा करे क़ैद में लाखनि के लये डंड वधाय ॥ हम हूं दाना दारि दरत हैं चेरी बनी देवला क्यार । धोको देकैं कांउर आवै गौनो लेन कुसुमदे क्यार । चेरी बनै हैं रानी फुलवा की चकिया पीसैं संग हमार जा सो समधी समझावति हों अब है राज तुम्हारे हाथ । कै तो क़ैदकरौ वैरी को कै सिर धर से लेव उतारि । जियन न आवें काहू हालति सों नहिं हुय जैहैं बुरे हवाल । इज्जति अपनी हमरी चाहौ तो जल्दी सों करौ उपाय । लिखि परवानो दयौ चरवर को और कांउर को दयौ पठाय राति दिना की दौरें करिके धामन पहुंचो कामरू जाय ॥ कामशाह के दरवाजे पर अरु साड़िनी को दियो बिठारि । लै पाती बंगला में घुसिगयो और राजा को सात जुहार ॥ पाती लय के हरिकारा ने सो धरिदई मेज़ पै जाय ॥ काढ़ि कतरनी सों वंध काटे पाती पढ़ी कमरिहा क्यार ॥ बांचत पाती धड़की छाती लाली रही नैन में छाय । वाढ़ो क्रोधा भाजो बोधा जोधा सूरज लयो बुलाय । पढ़िके देखो कैसो धोखो जा ऊदनि को लखौ हवाल । क़ैद कराय लेउ वैरी को कै सिर धर से लेउ उतारि । असी हाथ को जो दाहक है सड़ि गल मरे उदयसिंह राय । तब सूरज समझावन लागे दादा धीर धरौ मन मांहिं ॥

छिरिया बुकरिया ना ऊदनि है जो गहि कान थामि लेउ जाय ॥ नहीं बतासा वो ऊदनि है घोरि कै शरबतु लेउ कराय । जगु जानतु है वा ऊदनि को जाके छटी धरी तलवार ॥ दृष्टि सनीचर है ऊदनि के देखत किला भस्म हुय जांय । जौधरि बिच लैजा कांउर में घर २ दी है रांड कराय ॥ रसकिरियन जौ विष वय हौ दादानुनत बहुत पछिताउ । गंगा करि कै हम लै आये गंगा जैहै हमैं चबाय ॥ हम सें दादा जाना बनिहै जौघटि करैं लहुरवा साथ । अकिले ऊदनि मरि जानै सै नहि होय रांड महोवे क्यार ॥ आखरि खवरि होय सिरसा मैं वेशक चढ़े मल्हारी आय । कठिन मारु है वा मलिखे की खाइन दी है किला डराय ॥ इतनी सुनि कै कामशाह के नैना काल रूप हुय जाय । मात पिता की अग्या टारै

मरि है नर्क जेल मैं जाय। नालति तेरी रजपूती कौ कुल कपूत पैदा भयौ आय॥ पहिले तोहि हनौ बंगलामैं पाछै हनौ उदैसिंहराय। जासैं सूरज कहूी मानिकै बांधौ ढंड उदैचंदलाल॥ सोच फिकिरि मैं सूरज परिगये खोटी रची श्री भगवान। जा जीतव सैं मरिवौ बहतर मन अपनै मैं लई बिचार। बंदोवस्त बंगला मैं करिकै नामी सूर लये बुलवाय॥ अगल बगल पै ठाड़े करिकै पहिरा विकट दये लगवाय। जा बंगला मैं ऊदनि सोवै सूरज लगे जगावन क्यार। ऊदनि वोलत हैं सूरज सैं क्यों सोवत सैं दियौ जगाय॥ कंपि पैंछुरी गई सूरज की धधका भयौ करेजां जाय। हाथ जोरि कै सूरज रहि गये सुनियौ देव कुअरि के लाल। तुम्है बुलायौ है राजा ने हम नहि जानै हाल-हवाल॥ उठौ अचानक बंगला मैंसे जाकौ काल देखि भय खाय। कामशाह कों जाय बंगला मैं ऊदनि रहि गयौ माथ झुकाय॥ बैठक परि गई वा ऊदनि कौं वैठौ बंगला के दरम्यान॥ काहू लैकै गजरा डारै काहू बीरा दये गहाय॥ वदी विचारैं छत्री ठाड़े करसैं छूटि परी तलवार। कछु २ छत्री सरकन लागे चुपकां टांगि २ तरवार॥ सेर वकरिया कोवरनी है सो राजा ने दई लगाय। कछु २ छत्री ठाड़े देखैं ऐंठा परौ पैट मैं जाय। बड़ी ग़रीबति आधीनी सैं बोले कामशाह महाराज॥ सुनियत लड़िका देवै बारे हौनिर संख बनाफर राय। कैसे तेगा हैं महुवे मैं सो देखन कौ देउ गहाय लेकै तेगा वा ऊदनि नै सो राजा कौ दयौ गहाय। राजा लैकै औरै दै दयौ औरन औरै दयौ गहाय॥ हातनि २ तेगा लेके सो महिलन कौं दयौ पठाय॥ जो हतियार हते ऊदनि पै सो सब लेलै दये पठाय॥ पेसक बज कंमरि मैं रहि गई संखा खाय उदैसिंहराय। कछू दारि मैं काल कारौ है मन ही मन मैं रहो बिचार॥ चारौ ओरी देखन लागौ नंगी सूझि परै तरवार।

कामशाह तव बोलन लागे पेशकवज तुम देउ गहाय। पेशक बज हम दी हैं नाहीं चाहौ प्रान रहैंकै जांय। जरिकै राजा बोलन लागौ घटिया वंश बनाफर क्यार। मूड़ काटि लेउ जा वैरी कौ हनि वुकरा सौ करौ हलाल॥ जागति देखी जब ऊदनि नै तव जल रहौ नैन मैं छाय। कही न मानी हम चाचा की सो सिर ऊपर पहुंची आय। हाय विधाता का रचिराखी पञ्चा खैंचि रहे भगवान॥ जाय बाढ़े ते महुवे के माटी गिरी विदेशय आय॥ सुनत ही माता प्रान छोड़ि है दादा भटकि २ मर जांय। बारौ वरौना बिन चाचाके अपनौ पेट मारि मरि जाय। चोरी हुय हैं सब तिलका कौं घोड़नि लीदि भारि हैं जाय॥

अब ऊदनि को अपसोस करनो ॥

कुड़रिया ।

टारी बाबा सीखमें मरन भयो परदेश । लुटा देश निज आपनो जं मैं बढ़ो कलेश । जी मैं बढ़ो कलेश कही हम उनि की टारी ॥ मरे विदेश आय मृत्यु अब भई हमारी । सुनत ही दादा मरे और देवै महतारी सुनतहि तिरियां जरें माठि अब भई हमारी ॥

छन्दआल्हा ॥

झुके सिपाही कांउर वाले इक दम हल्ला दयो मचाय । चारों ओरं तें घेरत हैं वेंड़ी सूर महोवे क्यार । छांड़ि आसरो जिंदगानी को माय मोह दयो बिसराय । काल हतेरी पैधरि लीनो कूदोसिंह महोवे क्यार दुय हजार के जाय मुहरा पे बाजन लगी कटारी जाय । जैसे भिड़हा भे ड़न मारै फारें डारे करे विहार ॥ जैसहिं सिन्घ बकरियन मारे निधरक मारे स्यार उजार । काहू के तो घूंसा मारे काहू के लात देत फटकार । काहू के धर धमके कटारी धर से शीश गिरत भहराय । टूटि कटारी ग ऊदन की खाली हाथ रहो खिसियाय । खम्भा खैंच लयो बंगला को पक्षु छत्त गिरी भहराय । लै खम्भा छत्रन में बैठो छत्री भाजें पीठि दिखाय । कोई २ मारे कोई धर भाजे कोई दुबकि कोठरिन जाय ॥ खून पनारि बहि २ निकरल लोथें डरी २ बिलखांय । जायके पहुंचो सूरजमल पे धक्क दयो लात को जाय ॥ सूरज डारि लयो धरतीमें अरु छातीपे बनो सवार काहे ससुर के करि घटियायी गंगा खाई संग हमार । सारो लागे मो यार को नहिं शिर धरि से ले तो उतारि । इतनी कहि के धरि २ पट झटका देत उदयसिंह राय ॥ हाथ जोरि तब काम शाह ने विनती करा बघेले राय । नेग होत हैं जा दरवाजे सो भरि पायो लुहरवा क्यार । जैं सुने हते हम काननि आंखिन लखे सूर औतार ॥ निधरक वैठो चलि बं गला में और सूरज कोदेउ छुड़ाय । हैं निरसंखी देवो वारो सूरज हा छोड़ दयो जाय ॥ जाय के पहुंचत है बंगला में निधरक बैठो उदयसिं राय । दुचि तो करके तब ऊदनि पे लुहिया जार दिये डरवाय । एक वे के धावा करिके लये ऊदनि के डंड बंधाय ॥ डंड बांधि के तब ऊदनि और खम्भा सों दियो बंधाय । बांसनि मार दई राजा ने ऐंढ़िन खा

फूलि रहि जाय॥ पांय ते मारें चुटियै जावे चुटिया लै पांयत कढ़ि जाय॥ छुटें पिचकारी सी लोहू की बोंटी उड़ें मास की जाय। धनि निरसंखी देवै वारो मुख से हाय करें ना राम॥ मन्त्री बोलत है राजा सों नीति विरोध भलो ना काम। जी सों मारो जिन ऊदनि को जाइ दाहक में देव डराय॥ हाथ हथकड़ी पाइन वेड़ी गुधिया तौक दयो डरवाय॥ नह में फांसें धरि ठुकवाई गरजै कहै लहुरवा क्यार॥ जा मरदूमी कछु नाहीं है जो धोखे में लयो वंधाय। धोके के फल तुम भोगोगे नेकी भोगो लहुरवा क्यार। घोड़ा वेंदुला मेरो दे देउ अरु दे देउ ढाल तलवार॥ जितने छत्री हैं कामरि में एक ही संग गहैं हतियार। लौ मैं बेटा देवै वारो नहिं देवै के दूध हराम। विना घाव को एक हू कढ़ि जाय सो हुय लागे बाप समान। अकिले मेरे मरि जाने से ना होय नाठि महोवे क्यार। आखिर दादा वीर मलहारी कहु दिन सुनि है ददा हमार॥ खोदि हवेली खाइन डारे कारे दी हैं पखा कराय॥ घर २ रड़ि-या कांउर करि हैं एक रंड़पुरा दी हैं वसवाय। दुनियां जानति हैं मलिखे की जो रन बाघु महोवे क्यार। कौन सूरमा जा धरती पै जो करि समर पार हुय जाय॥

जवाब ऊदनि को कुड़रिया।

कठिन सेल मलिखान की सूर सकै को डाटि। सिर कटि धर कटि धरा धसि जाय शेष सिर चाटि॥ जाय शेष सिर चाटि काल की नाहीं शंका। करि २ धावै रोश करै सूरन के फंका॥ गावत टीकाराम कामरू जमन की झंका। दी हैं किला फुकाय कपिन जो फूंकी लंका॥

छन्द आल्हा।

जरिके राजा बोलन लागे जाहि दाहक में देव डराय। दुइसै स्वानन के पहिरा में और ऊभे में दियो डराय॥ कारे नाग नौन लय खारी सो ऊभे में दये भराय॥ पहिरा विकट करे सुहरा पै सौ मन की दई सिला धराय कारे नाग जाय ऊभे में ऊदनि भये विछौना जाय। खारी नौन भयो तहं मिसुरी है औतार महोवे क्यार। कौन मरैया है ऊदनि को जो करतार वचावन हार। हियां की बातें हियीं रहिगईं अब कुसमा की सुनो हवाल

जो है बांदी उन कुसमा की यां सिव लखी हकीकत जाय । रोवति आव-
ति आंसू डारति आरति करति किंकरी क्यार । गौने तुम्हारे को आओ
तो पठवाओ तौ कंथ तुम्हार । करि घटिआई पिता तुम्हारे बंगला खूब
बजी तलवारि । हुय हज़ार के जाय भेले में ऊदनि विषम करी तलवारि
कसा न काटौ काहू छत्री को और सूरज लई क़ैद कराय । करि घटियाई
कामसाह ने लोहे जाल लयौ बंधवाय । बेड़ी मार दई राजा ने फरू दा-
हक में दियो डराय । इतनी सुनि के हिलकी भरि के रोय के गिरी भूमि
भहराय । हाथ पटक दये हैं धरती पै चुरियां छार २ हुय जांय । हिलकी
भरि २ रोवे जर २ आंसू बहत पनारिन जाय । काजर बहि २ सारी रंगि २
चुनरी स्याह बरन हुय जाय । आय मूर्छा गई कुसमा को निकरे हाय २
मुख हाय । चारि घरी में जब चेतति है तब बांदी को दियो जबाव । कौन
वे जाहक में देवर हैं जो वे देव कुंवरिके लाल । किले पिछारू जो दाहक
है ताहीमें डरे लहुरवाक्यार । करे त्यारी जब दाहककी बेटी जौन बुंदेला
क्यार ॥ कोमलरूप उमर है थोरी बेटी जौन कमरिहाक्यार ॥ ताते ततैहा
पानीकरिके केसरकरौ उबटनौंजाय सात सखी जाकेलरवाधोवें चौदह मांग स-
म्हारेंजाय पंचिघांघरो धुरदसिवाको गोटालगो सुनहरीक्यार।सांपकेंचुलीकी
चादरि है चोली कीम खांपकी क्यार । अतर गुलाब परे पटियन में लपटें
छुटति सुगंधिन क्यार । मांग भरावति है मोतिन सों बिच सिंधूर लेति
भरवाय । कड़े के ऊपर छड़े विराजें और झांझन की अधिक बहार ॥ कौल
लौटि दई है गूजरि की पाइल झनन २ झंनकार । आगे अगेली पाछे प-
छेली बीच बंगली लई दवाय । बांह वरा बाजूबन्द पहिरें महिंदी कर
में लई रचाय । गोरी २ वहियां हरी २ चुरियां जो मनहार गई
पहिराय । दसहू अंगुरिन दसो अंगुरियां दसौ मुदरियां छल्ला
छाप और इंगुठान ॥ दवे पोरुआ हैं पोरन में रोमा तीन २ ठहनाय ॥
दुलरीं ऊपर तिलरीं सोहे ऊपर चम्पकलिन को हार । हियरां हार
गुथी संग वारो माथे खौर सोवरन क्यार ॥ माथे तिलक तिलक
पै बेंदी बूंदा धरत सरग फटि जाय ॥ बड़ि २ अखियां सुरमा दै के
काजर रेख लगावे जाय । ऐंचि मुदरिया दई कम्मरि की अंगुरी बरन
हाय तैयार । उठे पड़ी सी गिरे छड़ी सी जड़ी खड़ी सी मनौ सुनार ॥
चावे वीरा मन मुख हीरा मानौ दामिन को उजियार ॥ धीरी हसनि म-
न्द मुसक्यावन ॥ मोहन चित्त मुनीश्वर क्यार ॥ थार सोवरन को लेलीनों
सिन्नी धरी थार में जाय ॥ अब कल नाहीं है कुसमा को रहि २ लेत उ-

सासें जाय । जाय के पहुंच गई ऊमे पै वेटी जोन बघेलें कियार । बजुर पहिनिया को सरकावे मीठे बोल रही दरसाय । कुसमा टेरत है ऊमे में सुनियो देव कुवरिके लाल ॥ जियत होउ जो तुम दाहक में तौ बांदी को देव जवाब ॥ रेशम रसरीकौ कांसतिहों ऊपर कढ़ौ लहुरवा कियार । कान अवाज परी ऊदनि के गरजत देशराज को लाल । क्यों रे राजा कमरू वाले क्यों दाहक में रहो बताय ॥ तू मति जाने ऊदनि मरिगये जिंदा अभै उदयचंद लाल । घर २ रड़िया कांउर हुय जाय तौ छाती को डाहु मिटाय । सुनि २ बानी कुसमा रानी जानी ज़ियत लहुरवा क्यार ॥ मीठी बानी परम स्यानी रानी कुसमा लगी बतान । निकरो देवर जा दाहक सौ और कनवज को देउं पठाय । मात पिता की मैं भय त्यागी त्यागी लोक लाज संसार । मेरे पीछे तुम दुख पाये मैं हों चेरी दिवर तुम्हार जियत ज़िन्दगी को तन सौंपति जो पति सौंपो सीस हमार ॥

जबाव कुसमा ॥ सवैया ॥

खान तजी और पान तजी कुल कानि तजी हम मात पिता की । भूषन बसन सभी हम छोड़े मात पिता घर छोड़ चुकी हूं ॥ प्रीति के वान लगे तन में बदनामी के बीज मैं बोय चुकी हूं । चित्त लगो तुम्हरे जी सों जिंदगानी से हाथ मैं धोय चुकी हूं । प्रीतम ने पगिया पलटी पर मैं तुम सौ जियरा पलटी हूं । लाख चवाय करे कोऊ पर होनी हतो सो होई चुकी है । स्याम विना स्यामा सजनी जो दरशन को वन २ भटकी हैं ॥ प्रेम लखी जो सखी हरि ने फिर दौरि के वांह हरी पकरी है । टीकाराम वनाय कहैं सतुजा विरही कुसमा नगरी है ॥

जवाब ऊदनि को कुसमासों ॥

दोहा—सुनि कुसमा की बात कों ऊदनि लगे बतान ।
धनि सतधारी सूरमा बोलत मात समान ॥

सवैया ।

श्री सूर्य प्रकाश भयो जब हीं तब चन्द्रप्रकाश लखाय परैना । जब शब्द सुनाय परै रण को तब मत्त गयन्दै दिखाय परैना ॥ पुनि सूर सिंगार करै हरि को तब नारि सिंगार पै ध्यान धरैना । है बात यही समरत्थन की पर भावी टरै पर बात टरैना ॥

छन्द आल्हा ।

ऊदनि बोलतु है कुसमासों बेटी सुनों बुदेला क्यार । टरिजा हटिजा कुसमा रानी तू मुंह कहां दिखायो आय ॥ तू है बेटी कुल की हेटी बेटी जौन बुदेला क्यार । तेरो भाई है अन्याई गंगा खाई संग हमार ॥ घटिहा राजा की बेटी है जाकै चलै घाट की नाव । बिनती करि २ आंसू भरि २ करि २ कैरन रही पुकारि ॥ मैं हों चेरी देवर तेरी मेरी मानौं लहुरवा क्यार । आखरि जैं हैं हम कनवज कों देबैं दैंय तायने जाय ॥ दैंय तायनो देवैं फुलवा तौ हुयजांय जिन्दगी ख़्वार । तासों देवर समझावति हों ऊभेतें कढ़ो उदैसिंहराय ॥ जादाहक सों देवर निकरो चाहों तहां जाउ लहुरवा क्यार । ऊदनि बोलतु है कुसमासों बेटी सुनों बुदेला क्यार ॥ तिरियन काढ़े जो हम कढ़ि हैं जग में हुयजाय हसी हमार । तिलका रानी बोलन मारैं ठट्ठा करैं कनौजी राय ॥ बिगरि जिन्दगी जाय दुनियां में रन में झूंठी परै तलवार ॥ जा दिन दादा मेरो आवै कांवर बांधि आवै तलवार ॥ ता दिन कढ़ि हैं जा दाहक सें चाहों गलि २ कैं मरजाय । सतसों बोलें झूठ न बोलें तौलें धर्म सनातन क्यार ॥ परधन कों पाथर कर जाने परत्रिय जानें मात समान । चोरी चोरा जो हम निकरें का फल भयो जिन्दगी क्यार ॥ जा जीतवसों मरिबो बहतर यातीमें खुआरी भई हमार । बिना कसूरै जे दुख भोगत नीके रहैं कनौजी राय ॥ खूब निभाई उन लाखन ने पगिया पलटि उलटि दई भूमि । तुम तौ आखिर कनवज जै हो ऊदन मरे बिदेशैं आय ॥ कबहूं याद हमारी करकें पतिसों कहियो बन्दिगी हमार ॥

जवाब ऊदनि को सवैया ॥

ऊदनि ज्वाब दयो कुसमें करजोरि कहैं आंसू दृगजारी । जीवत ना मिलि हैं हम कों सुनमा भौजी देवै महतारी ॥ भारी मार दई नृपने कछु जीवन की नहिं आस हमारी । मित्र कनौजी सों जाय कहो कुसमा भौजी जैराम हमारी ॥

जवाब कुसमा को—सवैया ॥

चाहैं महोवेकों लै चलियो और चाहैं करो अपनी घरवारी । मैं तनु

सौं पिचुकी तुम को सोचहुं धरि वैंचो वैठ वजारी ॥ हमरे कारन दुःख सहे हम चेरी वनी विन दाम तुम्हारी । अपने प्रान तजौं पहिलें चाहों पाछेंतें जायगी जान तुम्हारी ॥

छन्द आल्हा ॥

इतनी सुनकें ऊदनि जरिगयो गरजन लगे उदैसिंहराय । पाप की बातें अब ना कहियो कुसमा लगो धरम की माय ॥ इतनी नेकी जौ बन आवै तौ करलीजो संग हमार । चिट्ठी भेज देव रिज गिर कों जो चढ़ि आवें ददा हमार ॥ जवतक दादा ना चढ़ि आवें हम ना कढ़ैं पद्मिनी नारि । निश्चय जानी तब कुसमा ने क्षत्रीवंश बनाफर लाल ॥ सत के अ-गरे महुवे बारे हैं खिरमौर सूरमनि कयार । धन्नि सराहत कुसमा चलभई और अटवा पर पहुंची जाय ॥ कैसें पाती रिजगिर भेजों को पाती कों देय लगाय । रोय २ विलखति रहि २ सोचति रोवति लखी सुअनै आय ॥ सुअना वोलतु है कुसमासौं पाती हम दी हैं पठवाय । आओ भरोसी तब कुसमा को पाती लिखति पद्मिनी नारि ॥

अथ चौथा खंड ॥

अब कुसमा ने चिट्ठी सुआ के गले में बांधकर रिजगिर कों भेजी—आल्हा के पास ॥

कागज लैकें कलपी वालो पाती लिखै पद्मिनी नारि । सिद्धि श्री सरनामा लिखिकें और आल्हाको रामजुहार ॥ तुम्हैं मुनासिब जा नाहीं थी अकिले पठये उदैचन्दलाल । कर घटिआई ददा हमारे । दाहक डारे विरन तुम्हार ॥ भारी मार दई राजा ने नहुं २ डारी देह टुराय । देर करोगे जो आवन में जियत न मिलैं सहोदर भाय ॥ कोखि के भाई जो मरिजाई टूटै बांह बनाफर राय । थोड़ी लिखी बहुत कर जानों जल्दी बांधि आवो तलवार ॥ करो लिफाफा कुसमा रानी सुआ गलेमें दयो बं-धाय । सूधि वताय दई रिजगिरकी और सुअना कों दयो उड़ाय ॥ करुणा कर २ ऊदनि विलखै ऊभें छांड़ि २ डड़कार । दीन दयाला हे कृपाला और आला है नोम तुम्हार ॥ देवकीनन्दन हे जगवन्दन फन्दन काटन नाम तुम्हार । कहा पाप हमने प्रभु कीनो दीनो दुःख श्री भगवान ॥ विना कसूरै जे दुःख भोगे जल्दी खबरि लेउ भगवान । विना अन्न अरु विन पानी

के भड़कत फिरत लहुरवा क्यार ॥ होती देवै देती भोजन सुनमा भौजी नीर पियाउ । फुलवा रानी परम स्यानी पंखा दीजो नेक कराय ॥ नस २ दूखन विलखत भड़कत रोवत कहात उदयसिंहराय । बिन दादा आल्हा के मेरी कोऊ पीर सुनइया नाहिं ॥ विना बरौना हाय बन्दलके को भोजन कों जाय लिवाय । हे जग स्वामी अन्तर्यामी सुन मैं दीजो स्वप्न कराय ॥ ऐसी वानी अरु दुःख सानी स्वप्नो भयो देवला माय । भोजन मांगन देवै जागत भागत नीर भवज पै जाय ॥ बिलखत बोलत हैं आल्हासें नस २ दूखत देह हमार ॥ स्वप्नो देखत सुनमा जागत भाजत गिरी सासु पै जाय । रोय २ कें पानी मोपै मांगो राति उदयचन्दलाल ॥ जब तक देखों ना देवरकों तवतक खाना मोय हराम । देवय बोलति है बहुअरि सों भोजन मांगे लहुरवा क्यार ॥ कहुं भारी आपदा मेरे लालन पै आफति परी विदेशै जाय । आंसू भरि २ रोवैं जर २ किन घर समरु ठान दयो जाय ॥ आलहू आय नवे डोढ़िन में सपनो कहात वनाफर क्यार । सपनो देखो है फुलवाने सोवत लखो पिया निज पास ॥

कुड़रिया ॥

सपना तोहि मराय हौं करत कलेजा हूक । सोवत है तब दो जनें जब जागत तब एक ॥ जब जागत तब एक नींद नयनों नहिं आवै । तलफत बीती रैन पिया मोय रोय सुनावें ॥ कह गिरिधर कविराय रात घन देखत सपना । सौ सौ कही बनाय होय नहिं सपना अपना ॥

जवाब सपना ।

सपना कहै पुकारिकें क्यों मरवावो मोय ॥ असी कोस तेरे पी फसे रात मिलाये सोय । रात मिलाये सोय रात पिय संग ही में सोवें ॥ तेरी पिये सुनाय पिया की तोय सुनावें । कहि गिरधर कविराय चलत नेकी पै सपना ॥ नेकी में मारे जांय कहै फुलवासों सपना ॥

छन्द आल्हा ॥

करी तलासी तब ऊदनि की कै सैयद संग गयो लिवाय ॥ भोर होत खन दिवला मैया अरु अन्टा पर रही निहार । सुआ उड़ानो है कांउरसे अरु रिजगिर को सूध लगाय ॥ रात दिना के अब धावा में पहुंचो रिजगिर के ढिंग जाय । नुनि आल्हा के सतखण्डा पै वैठो सुआ पद्मिनी

क्यार ॥ नित उठ देवै बाट निहारे कब घर आवैं लला हमार ॥ बुरी आत्मा महतारी की खाओ फिरत फेकरां क्यार । सुअना देखत खन देवै ने टेरो हाथ बैठगयो आय ॥ पाती देखी जब देवयने वांचन लगी देवला माय । आधी पाती वांच न पाई छज्जंय गिरी तड़ाका खाय ॥ मूड़ मारि दयो मुड़गारीसों दांतन पहुंचो लगी चवान । हाय मेरे बेटा हाय मेरे बेटा बेटा कहां भाकसी जाय ॥ हाय मेरे छैया कुंअर कन्हैया मैया तेरी रही विलखाय ॥ फटिजा धरती जा रिजगिर में सब दुःख लैकें जांउ समाय ॥ जो तूं जिन्दा होय दुनियां में गोदी खेल माय की आय । तेरी जननी हाय रोवत है रासौ कहां मचावौ जाय ॥ सुनत रोवनो देवैजू को जो हैं वहू देवला क्यार । दोनों वहुयें सुनमाजूकी सबने छांड़िदई डड़कार ॥ कौआ रोरो है रिजगिर में मानो सियाहरन हुइ जाय । खबरें पांई सुनि आल्हाने पहुंचे सीस महल में जाय ॥ ढेवहू आयगयो महलन में संग ही कुंवर परी ना लाल । वांची पाती कुसमा वाली सबने छांड़ि दई डड़कार ॥ हाय मेरे भैया पार लगैया दइया कहें वनाफरराय । तेरी दमनों नगर महोवो आठौ किला कलींजर क्यार ॥ तेरी दमनों हम कनवज में मोजें करैं वनाफरराय । महुवे के भाजे कनवज आये अब हम कौन देश भजि जांय ॥ विना वैंदुला के चढ़वैया नैया कौन लगावे पार । कौन बूझि है तुन्हि आल्हा कों रहते कौन गली में जाय ॥ जा कनवजकी हाय गलियन में हम माठा के मोल विकांय । सब परिवार मिलै दुनियां में एक ना मिलत कोखि को भाइ ॥ किन के मरगयें दुख उपजतु है किन के मरैं भरम परि जाय । किनके मरगयें शोक होत है किनके मरैं घाय हुइजांय ॥ किनके मरगये लता छूटती किन के मरैं छुटै ससुरार । किन के मरगये गांउ पाक होंय किन के मरैं छुटैं जंजाल ॥ किन के मरगये शोच होत है किन के मरैं खुशी हुइजाय । किन के मरगये घर विगड़तु है किन के मरैं देश लुटिजांय ॥

जवाब ॥

माता के मरगयें दुःख उपजतु है पिता के मरत भरम हुय जाय । हितूके मरगये शोक होत है पुत्तर मरै घाय हुयजांय ॥ वहिनके मरगयें

लता छूटतो सारे मरैं छुटै ससुरार। चुगिल के मरगये गांव पाक होंय बैरी मरैं छुटत जंजाल ॥ दोस्त मरगये शोच होत हैं सौति के मरैं खुशी हुयजाय। तिरिया मरगये घर विगड़त है भाई मरत देश छुटि जांय ॥

अथ कुड़रिया ॥

फुलवा सूखी फूलनौ बिलखति रोवत धाय। काजर बहि साड़ी रंगी श्याह वरन हुइ जाय। स्याह वरन हुयजाय। चुरी धर पटकत शिलपर। नौबत शिर के केश पांय के कोरति नूपुर ॥ गावत टीकाराम कौन शिर मारत फुलवा। पीतम २ रटत कहै सुख हरि २ फुलवा ॥ २ ॥

छन्द आल्हा ॥

सुनमा रानी बोलन लागी स्वामी मानों कही हमार। रोयेंतें कछु हाथ न आवै जल्दी करी त्यारी जाय ॥ देर करनको मौका नाहीं कांवर राज महिरियन क्यार। विपता भारी है देवरपै ऐसे जीतवको धिरकार ॥ जितने घरौआ हैं महुवे के औरं सब तिरियां होंय त्यार। देवै सुनमा फुलवा साजै सबु रनवास होत तैयार ॥ आल्हा बोलत हैं ढेवासों जल्दी फौज करो तैयार। हम जाते हैं वा कनवजकों देखैं जयचन्द को दरबार ॥ घोड़ा पपीहा पै बन बैठे कर में नगिन गहैं तलवार। चार घड़ी के जाय अरसा में पहुंचो जयचंद के दरबार ॥ नगिन सिरोही लखि आल्हा की छत्री अगल वगल हुय जांय। सन्मुख पहुंचो जाय बंगला में गुस्सा रहो देह में छाय ॥ नगिन सिरोही आल्हा लैकैं सो धरिदई थौंद पै जाय ॥ पहिले हनो तुम्हैं बंगला में पाछैं हनों कनौजीराय। पाती लैकैं कुसमा वाली सो राजा को दई गहाय ॥ जा घटियाई तुम ने कीनी ऊदनि कैद दयो करवाय। कंपि पैंडरी गईं राजा की धधका भयो कलेजा जाय ॥ हाथ जोरकैं राजा वोले जेठे देव कुंवरि के लाल। फौज कटीली मेरी लै जाउ और लाखन लेउ संग लिआय। क़ैद छुड़ाय लेउ ऊदनि को गौनो लेउ कुसमदेव क्यार ॥ चारो राजा गांजर वाले बारह कुंवर बरोधा क्यार। होत त्यारी है लाखन की डंका वजो गोल में जाय ॥ घोड़न वाले घोड़न चढ़गये वांको हाथिन पै असवार। तीन लाखसों लाखन साजे एकसों सजे बनाफरराय ॥ झंडा निकरो दरियाइन को जासों नगिन झकोरा खाय। चारि लाख को डंका वाजो धरती थहर २ थहराय। देवता हाले स्वर्ग

लोक में नीचे शेश रहे दहलाय । सुमिरन करि कै जगदम्बा को और ईश्वर के चरन मनाय । कूंच बोलि दयो है कनवज से अब कांउर की सूध लगाय ॥ आठ दिना की मजलिस करिके कांमरि धुरो दवायो जाय । बाही डांग में सैयद मेले गौने को गये थे कनौजी क्यार । डंको बाजो अब आल्हा को सैयद चौंकि २ रहि जांय । सैयद जानी अपने मन में काहू घेरी फौज हमार । तोपें चढ़ाय दई चरखिन पै वैंड़ा फौजें दई लगाय ॥ लखौ सिपाही इक कनवज को तकमा लखो कनौजी क्यार ॥ बढ़िके सैयद बोलन लागे तब हरिकारा लगो बतान । चारि लाख सों आल्हा आये कांवर बांधि आये तलवारि ॥ खाय सनाको तब सैयद गये आल्हे मिले अगारू जाय । कैसे आल्हा कांमरि आये रहि २ मेरो प्रान घबराय ॥ पाती लै के कुसमा वाली सो सैयद को दई गहाय । पाती बांचत परलय हुय गई सैयद गिरे भूमि भहराय । तम्बू लागि गये तब आल्हा के डांगन लागे उरद बजार ॥ लगी बजरिया हैं तेगन की और ढ़ालन के लगे वजार । चारि मील के चौगिरदा में तम्बू लगे बनाफर क्यार बीच में डोढ़ी हैं रानिन की पहिरा विकट तिलंगन क्यार । रैनि बीति गई है कावर में भोर ही जगे बनाफर क्यार । तब समझावत हैं सैय्यद को पुरवा बनरस के सरदार । तुमरी सलाह न साढ़ी मारी बढ़ि २ राव करे बिचमार । कहा सलाह है बगला में जासों छुटे उदयसिंह लाल । देर करन को मौका नाही दुख में परे लहुरवा भाय ॥ तब सैयद समझावन लागे आल्हा मण्डरीक औतार ॥ पहिले काढ़ि लेउ ऊदनि को पीछे बजै ढाल तलवार । नटरा बनिके कांमरि चलियो मागो कामशाह दरवार ॥ जो २ कहि दई है सैयद ने सो सब करी बनाफर राय । जादू के पहिरा कामशाह ने जो पहिले से दये बिठाय । तीन दिना नित घूमत बीते पहिरा पै ठाड़ी कमिक्षा माय । राह न पाई जब कांमर को आल्हा जी लागे घबड़ान ॥ तब फिर सैयद बोलन लागे जेठे पूत देवला क्यार । पहिले पूजों देवी कमक्षा फिर कांउर को करो प्यान । सिबरे चलि भये तब तम्बुन को पहुंचे तम्बुन में तब जाय । जितने परीआ ते आल्हा के और सब संग लयो रनवास । लोंग धूप मलियागिर चन्दन सब साकिल्लु लयो संगवाय । कूच बोलि दयो है तम्बून से पहुंचे मठी कमिक्षा क्यार ।

होम कराय दयौ देवी को आल्हा हाथ बांधि रहिजांय। हम पै देवी दाहीं हुय जाव जल्दी मिलै लहुरहा भाय। जीत हमारी होय कांमरि में डोला लेयं पद्मिनी क्यार। इतने कारज मेरे हुय जांय जे जै बोलें बनाफर राय। आभा बोली महारानी की सांची मानो बनाफर राय॥ जन्म बीति जाय जा कांमरि में चाहो दिन रात। गहौ तलवारि। फतै न पाओ काहू हालति सों सेवक भारी कमरिहा राव। शीश चढ़ाय देव इन्दल को तो मैं दी हों फतै कराय॥ नहिं आस छोड़ि के वा ऊदनि की हारी करौ बनाफर राय। आस छोड़ि के तुम गौने की ओर भाजन कौ करौ विचार। खपरा भरि दय निज सुत बधि कै हंसि के शीश देव चढ़वाय॥

जवाब दुर्गा को कुड़रिया।

ऊदनि से मिलना चहै जो चाहे संग्राम। तो इंदल को काटि सर चिन्ता मिटै तमाम॥ चिन्ता मिटै तमाम खून भर खपरा मेरो। सुत को देउ चढ़ाय मिलैगा भइया तेरो॥ गावत टीकाराम भरै ना खपरा मेरो॥ तजौ भ्रात की आस पुत्र लय भाज सवेरो॥

जवाब आल्हा का कुड़रिया।

इंदल सुत के शीश पर उठै न मेरो हाथ। अपनो सिर देंव काटि कै ये जगदम्बा मात॥ हे जगदम्बा मात बकसि दे लालन मेरो। अपनो सिर देउ काटि भरौ मा खपरा तेरो॥ गावत टीकाराम नहीं दो चार इन्दल हैं॥ मोहि नहीं अख्तियार पूछ सुनमा से लें हैं॥

जवाब आल्हा को सुनमा सों कुड़रिया।

अम्बा के सुनि बचन को थर २ कंपे गात। शोक सिंधु की लहर में उछरत बूढ़त जात॥ उछरत बूढ़त जात॥ सुनौ मम प्राण प्यारी। इन्दल बदले मिलै दिवर तेरो औतारी। उत ऊदनि सुनि मरे नैक ना करे विलंबा॥ इत इन्दल को खाय प्रान प्यारी जगदम्बा॥

जवाब सुनमा को कुड़रिया।

क्या पूछौ हम से पिया है तुम को अख्तियार। हुक्म करौ तो प्राणपति देंव निज शीश उतारि। देंव निज शीश उतारि नारि मैं बालम तेरी॥ बचन पलट जिन होउ यही है मर्जी मेरी॥ गावत टीकाराम कुंवर सिर काटो हंसिके॥ साको जग में चलै बन्धु छूटै बन्धन से॥

दोहा—क्या मर्जी है लाल की सो तो पूछौ नारि ।
नाहक मेरे हाथ क्यों दिये देत तलवारि ॥

जवाब सुनमा को इन्दल से ।

कुंवर बचन तेरे पिता गये हारि कर आज । लाज धरम रख लीजिये हाथ तेरे है लाज ॥ तेरे सिर टूटो कुंवर आय अचानक काल ॥ लाज बनाकर राखियो धरम न तजियो लाल । धरम न तजियो लाल काल तेरे सिर पै आओ ॥ होय बनाफर विजय चचा की बंदि छुड़ाओ । अब अटकी है बात आय लालन सिर तेरे । सत्यलोक होय वास बनौ दुर्गा के चेरे ॥

जवाब इन्दल को कुड़रिया ॥

चाचा को छुटवाइये क्यों दुख पाओ तात । काटो मेरे शीश को लेउ सिरोही हाथ ॥ लेउ सिरोही हाथ तात मत देर लगाओ । जल्दी से सिर काटि खप्पर देवी भरवाओ ॥ कुरमा पावै दुःख धिरक है जीवन मोको । मंगल सब मिल कहौ भेंट मोहिं करि देवी को ॥ छन्द ॥

तुम हाथ में तलवारि है । इन्दल के नहीं इनकार ॥ कीजै पिता जी वार है । आगे तुम्हारे नार है ॥ पल २ कटै भारी पिता ग्रीवा मेरी खंजर धरौ । जल्दी मेरा सिर काट कर भगवती को राजी करौ । पावै सब कुटुम दुःख मेरो जीवनो जग धूर है । ऊदनि चचाहित पिता जी मरना मुझे मंजूर है । कहिये हमारी मात से मंगल के गीत गवाइये । सब बोलि जय सिर हमारो अम्बा की भेंट चढ़ाइये ॥

अथ छन्द आल्हा ॥

हिलकी भरि लई है आल्हा ने और जल रहौ नैन में छाय । आंसू भरि लये हैं सुनमा ने और जल कोर २ हुय जाय ॥ लोटति पोटति देवै विलखति का दुख दये श्री भगवान ॥ आज आपदा है आल्हा पै क़ैद में परे लहुरवा भाय । अकिले इन्दल हैं आल्हा के सुनमा होति निपूती आइ । आल्हा ठाड़े मनमें रोवें तब सुनमाने दियो जवाब॥ मोह छांड़िकै अब इन्दल कौ स्वामी जल्दी करौ हलाल॥ नहिं तेगा अपनो हमको दैदेव में बेटा को दैंव चढ़ाय ॥ मैंने ज्याओ बहु दुख पाओ मैंने झेले दुःख अपार । मैंही काटों सिर बेटा को करि देंउ भेंट अम्बिका माय ॥

जवाब दुर्गा का ।दोहा।

माता को सुत से सुता होती प्राण अधार। वेटीसे अति पुत्र पर रहे पिता को प्यार॥ छन्द आल्हा॥

मात पिता दोनों ठाढ़े हैं मन २ करि रहे सोच विचार। आंसू बढ़ि के इंदल वोले चाचा मेरे बनाफर राय। यही अरज है निज जननी सों चाची जौन फुलमती माइ। मोह त्यागि के अब इन्दल को चाचा में लेव चित्त लगाय॥ तुम जा जनियो मन अपनेमें जनमें नहीं परउनेलाल॥ सिला लौटि लेउ तुम छाती पै वज्जुर हिरदो लेव कराय। तिरियां मरिजांय तिरियां मिलजांय पुत्र बहुत होवे संसार॥ कोखिको भाई कहुंना मिलि है चाहौ ढूढ़ौ सब संसार॥ मेरे जीवत चचा समारो सो का झेलै दुःख अपार। नालति मेरे जा जीवलि को चोला राखन को धरकार॥ पूत कपूत होत जो घर में सो घर जानौ नर्क समान॥ एक तो आज्ञा मात पिता की चाचा चाची कौ उपकार। तीजे करज है लाखनि को चौथे देवी को आहार॥ धनि २ आजु घड़ी मेरी है वारो मिलत पदारथ आय॥ नाम अमर दुनियां में हुइ जाय कीरत चली अगारू जाय। माया मोह छोड़ दुनियां को म्यान से खैंचि लई तरवार॥ दै परिकरमा महारानी को छूवैं चरन बनाफर वयार। चरन लागि के निज जननी के सब घरकिन कों सीस नवाय। मन में धरिके नारायन को और धरती को माथ झुकाय॥ नगिन सिरोही हो निरमोही खोई आस खास परवार॥

अब इंदल को शीश चढ़ानो देवी कमिक्षा को॥

कुड़रिया—जायो दिवला माय ने धन जदन फरजंद। गायो भारत बीच में धन २ आल्हा बंध॥ धन २ आल्हा बंध बंध हित वंश नशावे। धन २ सुन मा माय गाय निज पुत्र चढ़ावे॥ गावत टीकाराम धवल दुनियां में गायो। धन २ इंदल सूर शीश निज हाथ चढ़ायो॥

छन्द आल्हा।

सर २ धर से शीस काटि के सिर देवी के परो अगार॥ अरथी जाय परी चरनन ते जां वे खड़े बनाफर राय॥ अरथी देखत खन निज सुतकी सुनमा गिरी तड़ाको खाय॥ जितनी तिरियां थी मठिया में सबने छोड़ि

दई हड़कार ॥ बुरी आत्मा मात पिता कौं नहिं डिढ़ बचे बनाफर क्यार कहा बिगारो नारायन को विपति में विपति दई करतार ॥ सैय्यद समझावैं सुनवा को धीरज बांधो बहू हमार । मोह छोड़ि के अब लालन को अरु ऊदनि को करो उपाय । तब समझावत हैं आल्हा को बेटा मेरे बनाफर लाल ॥ रोंये ते बछरा कछु ना बनि है हिम्मति बांधो लड़ैते लाल बड़ी गरीवति आधीनी सों तब सुनवा ने दिया जवाव । मोहि छोड़ि के पी इन्दल को हंसि के खपरा देव भराय । सुत को खोय धरम मति खोवो अब ऊदनि को करो उपाय । हंसि के आज्ञा दई दुर्गा ने जा तेरी विजय बनाफर लाल ॥ आज्ञा लै के महारानी की नटवा वने बनाफर राय । करि परतोषन सब तिरियन को और देवी को शीश नवाय ॥ कूंच बोलि दयौ है मठिया ते और कांउर की सूध लगाय ॥ ढोल टांगि लयौ है ताल्हा ने आल्हा बांस थाम लियौ जाय ॥ वरत टांगि लई है लाखनि ने ढेवा कला खेलि रहि जाय ॥ वस्त्र उतारे रजपूती के कंचन जेवर धरे उतारि पैंधि सलूका कसो लंगोटा ऊपर पैंधि जांगिया क्यार ॥ भेख भयानक करि नटवन को कांवर को दयो कूच कराय ॥ पहिरा हटि गये हैं जादू के भीतर शहर चले पंजिआय । बावन बजरिया बारह गुदरी बासठ नाचे उरद बजार ॥ ढोल ठोंकि दओ है ताल्हा ने डग २ आल्हा रहे पुकारि ॥ काली देवी भुइयां भैरों अब कांवर में होव सहाय । सैय्यद मियां पीर पैग़म्बर नटवा सब को करै सलाम ॥ अव्वल डंका दयौ ढोलक में धरती माता की जय बोल । दूजो डंका दयौ ढोल में और जय बोल गुसइयां क्यार ॥ तीजौ चौथौ सत्ति धरम कौ पञ्चम दाताकी जय बोल ॥ उल्टो डंका सूम नाम को खाय न खरचे करे गरूर । देत लेत में भांजी मारै ताके माथे डारो धूरि ॥ अव्वल ऊंचो हाथ उठावे ताको जानौ सायर सूर । देखि तमाशा सट कै पीछे गांडू भडुआ कायर कूर । घर २ तारे कांउर परिगये तिरियन मिलत न माना पार । नटवनि देखि महिरियां मोहीं तब सैयद ने दियो जवाव ॥ कोहू रांड़ की नजर लगेगी सैयद धूरि उतारन लाग । डरी डोकरी मोकौ देखौ ताको कोई अंदेशो नाहिं । जो जादू नटरन पै डारे तापै परे बीजली आय । बुरे चित्त सैं जो कोऊ देखै ताकौ खाय पोनिया नाग ॥ सुनि २ बानी बूढ़े नटकी सब नर नारि खुशी हुयजांय ।

कामशाह के जाय बंगला में नटवा बढ़े अगारू जाय ॥ आगू सैयद ठाढ़े हुय गये सब उनहीं को करें सलाम। धड़ २ धड़ २ ढोल बजावें सैयद जै जै रहे पुकार। बांस गाड़ि दयौ जाय बंगला में लै लई बरत बनाफर राय। कामशाह तब बोलन लागे नटवा कला देव दिखराय ॥ बढ़ि के ढेबा बोलन लागो राजा सुनियो कान लगाय। एक छोर धौरा पै बाँधौ दूजो बंगला के दरम्यिान। करै तमाशा इन्द्र जाल को पूरो खेल सिरोहिन क्यार एक नटरा चढ़ि जाय वरत पै दुसरो लौटे संग लिवाय ॥ कला देखि लेउ मेरी बंगला में तब चाहो सो देव इनाम ॥ आसमान से जो नट उतरैं जों हूर उतरत देत दिखाय ॥ ढोल ठोंक दयौ है सैयदने ढेवा चढ़ो बरतपै जाय ॥ वांस थामि लयौ है ढेवा ने नाचत चढ़त वरत पै जाय॥ कुसमा रानी के अंटा पै ढेवा करी वन्दगी जाय। कौनसे ऊभेमें ऊदनि हैं भौजी जल्दी देव बताय। आल्हा ठाढ़े हैं बंगलामें ताल्हा ढोल ठोंकि रहिंजाय॥ ऊभो दिखाय दयो है कुसमा ने पहिरा विकट तिलंगन क्यार। जाइ पछारे पहिरा वाले सो धरतीमें दये पछारि ॥ लात मारि दई बजुरसिलामें पथरा टूक २ हुय जांय। ठाढ़े ते कूदि परो ऊभे में ढूढ़त फिरत उदयचन्द क्यार ॥ धीरें २ ढ़ेवा टेरे तव ना सुनी उदयचन्द लाल ॥ आंसू भरि २ रोवै पल २ अपनी छांड़ि २ डढ़कार। तेरे कारन ऊदनि भैया मैया देवै रही पुकारि। भई निपूती सुनमा भौजीं लंघन करत बनाफर राय। चाचा सैयद सूक्ष्म स्वासा आसा लगी उदयसिंह राय। जीव हौमि के मैं ऊभे में ठाढ़े ते गिरो बनाफर लाल ॥ जियत होय जो तू दाहक में तौ जल्दी से देव जबाव। देर करैगो जो वोलन में तो मैं अपने तजत प्राण। जो कहुं सूरजमल सुनि पावें तो दौनों को करे हलाल ॥ जासों भैया अब जल्दी सों ढेवै बोल सुनइयो आय ॥

कान आवाज परी ऊदनि के सोवत चौंको उदयसिंहराय। काहे सूरज तूं दाहकमें दुश्मन का हैं रहो सताय ॥ ढेवा भैया वनके आओ तैं छल करो हमारे साथ। नहुं देही मेरी टोरी और ऊभेमें दयो डराय ॥ खाली स्वांसा मेरी बांकी है सो अब लीजै शीश कटाय। काहू दिन ईश्वर मेरी सुनि हैं दादा वांधि आवें तलवार ॥ जियत रहे तो हमसों तुमसों पहिलें ई बजै सिरोही जाय। मरगये मलखे सिरसा वाले तुम्हरी करै वंश की हानि॥

तब ढेवा समझावन लागो नाम न लीजो बुंदेला क्यार ॥ सात लाख सों दादा आये नटवा वने वनाफरराय । आल्हा ताल्हो हैं वंगला में हम चढ़ आये वरत पर आय ॥ तुम हू चलियो संग हमारे नटवा वनो लहुरवा क्यार । इतनी सुनकें तचिके बोले जो रनवाघ महोवे क्यार ॥ शरम न आई तुम को भैया नटरा वने वनाफरराय । हम तो नटरा वनि हैं नाहीं हम तो चलैं समर के साज । तुम नटवन के खेल दिखाना जाचक वनों बुंदेला क्यार । हम करैं तमाशा तलवारनको शिरपे बजै सिरोही जाय । करो तमाशा तुम वंगलामें रासा रचैं उदयसिंहराय । ढोल बजावैं चाचा सैयद वाजैं तेग वनाफरराय ॥ चोरी चोरां हम ना जइ हैं वाही तम्बु-अन के मैदान । इतनी वातें जो ना करि हो तौ ना जांय उदयसिंह-राय ॥ अभय तौ भइया नटवा वनजा वंगला लीजे भवक निकार । आंसू डारदये रनवोरा भारी घाय देह चुंचियाय । हाथ हथकड़ी पायन वेरी सो राजा ने दई डराय । बेड़ी मार दई राजा ने नहु २ डारी देह फुराय ॥ निकरन बैठन की क्या गिनती वोलत वोल गरो रुक जाय । तुम देखन में जो अटको तो सो मेरी छाती गई सिराय ॥ तोख लगाये तव ढेवाने जाना कहो उदयसिंहराय । वारह वरष की तैं उमरि में जम्वेको दयो वंश न-शाय ॥ मारी सीना लौं झीलनमें मारे मान नरेशन क्यार ॥ हाथी पछारे गढ़दिहली में मारे मान धनी चौहान । सो हाथीको तूं बल राखत भां-खत कहा उदयचंदराय ॥ ऐसी होनी तू जिन भांकै लाजै वंश वनाफर-राय । इतनी सुनके ऊदनि जरकें करकें रोश लहुरवा भाय ॥ दुख सुखकी तैं कहुना बूझी बोली की गोली दई चलाय । वोली गोलीसे जादे है अरु विन घाय पार कढ़जाय ॥ जैसें लड़का तोरैं तिनका भड़का वीर उदय-सिंहराय । पांयकी वेड़ी धरि झकझोरी हाथ मरोरी हथकड़ी हाल ॥ भरी सलानें नाहर कैसी दोनों ऊपर पहुंचो आय । दयो जांघिया है पैंधनकों और छातीसों लयो है लगाय ॥ संग लगाय लयो ऊदनिको और कुसमासों कही सुनाय । घोड़ा छुड़ाय दयो खूंटातें और लशकरकों दयो पठाय ॥ दोनों नटरा नाचत आवैं धड़ २ सैयद रहे वजाय । लखै तमासो खलकत ठाड़ी दांतन रहे अंगुरियां दाब ॥ आहु २ सब के मुख निकरी धनि २ राजा रहे मनाय । राजा वोलत हैं नटवनसों जो नटुआओ संग

तुम्हार। खेल सिरोही कछु थोड़ोसो सो वंगला में देउ दिखाउ ॥ बढ़कें ढेवा बोलन लागो राजा कामशाह महाराज। हारो थको हमारो नट है कछु थोरोसो दी हैं दिखाय॥ पूरो खेल काल लखि लीजो सिरपै वजे सिरोही जाय॥ आगू बढ़कें बोलन लागो जो रन बांध वनाफरराय॥ सैयद समकावें ऊदनि को नीचो वैठ उदयसिंहराय। तौहू ऊदनि ने ना मानी लड़पत कहात उदयसिंहराय॥ नाम न लीजै तू नटवन को नहिं सिर बजै सिरोही जाय। अबहूं हियेकी तेरी फूटी हैं सन्मुख ठाड़े सगे तुम्हार॥ अब मरदूमी है खेतन में जब सिर बजै सिरोही जाय॥

जवाब ऊदनि को—कुड़रिया॥

नट नट किसी कों कहात तूं अरे कमीना धाय। मेरो ऊदनि नाम है तेरो जमाई आय॥ तेरो जमाई आय नाम है ऊदनि मेरो। आल्हा था में वांस चचा है समधी तेरो। गावत टीकाराम बहुत क्यों बोलत अटपट॥ तब चेतोगे मूढ़ मूड़ पै बाजै खट खट॥

छन्द आल्हा॥

साचें जान लई राजा ने ठगिया देशराजके लाल। जरकें हुक्म दयो राजाने फाटक बन्ददेउ करवाय॥ मूड़ काटकें इन पाजिनके वीघन मांस देउ कयताय। डाढ़ी वार देउ ताल्हाकी आल्हा की मूंछ लेउ कटवाय॥ डंड बांधके इन लाखन को गोनो रोनों देउ कराय। अभय निकर दाहक से आयो वाहि वाही में देउ डराय॥ सूर हजारों कांवर वाले लै लै हाथ नगिन तलवार। एकवेर कें हल्ला करदयो वंगला वजन लगी तलवार॥ ढोल पटक दयो है सैयद ने खन २ निकल परी तलवार। अपने २ तेगा लैकें टूटे गोल क्षत्रियन क्यार॥ काहू मारत हैं तेगनसों काहूकें ढका देंय लगवाय। कोई २ मारे कोई २ भाजे कोई २ चढ़े अटरियन जाय॥ दौ सूरनकों जां जे पावें तिन की खुपड़ी देंय यजाय। काभै मारैं कोई विन मारें हाय पुकारें कढ़ैं प्रान। इन पांचोंने हनै पान से वाही वंगला के दरम्यान॥ मारत आवैं भाजत आवें और फाटक तें पहुंचे आय। ढक्का मारदयो है फाटक में किले को गुर्ज गिरो भहराय॥ चलभये पांचों हैं कांवरतें और लशकर में पहुंचे जाय। सुनी खबरियां जब मढ़िया कीं कैं इन्दल दयो शीश चढ़ाय॥ खाय पछाड़ गिरो वंगलामें दादा तेरो बुरो हुय जाय॥ करी निपूती सुनमा भौजी वारो लला दयो चढ़वाय। हाय

मेरो छोना लाल वरौना मोहित सीस दयो चढ़वाय॥ वदलो लैलें उ काम-शाह सों संग ही अरथी दें उ मिलाय। थोरो खून होय लालन को भूखी रही कलिका माय॥ समरु जीतलों जब वैरीसों पूरो खपरा दें उ भराय। जा गति वीवत है लशकर में अब कांवर को सुनों हवाल॥ राजा वोलत है सूरजसों काहि उदनिके लखे हवाल। फौज सज़ाय लेउ जलदीसों खेतन वांधि जाउ तलवार॥ मारि गिरावो उन वैरिनकों टटुआ टाइर लेउ छिड़ाय। डंड वांधिके उन आल्हा के ताल्हा को लेउ सीस कटाय॥ मारु डंका जल्द बजावो खेतन वांधि जाउ तलवार॥

अथ सूरज की पहिली लड़ाई।

फौजें साजति हैं सूरज की मारू डंका दयो बजाय॥ जीन धराय दये घोड़न पै हाथिन धावा दये कराय। तब ललकारो हरिकारा को जलदी मेरे सामने आउ। घर २ कहि दे मेरी कांवर में घर २ दीजो हुक्म कराय॥ गली २ में जसमल घूमैं घर २ कहत फिरत कुतवाल। कहुं घोड़न के तंग खैंचि दये कहुं २ जीन धये धरवाय॥ कोई शतरंजा कोई पचरंजा कोई २ रहिगये चोपरि माहिं। कोई सूरमा वैसे ही चलिदये अबही सैं को बांधे तलवारि॥ बहुत कूर फौजन से भजि हैं उनहीं को छीड़ उन्हें लैं मारि॥ कोई २ घोड़ा दावत आवैं कोई खड़ियन पै असवार॥ पलटन साजति है तुरकनकी नहिं मुगलन की कछू सभार॥ साजे लशकर छत्री हंसकर बढ़कर चले अगारू जांय॥ साजे फौजें करि २ मौजें गुजें करें खेत में जाय॥ बजें नगाड़ा गूजें हाढ़ा दाढ़ा धरी थोंदि पै जाय। बाजें डंका हो निरशंका वे शंका के होंय तयार॥ बाजे बाजैं छत्री गाजैं साजें सूरन के सिंगार। बाजे जुझाऊ सुनि बढ़ि चाऊ गाऊ बीरन के सिंगार॥ गाये उसाहे हैं सूरन के अब कूरन के लखो हवाल॥ सुनि २ बाजे कूरा भाजे लाजें सात साख की नास बाजत तुरही भाजत विरही घरही घुसे कोठरिन जाय। बाजत बनसुरी कसकत पसुरी ससुरी कहत नारि सौ जाय॥ बजत न फेरी दै दै फेरी मेरी टेर सुनौ करतार॥ सुनि २ डंका जी हो शंका झंका मनो पिशाचन क्यार। बाजत तांसे उठि २ खांसे मां से भाजे पीठ दिखाय॥ बाजत दपुला भाजत गपुला फफुला परे देह में जाय॥ बाजत झांझें धरि २ भाजें गाजें बीस कोस पै जाय। देखि त्यारी छूटति नारी नारी भई न्यारी जाय। जा गति बीतति है कांउर में धरती थहर २ थहराय। तीन लाख सों सूरज साजो डंका भयो गोल में जाय॥ तोपें बढ़ि गई हैं आगे

को जो खेत में दई लगाय ॥ घोड़ा हींसत हैं सड़कन पै खम २ परी हमे-
लन क्यार ॥ तेरह पलटन रंगरूटन की चौबिस तुरक पठानन क्यार।
असी सैकड़ा सांकरि वाले और बखतरिया बीस हजार ॥ कारे झंडा नीचे
परिगये झंडा लाल वरन हुय जांय ॥ धक २ धक २ करत महावत घण्टा
घनर २ घहरांय । मोर गुरैयन हाथी आवैं चारो ओरी सूंड़ि घुमायं ॥
पहिया ढुरकत हैं तोपन के कह २ करत अगिनियां बान । धरती डोलत
है बिजना लौ नीचे शेष लगे दहलान ॥ हाथी साजतु है सूरज को हौदा
धरो सोवरन क्यार ॥ सिड़ी लगाई मलियागिर की डंडा लगे सोवरन
क्यार । सूरज साजत है बंगला में मानों सिंह वनी में जाय ॥ जायके बै-
ठतु है हौदा में एक संग वाजे दये वजाय । वाजे जुझाऊ वाझन लागे
क्षत्री वीररूप हुयजांय अर रर रर नरसिंगा वाजे अरु तम्बूर तिलंगन क्यार
जे रन तुरही बोलन लागी बोले हाय २ कंडाल। माऊ डंका के वाजतखन
फौजें पडा बांधि २ रहि जाय ॥ एक वेर कै धावा धरि कै पहुंचे समर
भूमि में जाय ॥ खेत झराय दयौ सूरज ने जैती खम्भ दयौ गड़वाय ॥
बैठनि लागति है फौजनि की जोहै रीति समर मैदान ॥ पहिलै तोपैं पाछै
हाथी पाछैं सड़िया दये लगाय । तिन के पाछै घोड़ा करि दर पीछै पैदल
दई लगाय । बदोवस्त फौजन को करिके पाती लिखत सूरमा राय ॥ प-
हिले लिख दयौ है सरनामा और आल्हा को सात जुहार । जो मिलनेकी
होय सारधा तो तुम मिलो खेत में आय । जो लड़ने की होय सारधा तौ
जिन देर लगइयो आय । जितने राजा क्षत्री आये एकसंग बांधि आव त-
लवारि ॥ लैके पाती दई हरिकारा सड़िया खडुआ दये गहाय ॥ चलौ डां-
किया है सूरज कौ जहं दरवार वनाफर राय । पहिरा विकट खड़े दर्वाजे
गाजे बड़े २ सरदार । डांटि साड़िनी दई दरवाजे धामन उतर परी हर-
गाय । पहिरा वारे नै ललकारो किन की पाती देव बताय ॥ पाती लाये
हम सूरज की आल्हे ख़बर देय करवाय । तव दरवानी आगे चलिभयौ
हरिकारा को संग लिवाय । तीन कुन से तेरह मुजरा और आल्हा को
सात जुहार । काढ़ि खलीती सौ पाती को अरु धरि दई मेज पै जाय ।
काढ़ि कतन्नी सों बंधकाटे पाती पढ़ी बनाफर राय । तब आल्हा समझा-
वन लागे चाचा बनरस के सरदार ॥ सूरज आय गयौ खेतन में अपनी
बांधि आयौ तलवारि ॥ सुनत खवरियां रन खेलन की लड़कि के उठो उ-
दयसिंह राय । तुम सब बैठो लखो तमासो हम हीं बांधि जांय तलवारि

तब सैयद समझावन लागे नीचो वैठि लहुरवा क्यार ॥ नाही रावर हुय जनमें तुम नाहीं परसराम औतार ॥ देह के घाय अभे ना सुरहे आले घाय खून टपकाय । खून भरी लौ तेरी देही है चुपका वैठ बनाफर राय । डंका बाजो तब सैयद को सिगरी फौज करी तैयार ॥ नाती अठारह और नौ लड़का जिनकी चक्र धरा तलवारि । कारे बाना कारे निशाना कारेही घोड़न पै असवार । एक लाख से सैयद साजे नंगी सूझि परै तलवारि ॥ जुते अरावा हैं तोपनि के हलका हके हातियन क्यार ॥ फौजें दावि दई खेतनि की मुरचाबन्दी दई कराय ॥ डंका बाजो जब सैयद को सूरज भये सामने आय । तब सूरज के मुंह से निकरी काहे मियां बनारस क्यार ॥ काहे भावई सैयद लाई जो कांउर बांधि आये तलवारि । रड़िया दुखिया को घर जाना निधरक गही ढ़ाल तलवारि । जासों सैयद कही मानलेउ घौड़ा फेरि महोवे जाव । चारि घड़ी जो झेलो सिरोही तौहू धन्नि घरी अवतार । काम समरकौ तुमका जानौ तानो बानो लेव सम्हारि॥ कै पीजन सैयद ले लीजो रुइया धुनौ सुधारि २ । बड़ी गरीवति सों बोलत हैं जो हैं मियां बनारस क्यार । जां जां रुइया हमने धुनकी सो सुनिजीजो चित्त लगाय ॥ पहिले पहिला पीजन पूजौ वाही माड़ो के मैदान ॥ घर २ रड़िया माड़ो करि दई जम्बे की करी वंश की हानि । नैनागढ़ और परीगढ़में दिल्ली वादशाह दरवार । बावनगढ़ में हम धुनि आये कातनहारीं गईं अघांय ॥ अबके पीजन है कांउर में तुमरी धुनि हैं खूब अघाय । हमतो तुमरी रुइया धुनि हैं पौनी करै लहुरवा भाय । घर २ पौनी मलिखे दै हैं कातनवारीं जायं अघाय ॥ डंड वाधि के कामशाह के तोहि बुकरा लो करीं हलाल ।
नहिं हारी लिखदेउ समरभूमि में वहिन को डोला देउ मंगाय । आज हीं लौटयांय कनवज कों मौजें करो बुंदेलाराय ॥ तचकें सूरज वोलन लागो डोकर मीच गई नियराय । असी वरसको तू सठियानो खपरी तलक दांत एक नाहिं ॥ एक ही भालामें मरिजैहे डाढ़ी में दी हों आग लगाय । टरिजा डुकरा मेरे आगेतें तेरे गन गरें विराजे आय ॥ तचकें ज्वाव दयो सैयदने लोडें जवां साधि कहु वात । अतिकी शेखी जाहर करि है तो मुंह में ठांस देंउं तलबार ॥ वातन २ वतबड़ हुयगयो तोपन में दई आग लगाय । काहूं पैली काहूं गोला काहूं ने वत्ती दई लगाय ॥ परे दनाके हैं

तोपनके रणमें छायरहो अंधियार । अर२ अर२ गोला छूटैं भर२ गिरत गोल में जाय । काहूके रथ के पहिया उड़गये काहूके बैल गिरत भहराय । फुकति मड़ैयां सी लशकरमें चारों लंग छाय गयो अंधियार ॥ गीध मड़ैयां छावत आवैं गीधन चौंच लाल हुइजांय । जिन हाथिन में गोला लागै मनु नदिया में गिरत करार । जिनके हौदन में धरि रमकै हौदा टूंक २ हुयजांय । जा सड़िया घुड़िया में लागै चरसा चलनीनौ फटजाय । जापै दल में गोला लागे धरती रहै न सर्गै जाय । तोपैं धै धै लाल वरन भई तब लै लईं कमनियां जाय । फौंक जमावत है रोदापै सर २ वान छोड़ दये जाय । चढ़ी कमानी हुयगई पानी सो सब पाछैं दई चलाय । लैलै भाला सूर कराला लाला भाला रहे चलाय । जिनकी खुपड़ी भाला लागै खुपड़ीऔनानौ खुलिजांय । हौदा भरगये हैं लोहुनसैं और चुचियात फिरत असवार । लाल वरन जा घोड़ा हुय गये जोगी वरन बने असवार । भाला डारि दये पाछैं कों लम्बे बन्द करे हथियार । छाती जुड़गई रजपूतन की अम्बा झोर बजै तलवार । पैदलके संग पैदल अभिड़े और असवारनसों असवार ॥ सूड़ लपेटा हाथी हुय गये और हौदन में चले कटार । चलै जुनब्बी अरु अहंगरवी यूना चलत विलायत क्यार ॥ खट २ खट२ तेगा बाजै बोलै छक२ तलवार । अपनो विरानो कोऊ ना देखै सबकै मारु २ रटलाग ॥ भइया ऊपर भइया जूझत और असनाई ऊपर यार । अली २ कर और विसमिल्ला सैयद खैंचलई तलवार ॥ नाती वेटा सब सैयद के एक संग खैंचलई तलवार । एकवेरकें दवना करदई जिन धरदई लास पै लास ॥ हटे मोरचा जब सूरज के गुस्सा रहो देह में छाय । तब ललकारतु है सूरनकों कोऊ जिन धरो पिछारी पांउ ॥ पांउ पिछारूं जो कोई धरि है ताकें एक माय दुय वाप । रोस खायकें सब छत्रिन ने एक संग धावा दयो कराय ॥ हटे मोरचा तब ताल्हा के ठाढ़ा मल २कें पछताय । ठाड़े २ वा घोड़े पै पाती लिखी खेत में जाय । कठिन लड़ाई है सूरज की आल्हा फौज देउ पटवाय ॥ लै पाती हलकारा भाजो आल्हय खबर जनाई जाय । पढ़ी हकीक़त जब पाती की लड़फकें उठो उदयचन्द लाल ॥ मारू डंकाके बाजत खन सजगई तीनलाख तलवार । जितने राजा संग आये थे लाखन सहित होत तैयार । एकवेरके धावा करदयो पहुंचे समर भुम्मि मैदान ॥ अब कल नाहीं कलहा कों घोड़ी आंगू दई बढ़ाय ॥ मुह-

रा जुर गयो रनखेतन में घूमके बजन लगी तलवार। कहुं २ गोला कहुं २ गोली कहुं २ परी तीरकी मार। कहुं २ वरछी कहुं २ भाला कहुं २ नगिन चलै तलवार॥ अपने २ रोहा भरके धरके ध्यान भगवती क्यार। ऊदनि पहुंच गयो सैयदलें चाचा सावधान हुयजाउ। तुम लखो तमासो रनखेतन में मैं वैरी कों देउ गिराय। तब बल बढ़गयो है सैयदको रोहा भरत खेत में जाय। लोह लुहानो देवय वालो कसकत घाय देहमें जाय॥ वाघ दाबि लई है दांतन में दोनों हाथ गहे तलवार। वा सूरज के जाय मुहराचे अंधाधुन्धि करै तलवार॥ चार कोसके चौगिरदा में अम्बाझोर वजै तलवार। जैसें लुहिया को घन बाजे तेगा खात ठनाके जाय। जौन गेल में ऊदनि कढ़िजांय सो दल धरती देत विछाय। मूड़न बांधे मुड़े चौंतरा अरु लोथिन के अटे पहाड़॥ रुहर पनारिन वहता परगये मनु वंद फटे झील के जाय। लखो तमासो जब सूरज ने बेड़ी मार वनाफर क्यार। पाती भेजी कामशाह को जल्दी बांधि आवो तलवार॥ कठिन लड़ाई है ऊदनि की नहिं सब जै हैं काम नशाय। चलो डांकिया कामशाह पै सुनतहिं अग्निरूप हुयजांय॥ हुक्म फेरदयो सब कांवर में जलदी फौज करी तैयार। मारू डंका के बाजत खन सजगई डेढ़लाख तलवार। कूंच वोल दयो है कांवर से पहुंचे समर खेत में जाय। तब ललकार दई राजाने सूरज खवरदार हुय जाउ॥ मन में चिन्ता अब ना करियो खेलौ खूब समर मैदान। जे का जानें महुवे वाले जो मेरे घर बांधि आवे तलवार॥ एक वेरकें हल्ला करिदयो घूमके बजन लगी तलवार। दोनों फौजन को संगम है अब है सात लाख तलवार॥ कबहूं धरिके सूरज दावै मुरचा हटैं वनाफरराय। दवैं सूरमा महुवे वाले अपने २ गोल दवाय। विचलें हाथी हींसत घोड़ा वल २ करत सांड़िया जांय॥ उठैं कमंड सूर हंकारैं ऊपर भूत वजावत ताल। लै लै खपरा जोगिन आवैं लयें अप्सरा फिरैं विमान। जौन सूरमा सन्मुख जूझै ताकों इन्द्रपड़ीं लैजांय। विचलैं कुंजर रनमें धसिकर दवकर मरैं हजारों ज्वान। विचलैं सड़िया भाजैं गड़िया भडुआ भाजैं पीठ दिखाय। विचलैं घोड़े धरनी डोलै वोलैं हाय २ भगवान॥ टूटैं बागैं घोड़ा भागें आगें डारिदेंय असवार। विचलें हथिनी डोलैं धरनी करनी कहा आज भगवान। रनमें बढ़कर फेरैं सांकर दव कर मरैं हजारों ज़्वान॥ लागत गोलो हुयजाय पोला टोला सूनो

परै दिखाय । लागत गोला रहै न चोला बोला जाय स्वर्गमें जाय ॥ लागत गोली डगमग डोली बोली निकरि हलकतें जाय । लगि टकैया हाय मेरी मैया दैया मरै विदेशय जाय ॥ लागत छर्रा परिजाय भर्रा अर्रा गिरत भूमि भहराय । लागै डंडा होंय दुय खंडा गंडा खुलत गरैनी जाय ॥ लागै विछुआ उड़िजांय घुतुआ पुतुआ मरत खेत में जाय ॥

लागै पछिया खुल जाय कछिया मछिया निकरि जाय वा पार । लगै चपेटा सूर के पेटा जो अटपेटा मरत जवान ॥ लागत रगड़ा छूटत झगड़ा विगड़ा आज कहा भगवान । दावै सूरा भाजै कूरा पूरा करै समर मैदान दावै वीरा रहै न धीरा जीरा लहर२लहराय । लागैतेगा खुलिजाय भेजा नेजा निकरि जायवा पार॥लगै सिरोही होनिरमोही जोही राह स्वर्गकी जाय।लागत यूना हुयजायजूना सूनोपरो सकल संसार॥लगै सगरवी चाखत चरवी खरवी निकरि जाय वा पार ॥ लगै भुजाली जाय न खाली लाली रहै रुद्र में छाय ॥ लागै गांसी ताखै आंसी खांसी निकरि जाय वा पार ॥ लागत भाला गिर जांय लाला माला जपती सी रहि जाय ॥ लागे बरछी उड़ि जाय करसी अरथी भूमि गिरे भहराय ॥ जा गति वीतति है दंगल मैं अरु निरमोह चलै तलवारि । कोई रोवत है लड़कन को कोई२ पुरिखन को चिल्लायं । कोई २ रोवैं मृगनैनिन कौ गौनो अबहीं ल्याये कराय । ना मुख देखो हम तिरियन को ना तिरिया नै लखो हमार । पहिले सावका में आये ते अब घर हुय गयौ कोस हजार । वर्र के छतना सहुवे वाले दुशमन हाय छोड़ि मुंह खाय । अल्ला तोबा करत मुसल्ला हिन्दुन परो राम सैा काम ॥ कैसे हू खुदा हियां से काढ़े तौ हम बसें और ही गांव ॥ कोई२ छत्री मन २ सोचें जो कहुं नेक शाम हुय जाय । रस्ता छोड़ि देयं कांमरि की भजि वेहड़ को जांय बराय । कोई २ छत्री कांवरि वाले जो लोथिन में जांय छिपाय ॥ नीचे मुर्दा ऊपर मुर्दा बीच में मरी साधि रहि जांय । विचलें हाथी रनखेतन में मारे विना काल मरिजायं कोऊ २ देखत एक आंख सों सोऊ गीध काढ़ि लय जाय । लोहूभरी कोई माटी लय के रामानन्दी तिलक लगाय ॥ हमें छत्री कोऊ जिन मरौ हम अवधूत जनम के क्वार ॥ मूछ मरोरा सेखी खोरा टेरें हाय २ भगवान ॥ रोवैं टिंगरा भागे डगरा विगरा आज काम भगवान। धोती पहिनततेजो पोती जोती राह डांग की जाय । घोड़ा नचावत जे पनघट पै जे परना-

रन के लगवार। पहिले ही भाजि गये खेतन से वत्ती लगत तोप मैं जाय॥ भांग भाजिगई भंगहेरन की गांजा वाले चले बराय। तेगा बाजत खन खुपड़ी मैं तब पट खुलत अफीमन क्यार। धरे गठरिया बनियाँ भाजैं तखरी पला उरझते जांय॥ खिड़बिड़ २ रामधाई २ करि २ भाजत जात बराय। जे अधघायल रन से भाजैं भोजन करत भिड़ैया क्यार॥ कोई भाजि भाटि में बैठें निधरक खात खिड़ौआ जाय। जिन घोड़न को गिरत सिपाही घोड़ा भाजि डांग को जायं॥ फन्दें नाकैं बिचलें डाकें जाकें लौटि देयं असवार। जा गति बीतति है खेतन में अंधाधुन्धि बजे तलवारि॥ लोह लुहानौ देवय वारो भवका उठत करेजा जाय। काभै घोड़ा टापन मारत काभै दांतन जाय चवाय। काभै ढका देय खेतन मैं हाथी सेहत गिरत भहराय। हौदन २ नचत बेंदुला हौदा हज़ारों दये गिराय॥ जा कमरू के रन खेतन में खेलत चका भमर की मार। मुहर कटोरा पानी हुय गयो नहिं कहुं मिलत गिरत भहराय॥ बारह मन लोहे की सांकरि सो भुरही को दई गहाय। मदिरा भांग और आफू को सो भुरही को दयौ खवाय। फेरै सांकरि जब दंगल में हाथी संहत लपेटा खायं। एक बेर के धावा बोले बैंड़ों सूर गंजरिहा क्यार॥ कीचक दाने को जनमन है छोटे पर्वत के उनमान। हटे मोरचा जब सूरन के छत्री डारि २ तलवारि॥ मुरघनि मुरघनि सूरज बोलै लम्बी देत जातु ललकार। मानुष देही जा दुरलभ है यारो जनम न वारम्वार॥ जो तुम भाजि जाउ मुहरा से तो का जीहौ बरष हज़ार। जो मरि जैहो रनखेतन में सीधे चले स्वर्ग को जाउ॥ दय दय पानी सब ज्वानन को सब आगू को दये बढ़ाय। उसरत सूर लखे ऊदनि ने और सूरज ढिग दयौ जवाब॥ बोलत सूरज हैं ऊदनि सों लाला देव कुंवरि के लाल। दुय २ रुपयो के नौकर हैं नाहक डरि हैं मूड़ कटाय॥ हम तुम खेलैं समरभूमि में देखें किहि पै राम रिसाय। जा मन भाय गई ऊदनि के अरु सूरजको दियौ जबाब। चोट आपनी सूरज करि लेव जाहै रीति महोवे क्यार॥ चोट हमारी में ना बचि हौ अनहक बैठि स्वर्ग पछिताव। हसि के सूरज बोलन लागे कोमल रूप लहुरवा क्यार॥ चोट हमारी में ना बचि हौ देवय रोय २ मरि जाय। हसि कै ज्वाब दयौ ऊदनि ने लाला सुनो बु-

देला क्यार । वाहैं हमारी खेरी सार की करिहा सिंगा के सनमान ॥ पतरी नागिन उड़ि २ खावै पतरे कुसा पताले जांइ । हलके भारी देखे जैहो भालन डारों थोंदि फराय ॥ इतनी सुनिके बोलो तचिके रहना खबरदार हुशियार । फोंक जमावतु है रोदा पै खेंचत कान बरोबर जाय ॥ धरि २ रोदा को खेंचतु है दोंनो सुश्रा एक हुय जांय । हियरा डटिके वा ऊदनि को कैबर छोड़ि देत हरवार ॥ आवत गांसी ऊदनि देखी मुहरा ढाल रोपि दई जाय ॥ ढाल फाटि गई गैढ़ा वाली चांदी फूल गिरे भहराय ॥ बचिगयौ ऊदनि वा घोड़े पै दहिनी भई सारदा माय । छप्पन छुरियां बारह बिछुआ बगुदा बीस छोड़ि दये जाय । जोड़ी छोड़ी पथरकला की ऊपर कड़ाबीन की मार ॥ ऊपर से पिस्तौलें छोड़ीं बैंड़ा मार कदारिन क्यार । धुआं पटानों जब साम्हूं से सनमुख लखे उदयचन्द लाल । भाला तौलत है हाथनमें हुय अंगुरिन पै रहो जमाय । हुचितौ करिकै वा ऊदनके हियरा हनौ उदयसिंहराय । वारिके सरैया हैवष धारै पहेवाज खिलइया ज्वान आवत भाला को देखत है घोड़ो पेट तरे हुय जाय । ठर्रांकि भाला गिरत भूमिमें धरती भयो धमाको जाय ॥ पैली खोलि लेतु तेगाकी खननन खेंचि लई तलवारि । तानि सिरोही हनि २ मारी बचि गयौ देशराज को लाल । टूटि सिरोही गई सूरज की खाली मूठि हाथ रहि जाय ॥ मन २ सूरज सोचन लागे अपगन भुजन बिराजे आय । तंग खेंचि कै तब घोड़े को कीड़ा देत उदयसिंह राय । आसमान की अधवारन में घोड़ा पंख रहो फैलाय । आसमान में लोटें पोटैं मानों गिरह कबूतर खाय ॥ सुंम दावि लये हैं छातो सो सरन पै भरत चौकड़ी जाय । सूरज जानी ऊदनि मरिगये कै पाताल समाने जाय । एक बेर कै भरि सरांटो घोड़ा गिरो बाज सों जाय । जंग सनकी रख बैंदुल की चमको अष्ट धात की नाल । चौकि चमकि कै सूरज देखै हौदा भयो भपाको आय ॥ मारि मनावल को डारत है धारो हने गुरज बरदार । खैची सिरोही जब ऊदनि ने तब सैयद ने दियो जबाव ॥ नीति विरोध करो जिन ऊदनि नहिं सतु घटै चन्देले क्यार । हंसि के जवाब दयो ऊदनि ने चाचा बार २ बलि जावं । अब के कही तुम्हारी सिर है दुसरा हम छोड़ैंगे नाहिं । काटि भार कस दये हौदा के मारी ढका ढाल की जाय । नीचे डारि दयो सूरज की संग ही गिरे उदयचन्द लाल । पकरि मुजम्मा लये सूरजके पलरो देत लहुरवा भाय । मारो लागे मेरे यार को नहिं सिर लेतो सिरोहिन

काटि । डंड बाधि के वा सूरज के अरु आल्हा ते दयो पठाय ॥ हालत देखत रून सूरज की हाथी राजा दयो बढ़ाय । सैयद पहुंच गये राजा तें राजा लीनों मुहन बठाय ॥ सैयद वचि गये तब चोटन सें भाला लयो हाथ में जाय । भाला धमको जब हाथी कै अरु मस्तक में गयो समाय । हाथी भाजो कामशाहको और कमरू में पहुंचो जाय । तब मन्त्री समझावन लागो राजा कामशाह महराज ॥ हार जीत को कछु डर नाहीं हिम्मत बांधो बघेले राय ॥ पहिले हार जीत फिर हुय है राजा केरि गहो हथियार । छल सों बल सों बैरी मारे जा बेदनि में कही सुनाय ॥ गंगिया तेलिन अगिया धोबिन जो है जादू की सरदार । लोनै लुटकी जादू वाली सो सब संग लेव करवाय ॥ पहिले डिलाय लेव सूरज को पाछैं गहो ढाल तलवारि ॥ हारी लिखि भेजो आल्हाको और सूरज को लेउ छुड़ाय । लिखदई पाती है राजा ने और आल्हा को सात जुहार ॥ नेग होत तो जो कांवर को सो भरि पाओ बनाफर क्यार ॥ हमरी हारी है कांवर में जीते जंग बनाफर राय । जिदो कराय लेव कुसमा को सूरज दीजो क़ैद छुड़ाय ॥ जा में झूंठी जो हम बोलें अरु गंगा है बीच हमार । लिखि कै पाती दई हरिकारे सो लशकर को दई पठाय ॥ रोवत सूरज हैं खम्भा तें टुक २ देखत नजर पसारि । अब कोऊ आवे २ जो मेरी बन्दि छुड़ावो आय ॥ पिता हमारे पथरा हुय गये जो ना लीनी खबरि हमारि । तौ लों हरिकारा कामशाह कौ पहुंचो आल्हा के दरबार । पाती बाची तब आल्हा ने अरु घोंटू ते लई दबाय । पाती छीड़ी तब ऊदनि ने पढ़तई हुक्म दयो करवाय ॥ मुसक खोलिदे जा सूरजकी जा ऊदनि ने दई सुनाइ लाल्हा आल्हा तचिके बोले लाखन जी लागे झुंझलान । अरु सिंह राजा बोलन लागे हम तो जात बनाफर राय ॥ राम २ कहि के उबरे ते जाही समर भूमि मैदान । जा ऊदनि को का सूझी है जानि के कुआ गिरत अहराय ॥ प्रान हमारे का भारू हैं जो परदेश गवावें आय । बांधि २ कै तुम छोड़त हौ मानो परसराम औतार । तचि कै जवाब दयो ऊदनि ने तुम सब जाव कनौजै गांव । कालु हलेरी पै हम राखें हम सरिखे को नहीं डरांय ॥ कफ़न बांधि लयो है छाती सें हरदम मीचु रही सुरं बाय । एकदिन हमको मरने परिहै है डरने में कौन सवाद । जाय हम बांधि एक

वेर के ताहि सौ वेर लेयं बंधवाय ॥ इतनी कहिके मुश्क खोलि दई और सूरज सों कहीं सुनाय । जो कुछ इच्छा होय समर की तौ मति देर लगइयो जाय ॥ करि २ समर अफर जब जावो गौनों तब दीजो करवाय । करि कै बन्दगी सब को सूरज अपनो कूच गये करवाय ॥ सूरज पहुंचत बन राजा ने मारू डंका दयो बजाय ॥

अब सूरज की दूसरी लड़ाई जादू वगैरह वा कामशाह की ॥

जितनी तिरियों जादू वालीं सो सब लईं कमरिहा क़्यार । अपने अपने जादू लैकें सब परचंड करें तैयार ॥ एक लाखसों राजा सजिकें पहुंचो समर खेत में जाय । लिख परिमानो एक राजा ने सो आल्हा पै दयो पठाय ॥ पढ़ी हक़ीक़त जब आल्हा ने धधका भयो कलेजां जाय । कही न मानी जा ऊदनि ने सो सब आवै अभै अंगार ॥ सुनत खबरियां रन खेतन की जो रनवाध महोवे क्यार । लाखन सैयद टेवा विरसिंह एक संग बांधि लई तलवार ॥ जितनी फौजें तीं कनवज की सो खेतन में पहुंची जाय । दोनों फौजें इकमिल हो गईं घूमके बजन लगी तलवार ॥ लोह लुहामो देवै वालो अन्धाधुन्धि करै तलवार । चारो ओरी कामशाह की फौजें मार करीं खरिहान ॥ विचलत फौजें राजा देखीं तब गंगिया को दियो जवाब । तब का करिहो जा खेतन में जब हुइजैहै नाश हमार ॥ जही वैं दुला को चढ़वैया वैड़ो सूरम होवे क्यार । करि दै जादू हुइ जाय काबू काबू करिकें लेउ वंधाय ॥ लैकें पुरिया मारी गंगिया उदिया सुअना लयो बनाय ॥ लैकें पिंजरा में बैठारे वज्जुर कील ठोंकि दई जाय । साठ हाथ की लग्घी लैकें जो धौरा पै दये टंगाय ॥ क़ैद देखकें तब ऊदनि की लाखन गये सनाको खाय । यार हमारो खेतन वंधिगयो है जा जीतव कों धरकार ॥ टक्कर मारी तब भुरहीने हाथी हटो वुंदेला क्यार । दहिने गंगिया तेलन ठाड़ी पुरिया गहैं हाथ में जाय ॥ मेढ़ा बनाय लयो लाखन कों सो रसरी सों लये वंधाय । दहिने धनुआं तेली ठाड़ो वैंड़ो सूर कनौजी क्यार ॥ मालिक वांधि गयो हाय खेतन में

मेरे जीतब कों धिरकार। रिसकरि भाला लै धनुआ ने धमको कामशाह पै जाय॥ जादू फैंको तब तेलिन ने तेली बुकरा लयो बनाय। हंसिके गंगिया बोलन लागी काहे कुंवर कनौजीराय॥ लै लयो गौनो हुय गयो तौनो कैसी मिली पद्मिनी नारि। दावैं घोड़ी सैयद आवैं आंसू रहे नैन में छाय॥ मारो भाला कामशाह पै धोबिन जादू लयो उठाय। गदहा करिकैं तब सैयद कों पांइन पैंड़ दयो लगवाय॥ दहिने राजा विरसिंह आवै उन हूं कों गदहा लयो बनाय। दोनों सूर करे खर गंगियां अपनो लीनों काम बनाय॥ पैंड़ डारि दये हैं दोनों के सोटा देत पीठ फटकारि। ढेवा भाजो तब आल्हा पै दादा सुनौं बनाफर राय॥ वंशहानि मदुवे की हुयगई क़ैदी भये सूरमाराय। गंगिया तेलिन भंगिया धोविन सबरे क़ैद लये करवाय॥ सुनत खबरियां डङ्का बाजो साजी फौज बनाफर राय। सिब घर बंधगयो हमहूं मरि हैं जाही कांउर के मैदान॥ जां है हाथी कामशाह को आल्हा जाय दई ललकार। भाला धमको है हाथी कें हाथी हटो बुंदेला बयार॥ गुस्सा भरिकें कामशाह ने और गंगिया को दियो जवाब। अब का देखति है खेतनमें सनमुख बैरी करतु जवाब॥ भैरों वारी जादू लैकें आल्हा वरधा लये बनाय। नाथ डारि दई है आल्हा कें काबू करे बनाफर राय॥ जा गति करदई है सूरन की अब कोजन के सुनो हवाल। जितनी चुटकी मारैं चुकटी चुकटी देत ज्वान कंसिजाय॥ रेख उठंतो छत्री देखें ज्वानी जी में जाय समाय। सुआ परेवा तीतुर करकें हंसिके कंठ लगावैं जाय॥ जितनी तिरियां जादू वालीं खाली रहीं एकहू नाहिं। अपनो २ जैसो चाहो मनको जोड़ा लयो बनाय॥ जादू पुरिया लै गंगिया ने सो फोजनमें दई चलाय। कोई २ फौजें पथरा करदईं कोई २ हिरना दईं बनाय॥ जितने आये थे कांवर में सब की करीं खुआरी जाय। जीत नगाड़ो कामशाह को कांवर कों दयो कूंच करवाय॥ घर २ खुशी भई कांवर में घर २ परी बधाई जाय। अकिलीं कुसमाकों दुख भारी जारी नीर नैन जल छाय॥ खाय पछार गिरी धरती में चुरियां छार २ हुयजांय। मेढ़ा बुकरा दोनों लैकें सो खम्भासों दये बंधाय॥ दोनों सूरमा जङ्ग खेलैं लड़ि २ मरत कनौजीराय। विरसिंह सैयद गदहा करकें भगिया लैगई कंठ लगाय॥ नित उठि लादी धरै पीठ

पै सोटा देति पीठमें जाय । करिया जरदा खाने वाले सैयद सूखी घास चबाय ॥ सौ सौ सूर इटावन वाले बिरसिंह बंधे बैंड़यो जाय । आल्हा नाधि लये तेलिन ने सो कोल्हू में दये चलाय ॥ मेवा मिसुरी खाने वाले खरिकी खात धपरियां जाय । अतर फूल के सूंघन वाले सूंघत तेल तिलिनियां क्यार ॥ बैल चनारी डारी नारी बेरी जुंआ करो तैयार । कंधहा धरि दयो जुनि आल्हा के मबकत चलत बनाफरराय ॥

अथ पांचवां खण्ड ॥

अब ऊदनि को पिंजरा की कील काटकर उड़ना और सिरसा कों जाना ॥

छन्द आल्हा ॥

उन के जी कों को समझावै जिन की चढ़ी लगुन फिरजाय । उनके जीकों को समझावै जिनकें पुत्रशोक परिजाय ॥ उन के जी कों को समझावै सेज पै चढ़त नारि भजि जाय । ऊदनि जियराको समझावै सिरसो कुरमा गयो निधाय ॥ खाय सैतीजो लयो देवी ने आल्हा गंगिया लये बंधाय । धनि २ मारी कांवर वाली सूरन के दये स्यार बनाय ॥ विश पंख की जे नागिन हैं जिन के डसत बरत ना हाय । अकिली गंगिया और भगिया ने कितने जौहर दये दिखाय ॥ टंगे पीजरा ऊदनि बिलखै कीलपै चौंच खटाका खाय। धरि २ भड़कत रोय २ बिलखत अपनीं छांड़ि छांड़ि डड़कार ॥ एक महिरिया कों आयेते लाखनि रांड़य परैं दिखाय। जादू के पहिरा गंगिया करदये और चौगिरदा दये लगाय॥ धीरें २ कील काटकर वाहिर कढ़े बनाफरराय । लौट पिछारी कों ना देखै और सिरसाकी सूध लगाय॥ जादू भाजो पिंजरा पै से गंगिये खबर जनाई जाय । सुनत खबरियां तेलिन जरगई नैना कालरूप हुयजांय ॥ लौट पीटिकें चिलिया बनिकें पाछैं परी उदैंचं दलाल । भाजै उदिया दाबै गंगिया उदिया उड़त अगारू जाय ॥ ठाड़े रहियो जान न पाय ही पाली परी महिरियन क्यार। कान अवाज परी ऊदनिके पाछैं लखी तिलिनियां क्यार॥

अथ कुड़रिया ॥

गंगिया धाई क्रोध करि बनि चिलिया असमान । झपटा मारैं दौ-

रिकैं काढ़ैं लेति प्रान ॥ काढ़ैं लेति प्रान दौरिकैं धरि २ झपटै । लिपटि चिपटि भुंय डारि पंख व तिनहीं कटै ॥ गावत टीकाराम नारि नाहर की ऐया । कहां ऊदनि सौधवल कहां वह तेलिन गंगिया ॥

सोहालिन वल राखते सूरधवल सिरदार । वावनगढ़ वश इन करे भय खावै नर नारि ॥ भय खावैं नरनारि करत सूरन के कंका ॥ काल हाथ ले चलैं मरन की नाहीं शंका । गावत टीकाराम नारि निरदया कुनारी ॥ सो तेलिन की मार खात ऊदनि वलधारी ॥ २ ॥

छन्द आल्हा ॥

एक वेर कें धरिकें झपटै दावै पंजा खूब दवाय । झपटि २ कें चिपटि २ कें लिपटति अङ्ग सुआ के जाय ॥ झपटा मारै भुंयपै डारै फारैं डारैं पंख वनाय । टरै चौचन दावैं पंखन मारैं झपटन लेत प्रान ॥ टोरै मोरैं अरु झकझोरैं फारैं डारै देह वनाय । गिरजाय धरती उड़िजाय फुरती गिरती परती परै लखाय ॥ उड़ २ भाजत धरि २ धावत भाजत आल लहुरवा क्यार । लिपिट झिपिटकैं छूट २ कें झपटकें उड़त उदैचंद क्यार ॥ चौंचन मारै पंख विदारै फारैं डारै देह वनाय । दावैं दिखारी गंगिया आवै टेसा देतचली ढकिआय ॥ सीमा दावी जब महुवे की देखी किला मल्हारे क्यार । किला दिखानो जब सिरसा को गरजत कहात उदैसिंह राय ॥ जियन कमीनी जान न पैहैं जेहै किला वीर मलिखान । किला दिखानो जब सिरसा को चमके कलश सोवरन क्यार ॥ गंगिया जानी अपने मन में अव ना वचि हैं प्रान हमार । गजमोतिन जादू में अगरी वेशक ली है जान हमार ॥ सोचि समझि के गंगिया लौटी झपटी कुंवर लहुरवा क्यार । गंगिया भाजिगई कामर को सिरसा चले उदयचन्द लाल ॥ वा सिरसा के सतखंडा पै वेटी खड़ी विशैने क्यार सूरत देखी गजमोतिन की गोदी गिरे भरारा खाय ॥ गजमोतिन अपने मन जानी तोता वाज झपेटो आइ । थर २ कांपतु है गोदी में फेरो हाथ पदमिनी क्यार । वीर सम्हारो गजमोतिन ने औ र तोता सो लगी वतान ॥ जनम के तोता होउ जो सुअना तो तोता के रहौ समान ॥ मानष ते जो सुआ वनाये तो तुम मानुष होउ त्यार । पढ़ि २

अरक्षित पद्मिन मारे ऊदनि तुरत होत तैयार । ठाड़े ते ऊदनि पाइनि गिरिगयौ एकदम छोड़ि दई डड़कार ॥ जो २ बीती जा कामर में सो ऊदनि ने दई सुनाय ॥ वंश हानि महुवे की हुय गई अब कोई पानी दिवइया नांहि । गजमोतिन के काहे रोवन में सुरजा गिरी तड़ाका खाय । कौआ रो रो है सिरसा में मानो खिया हरन हुय जाय ॥ बांदी टेरी तब रानी ने तू जा बंगला के दरम्यान । साधु के सुत को जलदी लाओ मेरी छोड़ी के दरम्यान । ओढ़ि दुशाला वाला वाला चलिभई बंगला के दरम्यान ॥ खूंट चादरा लटकत आवे मचकति चलति अनौखी चाल । जाय सुनाई है मलिखे को मलिखे तुरत होत तय्यार ॥ जाय के मलिखे छोड़िन पहुंचे दौरि के मिले उदयसिंह राय ॥ दोनों भाई मिलि के रोवें ऊदनि छोड़ि दई डड़कार । वा ऊदनि के हाय रोवन में नहिं डिढ़ बंधी मल्हारे क्यार सुनी हकीकत जब कामर की तब मलिखे ने दियो जवाब ॥ पेहहि बरजो तुम ना मानी तैसो भाव भुगति लओ जाय तुम ना मरिगये वा कांवर में क्यों मुख हियां दिखाओ आइ । वंश नशाय दयौ कांवरमें टरि जा कुवर लहुरवा क्यार । कोखि को लड़िका हाय आल्हा ने सो बल देखी दयो चढ़ाय । सो वे कैद भये कांवर में चाहौ मरि जाय बनाफर राय गजमोतिन समझावन लागी स्वामी बार २ बलि जांव । इन बातन में कछु ढंग नाहीं असने परे बनाफर राय ॥ करो त्यारी अब कांवर की जलदी बांधि चलौ हथियार । इतनी सुनिके मलिखे बोले तुम का कहति पदमिनी नारि ॥ घर २ जादू है कांवर में और है राज महरियम क्कार । हम ना जे हैं वा कांवर में और वे मीच बुलावें काल । इतनी सुनि के जरिके भुनिके लचिके कहे पदमिनी नारि । लहंगा लुगरा और चादरा ओढ़ो पहिदौ कंथ हमार ॥ सिबरो लशकर कम्मरि कसिकर हंसकर देव ढाल तलवारि । अपनी घोड़ी तिरहन जोड़ी घोड़ी जलद देव कसवाय ॥ कामशाह की क्या गिनती है दुनिया एक ओर हुय जाय । तो तौ वेटी गजराजा की जात ही इंड लेव बंधवाय ॥ कौन सूर जा महि पै जनमों जो करि समर पार हुय जाय । सुनि के बातें गजमोतिन की काइल भये वीर मलिखान ॥ तुम हूं चलौ संग काउर को देखें कावर को मैदान । बोलि नगड़ची को बीरा दयौ मारू डंका दयो बजाय ॥ जीन धराय दये

घोड़नपै हाथिन हौदा दये घराय । घोड़ी साजत मलखे वाली सोहू तुरत होत तैयार ॥ डोला साजतु है पदमिन को महुवे को दयौ कूच कराय । संग ही घोड़ी पै ऊदनि हैं हिलकी भरी नयनमें जाय ॥ चित घूमि गयौ जब मलिखे को और ऊदनि सों लगे बतान । काहे ऊदनि हीनों मानौ सांची कही लहुरवा भाय ॥ घोड़ा बेंदुला जो नाहीं है मेरी लेउ कबूतरी जाय । काऊ दिन करता वो दिन लावे होय हौ बेंदुल पै असवार ॥ दोनों सूर चले महुवे को जां है चंदेले दरबार । घोड़न तैं उतरे जब दोनों घोड़े थामि लये धनवार ॥ मलिखे पहुंचे हैं राजा तें सिर धरि दयौ चरन ते जाय । उठि के राजा ठाड़े हुय गये दोऊ छाती सों लये लगाय । छैम कुशल राजा ने पूछी तब मलिखे ने दियो जबाब । लाखनि राना के गोने में जौहर भयौ बनाफर राय ॥ दगा करो है कनवजियों ने सब की कैद कामरू कियार । कोई २ सूर सुआ अरु तीतुर कोई २ गदहा दये कराय ॥ कोई २ पथरा कोई २ हिरना कोई बरधा दये कराय । अकिलो इन्दल तो आल्हा के सो देवी को दयौ चढ़ाय ॥ वंशहानि महुवे की हुय गई बिपता परी बनाफर कियार । जासों दादा समझात हों संग ब्रह्मा को देव पठाय ॥ पहिले चलिके कनवज फूकें काटें शीश कनौजी राय । कामशाह के जाय धौरा पै ज़ातही दीहैं तोप लगाय ॥ इतनी सुनि के चंदेले ने तब मलिकेको दियो जवाब । सहजई कांउर तुमने जानी हौंसे फिरत मल्हारे राय ॥ जितने जैहो वा कांउर कों तिन कों कफन धरो मंगाय । बिकट जादू है कामशाह की भारी मारू महिरियन क्यार ॥ जा सों बेटा कही मानके घर ही बैठो लला हमार । गये मरे को सोच न करिये जा है वेद रीति व्योहार ॥ उठ के ब्रह्मा बोलन लागे दादा सुनो बीर मलिखान । निमक हरामी देवै वाले घटिहा वंश बनाफरराय ॥ कही न मानी उन चाचा की घोड़न की दई नाहीं कराय । मेरे जान चाहीं आल्हा मरि जांय मिटि ज़ाय बंश बनाफर राय ॥ निमक हरामिन के हम पीछें नहिं जै चन्द सों करें बिगार । गाढ़े नाते हैं जैचन्द सों रिश्तेदार कनौजी राय ॥

जवाब ब्रह्मा को मलिखान सो कुड़रिया ॥

मलिखे उसले साल क्यों फेरि सलावत जाय । निमक हरामिन की

जिकर फेर सुनावत आय ॥ फेर सुनावत आय सुनत जी उठत शाले। सहि दुःख मल्हना पाल रैन दिन सहे कशाले ॥ गावत टीकाराम जिकर छोड़ो ऊदन के। जैचन्द नातेदार बिगारैं कैसे मलिखे ॥

जवाब मलिखान कों कुड़रिया ॥

बोलो बानी समुझ कर हो ब्रह्मानन्द आप। चन्देले नामी भये ऊदन के परताप ॥ ऊदन के परताप राजराजेश्वर गाये। दिल्लीपति कों जीति व्याह तुमरो करलायो। गावत टीकाराम विपति ऊदनि पे तौली। दुख सुख बूझो नाहिं दई गोली सी बोली ॥

कुड़रिया ॥

करण, द्रोण, भीषम हनन सुनि अरजुन अवतार। भारत में कीनो बिजय अब गयो हिम्मत हार ॥ अब गयो हिम्मत हार वंश चन्देले लाजे। लेत हाथ तलवार अम्बिका भुजनि बिराजै ॥ गावत टीकाराम चन्देले चलने पर है। जउ करिहौ इनकार हमें तुम्हें अवही बजि है ॥

जवाब ब्रह्मा का कुड़रिया ॥

हांसी हम सों आप सों सदां होत मलिखान। बीर बनाफर के लिये हाजिर मेरी जान ॥ हाजिर मेरी जान प्रान नौछावर बाके। ऐसी कमरू करौं राम जों लंका जाके ॥ गावत टीकाराम फ़ौज, सजि सजि के खासी। कामशाह कों जीत लगावे घर २ फांसी ॥

कुड़रिया ॥

आयुस ब्रह्मा की सुनत रथ गज शुतर तुरंग। सजि २ महाकराल भट चली चमूं चतुरंग ॥ चली चमू चतुरंग फौज सांजति ब्रह्माकी। थर २ धरती हले शेष की छाती धर की ॥ गावत टीकाराम सुभट भट हैंरन बंका। धनि महोवें के सूर मरन की नाहीं शंका ॥

छन्द आल्हा ॥

ब्रह्मा साजत हैं बंगला में अब फोजनि के सुनो हवाल। हुकम दियां पे है जलदी को हरिकारेकों दियो जवाब ॥ घर २ महोवे किला कलींजर घर २ शहर ग्वालियर जाय। बाउन पुरवा मौरत वामें घर २ हुकम दयो करवाय ॥ जगे भनेजा जगानेर के सजि के मिले महोवे आय।

जितनी फौजें थीं महुवे में सबने दई हाजुरी आय । चारो ओरीसे क्षत्री उमड़ें हो गये क्षत्रिन के घमस्यान ॥ तिरियां बोलति हैं कूरन की स्वामी सुनों हमारी वात । कठिन लड़ाई है कांवर की वेंड़ी आरु महिरियन क्यार ॥ आल्हा ऊदल उन वसिकर लये तुम का मालु हौ पिया हमार । तापै गौनो अब हीं आओ गोद न खेलौ लला हमार ॥ छोड़ चाकरी देउ राजा की अन्त हीं वसो गांव में जाय । थोरी बहुत खेती करि लीजो नीके लीजो वैल विसाय ॥ अरु दो वीघा वन बयदीजो रहंटा दुय दीजो धरवाय । ओटि कातिकें तुम्हें खवावें वेड़ा दी हैं पार लगाय ॥ तिरियां कहैं मुसलमानन की सामी मानौ अरज़ हमार । हिन्दुन होती संग जरि जाती कैसें वैठे कवरि मझार ॥ तिरियां वोलति हैं सूरन की स्वामी वार २ वलि जाउं । निमक चंदेलेको खायो है लड़ियो समरभूमि मैदान ॥ नेक वदी जो पीको हुयजाय माटी मिलत सती हुयजांय । करैं पिसौनी हम वनियन की वालक पाल करैं तैयार ॥ घाव पीठमें जो हम देखें तौ खंदिक में दैंय डराय । घाउ सामने लखें तुम्हारे तौ हम संग सती हुय जांय ॥ सजै साहिबी है घोड़न की कच्छी मच्छी होत त्यार । घोड़ी हिरौंजनि अरु मुख मंजन श्यामाकरण होत तैयार ॥ सबजा सुरखा और कुमैता अरवी घोड़ा भये त्यार । टांगन हवशी ताजी तुरकी घोड़ा जलद भये तैयार ॥ कट्टर घोड़ा पाखरि डारो ताजी तीन पांय ठन्नाय । जीन धराय दये घोड़न पै अब सड़ियन को सुनो हवाल ॥ कविली अरवी अरु तातारी वीकानैरी भये त्यार । धरि कठिलानीदई सड़ियनपै दुय २ ज्वान वनत असवार ॥ बड़ि २ हाथिनकों सजवाओ छोटे परवत की उनहारि । मैनकुञ्ज मलिया धौरागिर और भौंरा गिर भये तियार ॥ गुम्मठ वाले हौदा धरिदये मनु मठ वने भवानी क्यार । चार ज़्वान हौदामें वैठे गरदनि पीलवान तैयार ॥ वारह घंटा गरदन डारे हो रही घंटन की झनकार । सूवेदार तोपखाने को तोपैं जलद करौ तैयार ॥ हनूहंकारम और दलगंजन भंजन किला करो तैयार । तोपकालिका ताल हिलोरन भैरों तोप करो तैयार ॥ गर्भ गिरावन समुद सुखावन धरती धमकनि करौ त्यार । जुते अरावा हैं तोपन के हलका हके हाथियन क्यार ॥ तुंगकाइन

के निकरत हैं वेंड़ा फौज पठानन क्यार । फौजें तुरकन की निकरत हैं वैंड़ा तुंग तिलंगन क्यार ॥ जितनी साहिवी थी ब्रह्मा की सो दरवाजे लई बुलाय । हाथ जोरकें चन्देले ने सबसों करी बन्दगी जाय ॥ नौकर चाकर कोई नाहीं सब घर भैया लगो हमार । कठिन मवासी वा कांवर है रहना खबरदार हुसियार ॥ कसम उठाई सब छत्रिन ने हंसि २ सूर भये तैयार । घोड़ा साजत है ब्रह्मा को आपुन सजे चन्देलेराय ॥ बावन गढ़ के जो राजा हैं सबकों खबर दई करवाय । आठ रोज की अब मोलत में कांवर देउ हाजुरी जाय ॥ पगिया अटकी चन्देले की सूधे जात चन्देले राय । जितने वाजेते महुवेमें एक ही संग दये बजवाय ॥ ब्रह्मा बोलत हैं मातासों जननी लागों चरन तुम्हार । नीके मनसों अज्ञा देदेउ जासों मैदान फले तलवार ॥ जियत रहैंगे तो फिर मिलि हैं पूजें चरन मलहन देउ माय । नेक वदी कांवर में हुयजाय जई है भेंट मलहन दे माय ॥ सोने को आरत रानी लेकें चौमुख दिया करो तैयार । आरति फेरति है ब्रह्मापै अरु धरती में धरै उतार ॥ चरन लागिकें महलारी के चन्देलेतें उरहे जायं । छूकें चरन चन्देलेजू के जो हैं सूर महोवे क्यार ॥ अपने २ सब घोड़न पै सब ही फांदि होंय असवार । मारू डङ्का के बाजत खन फौजें पड़ा वांधि रहिजांय ॥ बाउन गज को झंडा निकरो जासों नगिन झकोरा खाय । जा ब्रह्माकी अब साजनि में सजगई तीनलाख तलवार ॥ सुमिरन करकें रामचन्द्र को मनिया सुमिर महोवे क्यार । कूंच बोलदयो है महुवे से और कांवर की सूध लगाय ॥ थर २ थर २ धरती हाले नीचें नाग करोटा खांय । ताल तलैयन सूखा परगई कुअना ढोल दमंका खांय ॥ आगू घोड़नि पानी मिल जाय पाछैं खाव चचोरत जांय । नगरी नगरा भजना परगई भारी शहर गये दहलाय ॥ खीसें वायें फिरैं लोमड़ी और मुह वाये फिरत स्यार । हिन्न चौकड़ीकों भूले हैं अरु वन वाघ छोड़ गये जांय ॥ कोड़ा घोड़नपै वाजतु है आंकुश वजत फीलपै जाय । शुतरी साड़िन पै वाजति है औगी वजति वैलपै जाय ॥ चार दिना की मंजिल करकें कनवज धुरो दवायो जाय । नगिन सिरोही मलिखे करकें पहुंचो जैचंद के दरवार ॥ संग ही कुंवर महोवे वारो घोड़ी नचत वरावर जाय ।

जैचंद जू के जाय बंगला में गरजो कुंअर वीर मलखान ॥ जितने क्षत्री ते पहिरा पै सबकी छूटपरी तलवार। भाला लैकें जाय मलखेने सो धरदयो चौंद पै जाय ॥ तुम तो सुख में कनवज बैठे हमरी करी वंशकी हानि। मूड़ काटिकें जाही बंगला में बोचन मास देंउ फैलाय॥ आगी लगाय देंउ कनवज में कारे पखा देंउ करवाय । अकिलो करकें मेरे भैयन कों अरु परदेश फंसाओ जाय ॥ कंपि पैंड़री गईं राजा की धधका भयो करेजां जाय । हाथ जोरिकें जैचंद बोले वेटा मेरे वीर मलखान ॥ होनहार सों कछु बस नाहीं जो करता ने लिखी लिलार । संग तुम्हारे हम हू चलि हैं मरि हैं कांवर के मैदान ॥ एक लाखसों जैचंद साजे सब दल एक गोल हुयजांय । बन्दोवस्त फौजन को करकें बोलन लगे वीर मलखान ॥ सुनो बैंदुला के चढ़वैया जैयौ कांवरके मैदान । हम लैकें सुविया कों आवें वाही कांवर के मैदान ॥ घर २ जादू हैं कांवर में जां हैं राज महिरियन ब्यार । दवीं अंगुरियां हैं पाथर सें जाय कर २ सों लेंय निकार ॥ बीच में डोला गजमोतिन कौ चारौ ओर नगिन तलवार। झूनागढ़ कों मलखे चलभयो कांवर चले चंदेलेराय ॥

अब मलखान को झूनागढ़ की डांगन में सुविया बेड़नी के पास जाना ॥

घोड़ी कबूतरी दावें आवै मलखे चलो बरावर जाय । साठ कोसनो नगरा नाहीं वाही डांगनके दरम्यान ॥ डांग भयानक झूनागढ़की नाहर तेंदुनि के घमस्थान । ससे स्यार सावर सुअर नाहीं सिंहनको कछु पार॥ झाड़ी भारी है बांसन की बन में अन्धकार अंधियार । सुन्दर पर्वत की चोटी पै सिर की लगीं वेड़नी ब्यार ॥ कोसनको सिरकी लागी हैं विड़ियन मिलत न मानापार । भारी बंगला है पालन को कलशा धरे सोवरन ब्यार ॥ घोड़ी दाबि दई मलखे ने पहुंचे सुविया के ढिंग जाय। आवत देखत है मलखे कों मन में करगई सोच विचार ॥ पगिया अटकी बन ठगियन को वाही कांवर के मैदान । गरज के मारे मलखे आये अब सिर परी भावई आय ॥ अपने मतलव के गरजी हैं अरजी भये बनाफरराय । काम काढ़कें पहिलें अपनो पाछें ढका देत लगवाय ॥ अबकें सात परैं ना जबतक तवतक चलौं अंगारू नांय । इतनी सुविया सोच रही थी

घोड़ी खड़ी बरोबर आय ॥ उठके सुविया ठाढ़ी हुयगई कुरसी दई मल्हारे जाय । सब गुन नगरी रूप की अगरी पुतरी बनी कंचनी क्यार ॥ रूप घनेरी जादूढेरी चेरी बनी उदैसिंहराय । उठै पड़ीसी गिरत छड़ीसी जड़ी खड़ीसी मनौ सुनार ॥ भोली बतियां कोमल छतियां अखियां मनौ कटारी धार । चोटी काली ओठ की लाली आली देह मदन रहो छाय ॥ ऐसी कामिन मनघन दामिन ना मन वसी लहुरवा क्यार । कदकी छोटी कंमरि की हेटी वेटी जौन वेड़ियन क्यार ॥ बारी उमरिया पतरी कमरिया छलिया मिले वनाफरराय । धनि सतवादी साकौ जारी नारी जानी धूरि समान ॥ मन कों वसकर इन्द्री कसकर वेशक कृपा करें भगवान । धनि २ उदिया खिरिन सुविया अगिया रूप देख हुयजाय ॥ वोलै सुविया मन को छलिया की हैं आये महुवियाराय । पूरो तौलो झूठ न बोलौ निधरक डोलौ विकट वजार ॥ सुनके मलखे वौले हलके करकें कपट वनाफरराय । काम हमारो कामर भारो सारो काज वनाफरराय ॥ पगिया अटकी है कांवर में चलकें पाग लेउ सुरझाय । कंकन वांधे ऊदनि वैठो चलकें सात लेउ डरवाय ॥ जितने घरौआ मरद महिरियां सब हैं कांवर के दरम्यान । ऐसो मौका फिर ना मिलि है अबके लगो तुम्हारो दाउ ॥ सब घरकिन कों तुरता भुरता हालहिं दीजो पई खवाय ॥

जवाब सुविया वेड़नी मलखान सों—कुड़रिया ॥

मलखे उसले सालनों फेरि हलावत आय । एकवेर वहकायके फेर बुलावत आय ॥ फेर बुलावत आय कही कैसे पतुआवै । दूधसों दगो जलाय छाछ ताहि फूंक पिलावै ॥ गावत टीकाराम वेड़नी बोलत तबके । हौ मतलवके यार वनावत वातें मलखे ॥

छन्द आल्हा ॥

सोभा सुनकें वोली तबकें रिसकें वोली वेड़नी क्यार । है छलबल की वात कपट की मन की जानी वात तुम्हार ॥ सब महुवे के हौ मतलब के सब के जानै खूब सुभाय । काम काढ़िकें ढका मारकें मार २ कें देत भजाय ॥ गंगा लैकें तब मलखे ने रघुवर दये बीच में जाय । वात कही तुम झूंठी परिजाय तौ मोहि लौट भगौती खाय ॥ सांची जानी तब सोभाने जादू तुरत करे तैयार । महुआ वीरन और वेड़िया सब ने बांधि लये हथियार ॥ हसिकें सोभा वोलन लागी अरु सुनलेउ वीर मलखान । जाते २ हम महुवे में अपनो ली हैं हिसा कराय ॥ हमसों सुनमा

सों ना बनि है नियारे महिल लेय बनवाय। सब घरकिन कों अपने हाथ सों पहिले दीहों पई खवाय। जो जो कहि हो सब हुयजैहै जल्दी कूंच देउ करवाय। बजो नगाड़ो है सोमाको डांगनि सेर भजे भहराय। कूंच बोलि दयो झूनागढ़सें अरु कांउर की सूध लगाय। तौलों दल ब्रह्माको उमड़ो मेलौ कांवर के मैदान। जो जो राजा बुलवायेते उमड़े कांवर के मैदान। सात लाखको अब मेला है मेलौ कांवर के मैदान। तम्बू लागि रहे राजन के नंगी सूझ परै तलवार। रैन बीतगई है डांगन में भोरहीं भये भुरैरे जाय। अब कल नाहीं है मलखे कों चारो सूर महोवे क्यार। जोगी बनगये हैं तमुवन में गुदरी धरी ढाल तलवार। कुंडल सोहत हैं कानन में दुहरे कड़ा सोवरन क्यार। अपने २ बाजे लैकें सब मठियाकों भये त्यार। संग ही सुविया गजमोतिन कों लैकें चले मठी पय जाय। जायकें पहुंचे हैं मठियामें देवी खोले धरम दुआर। सीस नवायो है देवी कों अरथी लखी वरौना क्यार। अंधरी हुयगई सुनमा फुलवा देवै ढरी २ विल खांय। आहट पावत मलखे आवत चौंकन लगी देवला माय। हम हैं दु-खिया को है मठियां दैया घसो मढ़ी में आय। बड़ी गरीवत सों वोलत है सिरसा वालो वीर मलखान ;। हम हैं मैया तेरे कन्हैया मलखे और चंदेले राय। नाम सुनत हीं हाय मलखे को सबने छांड़ि दई डड़कार। अरथी देखत खन इन्दल की नहिं छिड़ बंधी चंदेलेराय। कौआ रोरौ है मठिया में मानों सियाहरन हुयजाय। मलखे वोलत है देवैसों माता तेरो बुरो हुयजाय। अकिलो लड़का तो सुनमा कें सो करदई निपूती हाय। तुम्हें मुनासिव जा नाहीं थी करदई नाठ बनाफर क्यार॥

अब मलखान वा ऊदन वा ब्रह्मा वा जगनिक को जोगी बनकर वा सोभा वा सुनमा वा जगमोतिन वा फुलवाको जोगिन बनकर कांवरमें घर २ घूमकर आल्हा ताल्हा वा लाखनि को पता लगाकर असली रूप वनाना और इन्दल का अम्बर होकर मढ़ी में जगना॥

अथ मन्त्र—जिस को सिद्ध कर जपकर यात्रा करना और सब काम सुफल होना । अथ मन्त्र—शीतलेश्व जगन्माता, दीत पिता ब्रह्मा की बेटी, इन्द्र की प्यारी, नगरकोटमें सामलविरछी, हिंगलाजमें पलना झूलै, विन्द के पहाड़पै विराजै विन्दवासिनी, धौरागिर पर्वत तापै पहरो लगो भद्रकाली, अष्टभुजा नौ सवारी, गलगाज करे कैलाश भवानी, अन्त कहूं कों चलौं कालिया सुरवीर बांही भुजनपै आय विराजै, नजरि, डीठ वायु बाधा बांधि वस में करै धौरागिर की आदि भवानी, भैंट वालेकों भैंट भोकन वाले कों भोषन सवापहर तेरी बिन्ती करों पर अखाड़े में जीतके कढ़िआऊ तौ सांची भद्रकाली कहावै, मेरी भगति तेरी शकति फलै ईशुरी मित्रूवाचा ॥

अथ चौपहरा मुहूर्त्त यात्रा करने वालेकों चाहिये तिथि महीना लम्बर ३ पै तेरस वा तीज और लम्बर ४ पै चौथ वा चौदस मानना और लम्बर ५ पै पांचै पूनौ अमावस मानी जाती है हरवख़्त सगुन ठीक फल देता है मगर कमी वेशी तिथिकी पत्रासे मिलाकर विचार कर यात्रा करै तौ फल ठीक है—

ति०	माघ	फागुन	चैत	बैशाख	जेठ	असाढ़	सावन	भादों	कुआर	कातिक	अगहन	चार पहर यानी पहर २ का फल देखकर चलना
...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१ सुख२ दुख ३ भई ४ लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	१ शून्य २ शून्य ३ शून्य ४ लाभ
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	१दुखहा.मास२दुख३मित्रमिले४लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	१ धनलाभ२ दुख ३ मंगल४लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	१ लाभ २ लाभ ३ लाभ ४सुखम्
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	१ भई २ लाभ ३ मरण ४ लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	१ लाभ २ कष्ट ३ लाभ ४ सुखम्
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	१ दुख २सुख ३ दुखलाभ ४सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	१ सुख २लाभ ३कार्यसिद्धि ४दुख
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१दुख २सुख ३धनलाभ ४धनमिलै
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	१ धनमास २कष्टसिद्धि३मरण४दुख
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१मित्रमिले २ भई ३ लाभ ४धनमिलै

यह सगुन कुण्डली बड़े २ गुणधारियों से आज़माइश करके लिखा है ॥
भूलचूक माफ़ करना ॥

चौपाई ॥

रीती भरैं भरीं ढरकावे । महिरि करैं तब फेरि भरावे ॥
नृप से रंक रंक से राजा । बिगरे फेरि बनावे काजा ॥

कुड़रिया ॥

साँई घर की फूट सों बिगरो सकल जहान। मन्दोदरि इज्जत गई रावन के गये प्रान ॥ रावन के गये प्रान भेद भाभीष न दीना। कुटम सहित परिवार नाश अपनो कर लीना ॥ कह गिरधर कविराय लंकगढ़ कैंस टूटा। भयो दोहुन को नाश बन्धु घर ही को फूटा ॥

छन्द आल्हा ॥

अखिले माहिल और तिलका ने कितनीं आफत दई दिखाय। महुवे वाले और कनवज के सब के छक्के दये छुटाय ॥ गज मोतिन समझावन लागी स्वामी वार २ बलिजांउ। रोयें पीटें कछु ना वन है अब आगे को करो उपाय ॥ जोगी जोगिन बन २चलियें घूमें कांउर को मैदान। सुनमा फुलवाको समझाओ जोगिन बनो मढ़ीमें जाय॥ बनि २ जोगिन चारो ति-रियां मढ़ियां जोगिन भेष बनाय। डुभिया साजति हैं मढ़िया में खिचि २ कमर बांधि लई जाय ॥ सारी सुनहेरी रेशमवारी जारी देह मदन गुमान। आंख की लाली जाय न खाली मानो सजी भुजाली धार॥ आंख कटीलो सुरमा सो है मोह न चित्त मुनीश्वर बयार। छैल छबीली अधि कर सीली चितवत काम उठत भन्नाय ॥ फुलवा सरमी जी अपने में तब मलिखे ने दियो जवाब। विपता परें कहा ना करिये रोग में कहा दवा ना खाय ॥ चारौ जोगी चारो जोगिन सजि गये मठिया के मैदान। दै परिकरमा तब देवी को जंत्र मंत्र सब करे त्यार ॥ कूंच बोल दयो है म-ठिया से और कांउर की सूध लगाय। पहिले फाटक पे पहुंचत है पहिरा विकट बुंदेला कयार। राजा जानत तो जी अपने कहू दिन चढ़ि है बीर मलिखान। रूप देख दरबानी मोही बाबा लागों चरण तुम्हार ॥ सुफल जिन्दगी मेरी हुय गई खटका मिटो जमनि घर बयार। अब दरशन नगरी में दीजे फाटिक जल्द दये खुलवाय ॥ बाउन बजरियां बासठि गुदरी दे-खत चले बीर मलिखान। दुय घर मांगत दश घर छोड़त भागत जात बं-देले जाय ॥ बजें मजीरा जगनाइक के बसुरी बजत लहुरवा जाय। राग अलापें शहरपनामें चलते पवन बन्द हुइ जाय। नर नारी कांउर के मोहे जादू टोना गये भुलाय ॥ साल दुशाला मोहन माला तिरियन ककनो दये गहाय। वा कांउर की मुड़गारिन पे तिरियन रही लालरी छाय ॥

कबहूं अंगारू सोभा नाचे कबहूं नचत लहुरवा जाय। मधुरी बानी सुभियां ठानी छोड़ी तान उठी भन्नाय ॥ कमरि को लचका उमरि को मचका स-सकत जवान गिरत भहराय। पता न लागो कहुं काहू को तब बढ़ि चले अगारू जाय ॥ गंगिया ठाड़ी दरवाजे पै देखे रूप जोगियन क्यार। रूप देखि जोगी जोगिनको जादू टौना गई हिराय। रूप रसायन जादू भारी काबू करत सकल संसार। कबहूं देखति है जोगिन ते कबहूं लखत जोग-नीन क्यार॥ धन्यवाद ईश्वर को मानो इनके धन्नि घरी अवतार॥ धरती परि २ विनती करि २ करि २ विनतीं रही मनाय। इकटक हेरै पलक न फेरे घर अपने को चली लिवाय॥ जब दरवाजे जोगी पहुंचे बोली बंब जोगियन क्यार। कान अवाज परी आल्हा के कोल्हू ते चि-तये चित्त घुमाय॥ कछु २ आल्हा मन में जानी वेशक आए वीर मलि-खान॥ आसू टूटि गिरे कोल्हू तै रोवें हाय २ भगवान। जादू वलसों सोभा जानी जेही हैं मंडरीक अवतार। टप २ आंसू टूटन लागे जेही है ददा बनाफर राय। रुदनि मलिखे रहि २ बिलखत कागति हुयगई ददा हमार जेठो भाई दुःख सहै जाई ऐसे जीतब को धरकार॥ हंसि के गंगिया बो लन लागी बाबा मागौ बचन तुम्हार। हंसिके सुभिया बोलन लागी ब-हिना भोजन देव कराय। बिना अन्नकी होय मिठाई अपने हाथ ल्यावो जाय॥ सौने को थार लयो गंगिया ने पहुंची चौक चांदनी जाय॥ तौलो जोगी आगू बढ़िके पहुंचो ढिगा बनाफर जाय॥ मलिखे बोलत हैं आल्हा सों धीरज धरौ बनाफर राय॥ तुम्हरे ही कारन दादा मेरे लहुरी भा-वज नचैं बजार। सात लाख सों ब्रह्मा भैया कांवर बांधि आये तरवारि खोदि केँ कांवरि धरती करिदेंव लव छाती को डाहु बुझाय। तौलों गंगि-या सिन्नी लाई जोगिन झोरी लई डराय॥ जो २ इच्छा बाबा होवे सो तुम मांगौ द्वार हमार। झोरी झिंडा हम लादत मैं होवें हानि भजन भ-गवान। दुर्वल बैल चलै कोल्हू में पुट्ठनि खून रहो चुचियाय। जही बैल हमको दय दीजो झोरी झन्डा लये लदाय। सुनत खबरिया बैरागिनकी गंगिया जी लागी घबड़ान॥ चोली के बंद ढीले परिगये बाबा लागों च-रन तुम्हार। जा है कैदी नगर महोवे को आल्हा मंडरीक औतार॥ जा को लयके तुम का करि हौ अरु का सरि है काज तुम्हार। जनम के वैरी देवय बारे इनको देहैं दुःख अपार। हुय लाचारी गंगिया नारी तु-

रतहीं वेल छोरिदयो जाय ॥ झोरी झन्डा जोगी जोगिन लय आल्हा पै दये चलाय । अच्छा मांगी तब लेलिन पै बहिना अच्छा देव कराय ॥ गंगिया बोलति है सुभिया सों बहिना कबे मिलोगीं आय । आंसू भरि २ गंगिया रोवे तब सुभिया ने दियो जवाब । जवाब सुभिया कुड़रिया

खोटे दिन हमरे सखी रूटे राम हमार । खोटे दिन जब जांयगे कृपा करै करतार ॥ कृपा करै करतार दिन जब नीके आवें । तब हीं मिलि हैं आय तुम्हें सुरपुर पहुंचावें ॥ गावत टोकाराम झूठ नहिं भाखत तोसों ॥ परे सावका आय जल्दी ही तोसे मोसे ॥ छन्द आल्हा ॥

इतनी कहिके जोगी चलिभये पहुंचे कामशाह दरबार ॥ कामशाह के दरबाजे पय बोली बस्त्र जोगियन क्यार ॥ तान लेग सुभिया ने छोड़ी पक्के महल दरारा खाय । शोर फैलिगयो सब बंगला में चोंकत कहत कमरिहा राव । कौन देश के जोगी आये उन्हें हमरे ढिंग लेव बुलाय । भयो बुलौआ वेरागिन को जोगी चले अगारूं जाय । लखी बनावट जब धौरा की संखा भई बीर मलिखान ॥ बावन गुर्ज बने धौरा के तोपन मिलत न म्याना पार । पहिरा विकट खड़े दरवाजे नंगी सूझि परै तलवारि । मलिखे बोलत हैं ऊदनि सों अनहक गही ढाल तलवारि ॥ इतनी सुनिके जरिके बरिके तचिके कहत बनाफर राय २ भुजा फरकती है ऊदनि की गुदरी में झलि उठी तलवारि । मारि सिरोहिन धरती रेलों धरती लौट पौट हुय जाय । तर की धरती ऊपर करिके ऊपर की तर देंव धसाय ॥ जोगी पहुंचे जब बंगला में खंभा सों लखे कनौजी राय ॥ जड्डे खेलत वे बंगला में धनुआ सूर कनौजी राय ॥ सोभा बोली जब मलिखे सों जे ही हैं कुंबर कनौजी राय । करी बंदगी जब राजा को आगू बरधा दयौ बढ़ाय ॥ रूप देखि जोगी जोगिन को राजा मोहि २ रहिजाय ॥ कौन गुरू के तुम चेला हो कां तुम मूड़ डारे मुड़बाय ॥ बढ़िके जवाब दयौ मलिखे ने राजा कामशाह महराज । गुरू निरञ्जन के चेला हैं काशी मूड़ डारे मुड़वाय ॥ राजा बोलत है जोगिन सों बाबा सांची देव बताय ॥ गुदरी तुमरी ऐसी नीकी जामें जड़े जबाहर लाल ॥ कुन्डल सोहत कान तुम्हारे हुइरे कड़ा सोबरन क्यार । तिरियां तुम्हरी ऐसी सुन्दर मनौ लैभजी नरेशन नारि । जोगी नाही तुम मन भोगी हौ राजन के राज दुलार ॥ डंड तुम्हारे हम बंधवाकर गोलन दीहैं छार उड़ाय ॥ इतनी सुनिके म-

लिखे बोले सुभिया तेरो बुरो हुय जाय। डंड बंधे हैं जा बंगला में तौ सब जैहैं काम नसाय॥ इतनी सुनिके सुभिया लड़की भड़की चली अंगारू जाय। कामति राजा तेरी बिगरी सिगरी दीहों ठसक बिगार।

जवाब सुभिया को कुड़रिया॥

चम चमाय चपला सरिस चलि २ गति सुधकाय। चतुरन के मन हरन को लीने चित्त चुराय॥ लीने चित्त चुराय चलति गति चमकति है चपलासी। हूरपरी सी खड़ी मैंनका रम्भा शकुन्तलासी। गावत टीकाराम लचकि लचका दरसावे झूमि२ झुकि लचकि ससकि लचि अदा दिखावे

छन्द आल्हा॥ हम हैं बालक वैरागिन के अपनो लेत राम को नाम मुंह जिन लागो वैरागिन के जाने कौन भेष भगवान॥ तुम राजेश्वर हम जोगेश्वर सांचो भेष जोगियन क्यार॥ मगन फकीरी सुनो सखीरी हमैं अमीरी क्या दरकार। इन्द्रीं कसिकर मन को बसकर नांचत हरिसों हेत लगाय॥ बुरे भाव सों जो कोई देखे तापे कोप करे भगवान॥ अदा दिखावैं भाव बतावैं गावैं गीत भूत भजि जांय। अजमति राजा देखैं चाहैं तौ लखि देखौ महिल मझार। झरपें देखी जब राजा ने धुरे पै धुवां सो परो दिखाय॥ तब सांची राजाने जानी हैं वैराग रूप भगवान॥ गुदरी बाबा तुम कां पाई सांची दीजौ भेद बताय॥ आंगू बढ़िके मलिखे बोले जो रनबाघ महोवे क्यार। काशी तजि त्रिवेनी न्हाई आये चित्रकूट मैदान। चित्रकूट से महुवे आये जां महाराज रजा परिमाल। डेरा डारि दये सागर पै मल्हना गुदरी दई बनाय॥ उन के घर में ऊदनि म, लिखे वड़े सूर बनाफर राय। उनहीं ने दयौ चूरा कलगीं उनहीं ने कड़ा सोवरन क्यार नाम सुनत ही वा मलिखे कौ पिड़रीं कपी बघेले क्यार॥ हाली गरदी फिरगई जरदी मानो हरदी दई फिराय॥ जी घबड़ानों मन दहलानो मानो मिलो वीर मलिखान॥ लागो धधका जी बहु भड़का ऐंठा परो पेट में जाय। कामशाह तब वोलन लागे बोवा लागों चरन तुम्हार। कैसी सूरति को मलिखे है कैसी कुंवरि चन्देले राव। हंसि के मलिखे बोले हलके मेरे रूप बीर मलिखान। छोटो जोगी जौ दहिने पर वांहीं ऊठि चन्देलो राव॥ जा में झूठी जो हम भाखें जल्दी लखियो खेत मझार। जा का कही दुवारा कहियो बाबा लागों चरन तुम्हार॥ जो सुनि आये हम महुवेमें सो सुनि लेउ बघेले राय॥ नई २ भरती होय घोड़न की नये २ भरे सिपाही जांय। नई २ तोपें ढरे महुवे में हो रही

सिकिल सिरोहिन क्यार ॥ कै दस दिन में कै दुय दिन में बेशक चढ़े चन्देले राव । सुनी चढ़ाई चन्देले की धड़को हियो बघेले राय ॥ जो जौ मांगो सो २ दीह्वों बाबा लीजौ हमें बचाय ॥ मलिखे पाछे करि ऊदनि ने बढ़िके कहँ लहुरवा भाय । जहं २ चरण परे बाबा के आवा गवन दयौ छुटवाय ॥ ऐसी चुकटी नाहीं कपटी कांवर तरी स्वर्ग को जाय । जिन २ दरशन हमरे पाये धाये मिले राम सों जाय । नीके दिन राजा तेरे आये नागा गये दिना तुम आय । मेढ़ा बुकरा हम को दय देव पूजन करें डांग मैं जाय मेढ़ा बुकरा की बलि दै के टारें अलफ तुम्हारी राव ॥ मेढ़ा बुकरा राजा लय के सो जोगिन को दयो गहाय । मेढ़ा बुकरा दोनों लैके बंगला सें दयौ कूच कराय । बाहिर कांवर के पहुंचत हैं अब भगिया को सुनौ हवाल ॥ लादीं लादे उन बिरसिंह पै और सैयद पै चली लदाय ॥ चित्त घूमि गयौ जब सैयद को जानी जेही बीर मलिखान । हैंचू २ ज़ोर शोर सों दोनों सूर रहे चिल्लाय ॥ जादू बल सों सुनमा जानी जेही हैं चचा बनारस क्यार । आंगू बढ़िके भगिया घेरी टेरी अपनो नाद बजाय डारि मोहनी दई भगिया पै जादू टोना गई भुलाय॥ मांगो २ बाबा बोली अपनौ बार २ सिर नाय । गदहा दोनों हम को दैदे तो होय पूरन काम हमार । गदहा दोनों दये जोगिन को लादी धरी शीश पै जाय ॥ दै के दुआ जुनेला चलिभये पहुंचे मठिया के दरम्यान। सुभिया बोलति है सुनमा सों बहिना सुनों जिठानी बात। अपनौ २ जादू लयके अपनो २ हुनर दिखाय । असली सूरत सबकीं करिदेव अपने मन्त्र करौ तैयार ॥ वीर सुमरि के सुनमा रानी सो आल्हा पे दयो चलाय । असली सूरति भई आल्हा की अब सोभा के सुनौ हवाल। मेढ़ा बुकरा करे सजीवन गजमोतिन को सुनौ हवाल । भैरों बारे जादू लयके सो गदहन पै दयौ चलाय जितने सूर महोवे वारे सो सब भये सजीवन क्यार । सिबरे सूर सजीवन हुयगये तब ऊदनि ने दियो जवाब ॥ सुनमा सोभा और गजमोति सबहैं जादू की भरपूर । जितने घरीआ ते महुवे के सो सब भये सजीवन आय । अकिलौ इंदल वरौना मेरो सोइ रहो मठिया के मैदान ॥ इन्हें छोड़ि कै जौ हम जावें जानौ जनो ओर को जाय । सब ने हाथ धरे कानन पय काबू नहीं बनाफर राय ॥ जादू टौना जो कछु होतो तौ हम लड़ते काल सों जाय । आदि कमिक्षा हि जगमाया इनसे हमरी नहीं बसाय । इतनी सुनि के हिलकी भरिके अरपी लखी बरौना क्यार ॥

जबाब ऊदनि को कुड़रिया।

इन्दल की अरथी लखी छांड़ि २ डड़कार। महामोह की ज्वाल में खेंचिलई तलवारि॥ खेंचिलई तलवारि कोपि आल्हा सों बोले। दया न आई ताहि अधरमी सनमुख डोले। गावत टीकाराम देखि अरथी निज सुत की तोय न आयो काल देखि अरथी इन्दल की

जबाब सुनमा को कुड़रिया।

उदैराज देवर मेरे धीर धरौ मनमांहि। प्रान घात के करन से इंदल मिलनौ। नाहिं इन्दल मिलि है नाहिं दिवर सुन ऊदनि मेरे तुमसे मिले न दिवर इन्दल से पुत्र घनेरे॥ गावत टीकाराम ज़िकर छोड़ौ लालन को फुलवा रहो सुहाग दाग़ छूटो सासुल को

जबाव ऊदनि को कुड़रिया

कैसे मैं धीरज धरूं भावी चतुर सुजान। इन्दल वेटा के बिना खोवैं अपने प्रान॥ खोवैं अपने प्रान धिरक है जीवन मोको। मोहित सुत दयौ खोय धन्नि भोजी है तोको॥ मोहित काटौ शीश पूत मढ़िया में जैसे॥ अरथी दें व मिलाय शीश हम काटैं तैसे॥

ऊदनि को करुणा करना दोहा।

जीवन प्रान अधार मम हाय इन्दलसी लाल। मेरे पीछे कहा भयो कुंवर तेरो वेहाल॥ कहीं शीश कहीं धर परौ कहूं रक्तकी धार। चुभती धरती होयगी सोवत मढ़ी मझार॥ देवय दादी टेरती भोजन कीजै लाल। देर न कीजे लाड़ले हाय भतीजे लाल। एकबार चाचा हमैं कहिके टेरो लाल॥ देर भतीजे जो करै निज सिर झारूं लाल॥

जबाब मलिखान को ऊदनि सों दोहा॥

इन्दल २ रटि रहौ कहां इन्दलसी तात। जा माटी कौ ढेर है किस को रोवे भ्रात॥ किसको लेवे गोदमैं किसकी पहुंछे धूरि। चाचा २ को कहै भजिगयौ लालन दूरि॥

॥ अब ऊदनि को क्रोध करके देवी कों जबाब॥

कुंअर रगतु थोरो कढ़ौ भूखी रहि गई रांड़। करि हों अपने खून सौं पूरन खपरा छांड़॥ पूरन खपरा रांड़ भरौ गौ अब ही तेरौ। लेउ सब कुटम जुहार भतीजै मिलौं सवेरौ॥ गावत टीकाराम सांगि लै सनमुख ठाड़ौ॥ कंपी कमिछा माय वैठि गयो जीमैं जाड़ौ॥ ऊदनि अरमन

कठिन हट तेगा लीनौं हाथ ॥ सिंघासन हालन लगौ कपे भगवती मात। सत सनेह लखि धवल को हलौ सिंघासन माय ॥ प्रगट भई निज भगत हित फोरि रसातल धाय ॥ छंद आल्हा ॥

कंपि पेंडुरी गई देवीकी धधका भयो शारदा माय। है बरदानी पारब्रह्म को बबरावाहनके औतार॥ जेना सरि है काहू हालत सों अनहक हुइ है हसी हमार। तब करु गहि लयौ महारानी ने धीरज धरौ लहुरवा भाय करौं सजीवन तेरे लालनको धरसों दीजै सीस लगाय। बुरबारनको सब कोऊ डरपत पेटै कंपी भमानी माय ॥ चली भमानी है मठिया से राजा इन्दर के दरबार। इन्दर हहुंचे शेश नाग पै अमृत दयौ सार धैआय॥ लैके अमृत मुख मैं डारो जी कैं उठे परोना लाल॥ जैजै शब्द भयो मठिया मैं बोलन लगी भवानी माय ॥ चचा कन्हैया तेरी कन्हैया अम्बर करौ उदैचंदलाल ॥ चाहौं मारौ चाहैं पुचकारौ चाहौं गोदी में लेव उठाय ॥ उठि कैं ऊदनि ठाड़ो हुइ गयौ इन्दल छाती लयों लगाय॥ जितने घरौआ ते महुबे के जै जै बोलैं मठी मझार॥ जितनी त्रियां ती मठिया मैं सो सब नचति बधाई ब्यार। अस्तुति गाई है देवी की वाही देव कुंअरके लाल॥ जै जगदम्बा जै जगदम्बा अम्बा धन्यकालका माय॥ जैजग माया कीनी दाया अम्बर इन्दल दये करवाइ॥ब्रह्म प्रकाशिन कमरू बाशन लैके लाल दयो गहाय। अस्तुति वानी सुनी भवानी हरषानी हुय दयौ जबाब॥ विजै तुम्हारी होय कांवर मैं कहि कैं चली रसातल धाय। पूजि कमिच्छा महुबे वारे और लश्कर मैं पहुंचे जाय॥ पंजा धरि दयौ तिरलोकी ने फिर के अजै खम्भ घहरांय॥ होनिहार सोइ हुय कैं मिटि है सत के बीच श्री भगवान। सतु जिन छोड़ौ कोई डानियां मैं सत सम और मूरि नहिं आन ॥

॥ अब सूरज वा कामशाह की तीसरी लड़ाई ॥

कुड़रिया ॥ सत के बांधे देवता थमौं जिमी असमान। सत की बांधी लछमी फेरि मिलति है आन॥ फेरि मिलत है आन जगत मैं जो सतधारी॥ हरिचंद जीते सत्तु मिलो सुत धनु औ नारी॥ गावत टीकाराम नतीजा देखो सतके। इंदल अम्मर करे गई देवी जी कपके॥

आल्हा बोलत हैं सैंयद सों चाचा सलहा देव बतलाय। वो लैं सैयद तब आल्हा सों राजै खबर देव पठवाय। जो लड़बेकी इच्छा होवै तो मैदान

गही तरवार ॥ हारी लिखि देव गौनो करदेव तो हम कूंच जायं करवाय लैके पाती दई हरिकारे और कांउर कों दयो पठाय ॥ लै पाती हलकारा चलि भयो पहुंचो कामशाह दरवार ॥ पाती बांची कामशाह ने जरकैं हुकम दयो करवाय ॥ आई भावई उन मलिखे की अरि हैं मीच सिरानी आय ॥ जितनी साहबी तो राजा के सब एक ही संग लई सजाय ॥ जितनी तिरियां जादू वाली सब एक ही संगलईं सजाय ॥ नंगिया तेलिन भगिया धोबिन जादू फेरिं करे परचंड ॥ घोड़ा साजत है सूरज को हाती कामशाह तैयार । मारू डंका के बाजत खन सज गई तीन लाख तरवार जुतो अराबा है तोपन के हलका हुके हातियन क्यार ॥ डंका बाजौ काम शाह को धरती मागै धरम दुआर ॥ रानी कहि ये जो सूरज की थोरी उमर सलौ नौ गात ॥ सुनी खवरियां रन खेतनकी तब बांदी कौं दयौजबाब कंथ हमारे कौं लै ऐयो सिर्री हुय गये ससुर हमार॥ दबगई लौंडी जब बंगला कौं और सूरज कौं दियौ जबाब ॥ जल्दी चलिखे संग हमारे रानी तुमरी रहीं बुलाय ॥ उठो अचानक बंगला में से और महलन मैं पहुंचो जाय ॥ तख्त डार दौ है रानी ने तकिया सात दये लगवाय ॥ सौ नै की पिढ़िया पै बैठति है पंखा लेत पदमिनी नारि ॥ काहे स्वामी बहिमी हुइ गये काहे परी ग्यान पै गाज । दूनिया जानत है ललिखे कौं है रन बाघ महोवे क्यार ॥ आखिर कुशमा कनवज जैं हैं कांवर कटै जिंदगी नाहिं ॥ अम्बर चुरी हमारी कर देव बहिन की दीजौ बिदा कराय ॥ कै रंडिया होय बहिन तुम्हारी कै होइ रांड़ सुहागिल नारि ॥ दौनौ तिरियां हार तुम्हारी सुलहै मैं सकल कलह कटिजाय ॥ अरजी हमारी मरजी तिहारो अप गरजी की कहा बसाह ॥

॥ सूरज की रानी कों सपना देखना ॥

सवैया ॥ जात विवाहन कों सूरज्ज भये सपने कपिरीछ बराती ॥ गाबत जंबुक बाघ सो गीतन छाबत मंडप गीध भंगाती ॥ गहरेई भूषन गहरेई माल सों पाग रंगी गहरे रंग राती ॥ पांच सखीं मिलि तेल चढ़ावैं जा सपने धर की मेरी छाती ॥ ॥ छंद आल्हा ॥

आंसू भर २ रोवै पल २ रह २ लेत उसासैं जाइ ॥ कही हमारी पीतम मानौ बांधी छोर धरी तरबार ॥ इतनी सुन कें सूरज बोले रानी मानी कही हमार ॥ जौ हम बैठ रहैं घर माही तौ का अमवर भये जगमाह ॥ जौ मर जै हैं समर भूम मैं साको चलो अगारूं जाय ॥ इतनी कहि कैं

भरि कैं भरि कैं तब रानी को दियो जबाब ॥ असगुन तिरिया पहिलैंई कर दयो जो तैं आंसू दये बहाय ॥ उठ कें सूरज रम तो हुइ गयो अब तिरिया की सुनो हवाल ॥ पांय के बिछुआ उसलन लागे टिकुली माथे तैं गिर जाय ॥ करकों चूरी हुई गई चूरी धूरी रही देह पै छाय ॥ नैन को कजरा हिय को गजरा उतरा पान फूल रस जाय ॥ रेशम चोली परि गई झोली ढोली फिरत बदन पै आय ॥ असगुन भारी देख दुखारी जारी नीर नैन से जाय ॥ लागौ धधका जी मनु भड़का पलिका गिरत मूरछा खाय ॥ जागति हुय गई है पद्मिन की अब सूरज की सुनौ हवाल पांव रकेब दयो सूरज ने सनमुख छींक तड़ाका खाय ॥ दहिने स्यारिन बां हैं कागा करुआ नाग काटि गौ राह ॥ टैं टैं २ करैं टिटुहिआ ऊपर गीध रहे मड़राय ॥ असगुन होन लगे सूरज कों रीते घड़ा उठे घहराय ॥ असगुन देखत खन राजा कें आंसू रहे नैन मैं छाय ॥ राजा जानी अपने मन मैं जियतन मिलि हैं लला हमार ॥ तब सूरज सौं राजा बोले बांधी छोरि धरौ तरवार । सूरज बोलत है राजा सौ दादा सुनौ बघेले राय ॥ बनिया बाटू हम नाही हैं हम हैं छत्री बंश औतार ॥ सुनौ अब सुनौ सूरज करि गये दमदम हल्ला दयौ कराय ॥ मनौ असाढ़ मैं आंधी उमड़ी टाड़ी उमड़ें फोरि पहार ॥ फौजें दाब दई कांवर से अरु खेतन में दई लगाय ॥ पाती भेज दई सूरज ने सिरसा बाले वीर मलखान ॥ जितने आये मेरी कांवर मैं सिब इक संग गहौ तरवारि॥ मिटि अभिलाषा जाय जियरा की खेलौ चका भमर की मारु । चलौ झांकिया है सूरज को मल-खे को पाती दई गहाय ॥ पाती बांचत खन मलिखे ने मारू डंका दयो बजाय ॥ जितने राजा संग मैं आये अरु सब सूर महोबे क्यार ॥ सजी साहबी सब राजा ने की जो रन बाघ महोबे क्यार ॥ चारौ ओरी अरु चौगिरदा धरती थहर २ थहराय ॥ कढ़ी पाइगा है घोड़न की पैदल पलटन भई त्यार ॥ फौजें साजति हैं अल्हा की नहिं दंगल की कछू सम्हार कंपू साजत चंदेले के बारह तुरप होत तैयार ॥ अब कल नाहीं हैं ऊदनि कौं घोड़ा बढ़ौ अगारू जाय ॥ कामशाह के जाय मुहरा पै बोलौ सूर बीर मलिखान ॥ काहे राजा कामशाह जू क्यों मति तुम्हरी गई हिराय ठ्याही ठाही|कुशमा घरमैं सोका वदी समानी जाय ॥ आखिर कुशमा

कनवन जैहैं का कहुं अन्त दैहौं पठवाय ॥ हारी जिख देव गौनौ करि देव देवी शीश पुत्र को आय ॥ कहे हमारे कौ दुख पाओ तौ लखि लींजौ नैक मैं आय ॥ चाय न पूरे वा ऊदनके भड़कल फिरत लहुरवा क्यार दुनियां जानत है मलिखे कौं मैं सूरनके करौं अहार ॥ रोम २ बाहैं गांसी लागै लागै हाड़ २ तरवार । जौ लौं कांधे पै सिर रहि है तौलौं —— खेत तरवार ॥ जियत २ की गिंती नाहीं मरि गयें मारीं बीस हजार ॥

जवाब मलिखान को कामशाह सों ॥ ॥ कवित्त ॥

चोट कौं सम्हार तू गमार दिखा शूरताई समर है गुलाम ना बजाय बो है गाल की । कहै तौ छनक मैं शिर धरसें उड़ाऊं कहै कूटि २ कीमा करि देंव कपाल की ॥ कहै रुंड मुंड भुज दंड खंड २ करूं प्रवल प्रचंड वार कनिका के लाल की ॥ ऊदनि संग दगा करी भकवी मैं गिराय दियो जानी ना प्रताप तैं मलिखान महा काल की ॥ २ ॥ छन्द आल्हा

बोलन २ वतबड़ हुय गयी तोपन मैं दई आग लगाय ॥ धुआं उड़ानौं चहुं चक्किन कौं चारो लंग सूझ परै अंधियार ॥ कहुं २ गोली कहुं गोला कहुं २ परी तीर की मार ॥ अर अर अर अर गोला छूटैं गोली सनन सनन सनाय ॥ चुकै मसाला है पेटिन के लम्बे बंद करे हथियार । पैंती खुलि गई रजपूतनकी अब निरलोभ चलै तरवार ॥ खनन्न खननन खन२ खन २ खांड़ौ बजै खटाका खाय ॥ चट २ चट २ चलै तमंचा चटकत चित्त सूरमा क्यार । एक बेर कें दवना करि दई भाजी फौज बुन्देला क्यार ॥ भजे सिपाही कांडर वाले पाछैं परे वीर मलिखान ॥ लखी तमाशौ काम शाहनै धनि रैसूरवीर मलिखान ॥ दहिने गंगिया तेलिन ठाड़ी तबि कै राजा लगे बतान । फौज हमारी भाजन लागी जादू गिरै अर मैं जाय तबिकैं पुरिया लै जादू की सो फौजन मैं दई चलाय ॥ धार बांधि दई है तेगनि की आंधे लुम बघेरन क्यार ॥ दुसरी पुरिया छोड़ी गंगिया भगिया जादू दयौ चलाय। कोई फौजें हिरना करि दईं कोई २ पथरा दईं कराय जागति देखी जब मलिखेने तब ढूंदल सौं लगे बतान ॥ जल्द बुलाओ सीमैं सुनमैं अब है जादूकी भरमार। ढूंदल बोलत है सुनमा सौं माता सुमियो अरज हमार ॥ गंगिया भगिया जौहर करि दयो करि दई जादू की भरिमार। जल्दी चलिओ तुम लशकरकौं अरु सोभा लेव संग लिवाय

कीरत सागर पर-

भुजरियों की लड़ाई

प्रकाशक—मैनेजर दूधनाथ प्रेस सलकिया हवड़ा मूल्य ≡)

कीरति सागर पर

भुजरियों की लड़ाई

दो०—सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश।
पांच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश॥

॥ आल्हा ॥

सुमिरन करिके नारायण को ❀ लैके रामचन्द्र को नाम॥
लिखौं लड़ाई अब सागर की ❀ शारद मोपर होउ सहाय॥
लगो महीना जब सावन को ❀ घर घर होय तीज त्योहार॥
परे हिंडोला हैं घर घर में ❀ सखियाँ गाव राग मलार॥
बेटी चन्द्रावलि मल्हना की ❀ जो महुबे की राज कुमारि॥
झूला झूलै सावन गावै ❀ लै लै नाम बनाफर क्यार॥
करै याद आल्हा ऊदन को ❀ नैनन बहै नीर की धार।
नाम लेय जब नर मलिखे को ❀ तबहीं रोय उठै तत्काल॥
चलि भये माहिल गढ़ उरई ते ❀ औ दिल्ली की पकरी राह॥
पाँच रोजकी मंजिल करिके ❀ गढ़ दिल्ली में पहुँचे जाय॥
जहाँ कचहरी पृथीराज की ❀ माहिल तहाँ पहूँचे जाय॥
करी बन्दगी महाराज को ❀ राजा चौकी दई डराय॥
आवो आवो उरई वाले ❀ अपनो हाल देउ बतलाय॥
बोले माहिल पृथीराज ते ❀ अबना राखौ देर लगाय॥
चलिकै लूटि लेउ जल्दी ते ❀ सूनो परो महोबा गाँव॥
इतनी सुनतै पृथीराज ने ❀ अपनो हुक्म दियो फरमाय॥
फौज सजाय देउ जलदी ते ❀ लश्कर जल्द होय तैयार॥
बजो नगारा तब दिल्ली में ❀ सिगरी फौज भई तैयार॥
आदि भयंकर को सजवायो ❀ तापर चढ़े पिथौरा राय॥
चौड़ा धाँधू ताहर सूरज ❀ सरदनि मरदनि भये तयार॥
सजिकै भूप टंकवै आयो ❀ भूरा मुगल भयो तैयार॥

सात लाख ते पिरथी साजे ❀ लैके खुरासान गुजरात ॥
कूच कराय दियो दिल्ली ते ❀ औ महुबे की पकरी राह ॥
सात रोजकी मंजिल करि कै ❀ महुबे धुरो दबायो जाय ॥
लश्कर बाँटि दियो पिरथी ने ❀ औ महुबे को लियो घेराय ॥
कनवाँखेरे पर धाँधू ने ❀ अपने डेरा दियो डराय ॥
चंदन बगिया में पिरथी ने ❀ अपने तम्बू दिये तनाय ॥
कोउ परि गयो मदन तालपर ❀ कोउ बैरागि तालपर जाय ॥
खजुहा गढ़में कोऊ परि गयो ❀ कोऊ लोहर गाँव मैदान ॥
बारह कोसी चौगिर्दा में ❀ झण्डन रही लालरी छाय ॥
सिगरी रैयति गढ़ महुबे की ❀ मनमें काँपि काँपि रहिजाय ॥
रानी मल्हना सोचन लागी ❀ अबना रहिहैं धर्म हमार ॥
लई आरती औ सामग्री ❀ देवी के मठ पहुंची जाय ॥
करिके पूजा जगदम्बे की ❀ मल्हना होम दियो करवाय ॥
हाथ जोरि के मल्हना बोली ❀ माता राखौ धरम हमार ॥
पिरथी घेरो नगर महोबा ❀ संकट परो नगर पर आय ॥
होउ सहायक अब माता तुम ❀ औ गाढ़े में आवौ काम ॥
सपना देउ जाय ऊदन को ❀ माता मेरि अम्बिका माय ॥
आभा बोली तब देवी की ❀ रानी धीर धरो मन माहिं ॥
काम तुम्हारो पूरन होइहैं ❀ ऊदन ऐहैं नगर महोब ॥
मल्हनाचलिभइतबमहलनको ❀ कनउज गईं शारदा माय ॥
आधी राति केर अमला में ❀ सपना दियो अंबिका माय ॥
ऊदन सोवत थे बंगला में ❀ तिनते देबी लगी बतान ॥
पृथीराज घेरो महुबे को ❀ संकट परो नगर पर आय ॥
थर थर काँपै सिगरी रैयति ❀ कोऊ रिंधे भात ना खाय ॥
फाटक बन्दी है महुबे में ❀ बहिरो आवै न भितरो जाय ॥

तुम सोवतहौ सुख निन्दिया में ❁ है दुख नींद रजा परिमाल ॥
जल्दी पहुँचौ तुम महुबे को ❁ राखौ धर्म चँदेले क्यार ॥
पवनि करावो चन्द्रावलि को ❁ औ भुजरिनको देउ सेरवाय ॥
यहि विधि सपने में देबी ने ❁ कहि दियो हाल महोबे क्यार ॥
सुनते सपना यह सोवत में ❁ ऊदन उठे भरहरा खाय ॥
ढेबा बहादुर ते सपने की ❁ सबियाँ हाल कह्यो समुझाय ॥
पिरथी घेरो नगर महोबा ❁ दादा सगुन देउ बतलाय ॥
पवनी खोटी जो होइ जैहैं ❁ तो जग होइहैं हँसी हमारि ॥
ढेबा बोले तब ऊदन ते ❁ जल्दी कूच देउ करवाय ॥
करो बहाना तुम आल्हा ते ❁ लाखनि राना संग लिवाय ॥
करौ तयारी अब जल्दी ते ❁ गुजरै घरी २ पर वार ॥
करि सलाहदोनोंचलिपहुँचे ❁ जहँ पर हते कनौजी राय ॥
करी बन्दगी बघ ऊदन ने ❁ औ लाखनि तेकह्यो हवाल ॥
सपनो दियो हमहिं देबी ने ❁ हमरे काम सिद्ध होइ जाय ॥
होत सलीनों है महुबे में ❁ ऐसी कहूँ होत है नाहिं ॥
बोले लाखनि तब ऊदन ते ❁ महुबा हमहिं देउ दिखलाय ॥
ऊदन बोले तब लाखनि ते ❁ जान न दिहैं तुमहिं महराज ॥
तासे चर्चा ना करियो तुम ❁ की हम नगर महोबे जाहिं ॥
करो बहाना तुम गाँजर को ❁ की हम खेलन जात शिकार ॥
यह सलाहकरितीनोंचलिभये ❁ औ जयचन्द कचहरी जाय ॥
करी बन्दगी महाराज को ❁ तब जैचंद ने कही सुनाय ॥
कहँकी त्यारी तुमने कीन्हीं ❁ यह सुनि कही उदैसिंह राय ॥
संग जात हैं हम लाखनि के ❁ गाँजर खेलन जायँ शिकार ॥
आज्ञा दैदेउ तुम लाखनि को ❁ तब जैचन्द ने दियो जवाब ॥
जो कछु तुम्हरे मनमें आवै ❁ सोई करो उदैसिंह राय ॥
हुक्म पाय यह तीनोंचलिभये ❁ त्यारी करन लगे तत्काल ॥

पूछो आल्हा तब ऊदन ते ❀ कहँ जैबे को भये तयार ॥
बोले ऊदन तब आल्हा ते ❀ लाखनि खेलन चले शिकार ॥
संग जात हैं हम लाखनि के ❀ दादा हुक्म देउ फरमाय ॥
बोले आल्हा तब ऊदन ते ❀ भैया खेलन जाउ शिकार ॥
पै नहिं जैयो नगर महोबे ❀ यहसुनि ऊदन दियो जवाब ॥
जियत महोबे हम जैहैं ना ❀ कागा मरे हाड़ लै जाय ॥
यह कहिचलिभैऊदनबाँकुड़ा ❀ औ लश्कर में पहुंचे जाय ॥
हुक्म कराय दियो लाखनि ने ❀ लश्कर डंका दियो बजाय ॥
बजो नगारा तब लश्कर में ❀ सिगरी फौज भई तैयार ॥
ठाढ़ी देवै दरवाजे पर ❀ सो ऊदन ते लगी बतान ॥
कहाँकी त्यारी तुमने कीन्ही ❀ तब ऊदन ने कही सुनाय ॥
साथ जात हैं हम लाखनि के ❀ गांजर खेलिहैं जाय शिकार ॥
बोली देवै तब ऊदनते ❀ तुमना जैयो नगर महोब ॥
चरण लागिकै तब माताके ❀ तुरतै चले उदय सिंहराय ॥
सोनवाँ ठाढ़ी थी खिरकी में ऊदन तहाँ पहूँचे जाय ॥
पूछन लागी सोनवाँ रानी ❀ कहँको डंका दियो बजाय ॥
बोले ऊदन तब सोनवाँ ते ❀ भौजी सुनो हमारी बात ॥
हाल बतैयो ना दादा ते ❀ जियतै होइहैं मरन हमार ॥
जो सुनि पै हैं दादा आल्हा ❀ हमको घरते दिहैं निकारि ॥
महुबा घेरो पृथीराज ने ❀ बहिरो आव न भितरो जाय ॥
पृथीराज लुटिहैं महुबे को ❀ तौ जग होइहैं हँसी हमारि ॥
करी तयारी हम महुबे की ❀ लाखनि ढेबा हमरे साथ ॥
यहसुनि सोनवाँ बहुत खुशी हो❀ बघऊदन ते लगी बतान ॥
धन्य धन्य हमरे देवर तुम ❀ तुमबिन कौन करे यह काम ॥
जल्दी जावो तुम महुबे को ❀ भारी विपदा देउ नशाय ॥
चलिभैं ऊदन तब आगे को ❀ औ लश्कर में पहुँचे जाय ॥

ढेवा बहादुर आगम जानैं ❀ योगिन गुदरी लई सिलाय ॥
कूच कराय दियो कनउज ते ❀ औ महुबे की पकरी राह ॥
तीनि रोजकी मंजिल करिके ❀ नदि बेतवे पर पहुँचे जाय ॥
छकड़न गेरू तहाँ मँगवाई ❀ सो घोरवाय लियो तत्काल ॥
कपड़ा रँगवाये योगिन के ❀ लश्कर योगी लियो बनाय ॥
राति बसेरा करि नद्दी पर ❀ भोरहिं होन उतारा लाग ॥
नदी पार होइकै योगिन ने ❀ अपने डेरा दियो लगाय ॥
मीरा सैयद लाखनि राना ❀ ढेबा ऊदन भये तयार ॥
गुदरी पहिरिलई योगिन की ❀ अपने बाजा लिये उठाय ॥
लियो यकतारा मीरा सैयद ❀ ढेबा खँझरी लई उठाय ॥
लई बाँसुरी बघऊदन ने ❀ लाखन डमरू लियो उठाय ॥
चारो योगी गावत चलि भै ❀ शोभा कछू कही ना जाय ॥
बोले ऊदन नर ढेबा ते ❀ दादा सुनो हमारी बात ॥
पहिले देखिहैं गढ़ सिरसा हम ❀ पीछे चलिहैं नगर महोब ॥
इतनी कहिकै चारो योगी ❀ गढ़ सिरसा में पहुँचे जाय ॥
ऊजर खेरा देखि उदैसिंह ❀ मनमें ऊदन सोचन लाग ॥
देखो फाटक गढ़ सिरसा का ❀ उड़ि उड़ि काग बसेरा लेयँ ॥
हते बरदिया जो बगिया में ❀ सो योगिन ते लगे बतान ॥
यहँ पर आये तुम काहे सब ❀ कोऊ भीख दिवैया नाहिं ॥
सिरसा गढ़ केरो मालिक जो ❀ मारो गयो बीर मलिखान ॥
इतनी सुनतै ऊदनि रोये ❀ ढेबा छोड़ि दई डिडकार ॥
देखि बरदिया बोलन लागे ❀ बाबा हाल देउ बतलाय ॥
काहे बाबा तुम क्यों रोये ❀ क्या वे भाई लगैं तुम्हार ॥
बोले ऊदनि तब धीरे ते ❀ वे गुरु भैया लगत हमार ॥
मोह आय गयो हमहिं यहाँपर ❀ देखि न मिले बीर मलिखान ॥
कैसे मरण भयो मलिखे को ❀ सो तुम हमें देउ बतलाय ॥

बोले बरदिया तब ऊदन ते ❀ बाबासुनो हमारी बात ॥
पृथीराज दिल्ली ते आये ❀ लश्कर सात लाख लै साथ ॥
मारि भगायो नर मलिखे ने ❀ तबतो लौटि गये चौहान ॥
देन बधाई माहिल आये ❀ ब्रह्मा हाल दियो बतलाय ॥
माहिल हाल कह्यो पिरथी ते ❀ है पद पद्म बीर मलिखान ॥
चढ़ो पिथौरा फिरि दिल्ली ते ❀ औ धूरे पर करो मुकाम ॥
ऊभे खोदवाये धूरे पर ❀ तिनमें सांगैं दई गड़ाय ॥
घास फूस डरवाय उपर ते ❀ पटपर भूमि दई करवाय ॥
खाली राखे आधे ऊभे ❀ तहँ पर खड़े पिथौरा राय ॥
ऊभे पार खड़े ताहर रहे ❀ मारत आये बीर मलिखान ॥
करी बन्दगी पृथीराज को ❀ तब पिरथी ने कही सुनाय ॥
तुम्हरी ताहर की बरनी है ❀ सो तुम खेलो जूझ अघाय ॥
मलिखे जाना यह धरती है ❀ घोड़ी आगे दई बढ़ाय ॥
फाँदिके घोड़ी गई पटवा पर ❀ तुरतै भीतर गई समाय ॥
घाव सांगको लगो पद्म में ❀ तरवा फटो बीर मलिखान ॥
घोड़ी कबुतरी घायल होगई ❀ मुरछित भये बीर मलिखान ॥
तड़पी घोड़ी तब भीतर ते ❀ औ ऊपरको लाई निकारि ॥
सुलखे मारे गये पहिलेही ❀ ब्रह्मा छाड़ि दिये तहँ प्रान ॥
रनिगज मोतिन सत्ती हो गई ❀ आल्हा ऊदन को लै नाम ॥
रैयति जितनी थी सिरसा की ❀ सो सब जहँ तहँ गई बराय ॥
धोका दैके पृथीराज ने ❀ यहिविधि मारिदियेमलिखान ॥
बोले बरदिया ते ऊदन तब ❀ सति को चौरा देउ बताय ॥
ठौर बताई तब ऊदन को ❀ योगी तहाँ पहूँचे जाय ॥
देखिके ऊदन रोवन लागे ❀ हा दैया गति कही न जाय ॥
आभा बोली तब मलिखे की ❀ अबना मिलिहैं भाय तुम्हार ॥
रोये तुम्हरे कछु होइहै ना ❀ अब तुम जावो नगर महोब ॥

रोयकै ऊदन बोलन लागे ❀ हमना जैहैं नगर महोब ॥
थोरी दूर पर रहै चन्देले ❀ क्योंना तुम्हरी करी सहाय ॥
जियत महोबे हम जैहैं ना ❀ कागा मरे हाड़ लै जाय ॥
बोली आभा गज मोतिन की ❀ देवर सुनो उदैसिंह राय ॥
जल्दी जावो तुम महुबे को ❀ यहँ क्यों खाक बटोरी आय ॥
पृथीराज लुटिहैं महुबे को ❀ तुम्हरे जीबे को धिक्कार ॥
पवनी खोटी जो होइ जैहैं ❀ तो जग होइ हैं हँसी तुम्हारि ॥
ताते जल्द जाउ महुबे को ❀ उनकी पवनी देउ कराय ॥
जो तुम महुबे को जैहो ना ❀ देहौं शाप भस्म होइ जाव ॥
इतनी सुनतै योगी चलिभै ❀ औ महुबे की पकरी राह ॥
जबही पहुँचे वे फाटक पर ❀ दरवानी ने कही सुनाय ॥
हुक्म नहीं है महाराज को ❀ भीतर जान दिहैं हम नाहिं ॥
बोले ऊदन तब जल्दी ते ❀ भीतर भिक्षा मँगिहैं जाय ॥
नाम सुनौ हम गढ़ महुबे को ❀ महुबे बसत रजा परिमाल ॥
पारस पूजा है जिनके घर ❀ लोहा छुवत सोन होइ जाय ॥
फाटक खोलि देउ जल्दी ते ❀ यहकहिअलख जगावनलाग ॥
डारि मोहनी दइ द्वारे पर ❀ फाटक तुरत लियो खोलवाय ॥
गावत २ योगी चलि भये ❀ औ पनघट पर पहुँचे जाय ॥
मोहित होइ गई सब पनिहारी ❀ देखत एक पहर होइ जाय ॥
नैवा बाँदी रनि मल्हना को ❀ सो अपने मन सोचन लागि ॥
एक पहर पनिघट पर होइ गयो ❀ सिगरी प्यास मरे रनिवास ॥
बाँदी चलि भइ तब पनिघट ते ❀ रंग महल में पहुँची जाय ॥
रानी मल्हना जब गुस्सा भइ ❀ तब बाँदी ने कही सुनाय ॥
चारि योगिया हैं पनिघट पर ❀ तिनके रूप न बरने जायँ ॥
देखि तमाशा लेउ तिनको तुम ❀ रानी पैयाँ परौं तुम्हारि

बोली मल्हना तब गुस्सा होय ❀ हम पर विपति परी है आय ॥
नाच रंग तोका भावत है ❀ हमरे नैन ओट होइ जाउ ॥
हाथ जोरि तब बाँदी बोली ❀ रानी बार बार बलिजाउँ ॥
बड़े तेज धारी योगी हैं ❀ तुमरो काम सिद्धि होइजाय ॥
आज्ञा दै दइ तब मल्हना ने ❀ जल्दी योगिन लाउ बुलाय ॥
आई बाँदी तब जोगिन पै ❀ औ जोगिन ते कही सुनाय ॥
तुमहिं बुलायो है रानी ने ❀ अबहीं चलो हमारे साथ ॥
आये योगी तब ड्योढ़ी में ❀ देखो महल कनौजी राय ॥
बहुत खुशी भये लाखनिराना ❀ शोभा देखि देखि रहि जाय ॥
रूप देखिके उन जोगिन को ❀ मलहना रानी उठी रिसाय ॥
पेटु फरैहैं बाँदो तेरो ❀ तू छलियन को लाई बुलाय ॥
ये हैं लरिका पृथीराज के ❀ इनछल करी हियाँ पर आय ॥
बोले ऊदन तब रानी ते ❀ धर्मकी माता लगो हमारि ॥
हमतो लरिका हैं योगिन के ❀ दुबिधा छोड़ि देउ महरानि ॥
कुटी हमारी है गोरखपुर ❀ हमको रूप दियो करतार ॥
फिरि कै मल्हना बोलन लागी ❀ रहि रहि मेरो प्राण घबराय ॥
तुमहौ लरिका क्यहु राजा के ❀ साँची हमहिं देउ बतलाय ॥
कहाँ गुदरिया यह तुम पाई ❀ जिनमें जड़े जवाहिर लाल ॥
कानन कुंडल है सोने के ❀ सो कहँ तुमहिं मिले महराज ॥
यह सुनि ऊदन बोलन लागे ❀ माता सुनो हमारी बात ॥
कियो तमाशा गढ़ कनउज में ❀ राजा जैचँद को जहँ राज ॥
होय प्रसन्न तहँ महाराज ने ❀ हमको गुदरी दई सिलाय ॥
तिलका रानी मोहित होगइ ❀ सोने कड़ा दिये डरवाय ॥
तहंते पहुँचे हम रिजिगिर में ❀ जहं पर बसत बनाफर राय ॥
आल्हा ऊदन दुइ भैया हैं ❀ तहँ हम कियो तमाशा जाय ॥

कुण्डल पहिराये ऊदन ने ❀ चीरा कलँगी दई इनाम
नाम सुनो जब बघऊदन को ❀ रोवन लगी मल्हनदे रानि ॥
बेटा ऊदनको पाऊँ कहँ ❀ जो गाढ़े में आवै काम ॥
जोगियौ जैयो तुम कनउजको ❀ हमरी खबरि सुनैयो जाय ॥
याही दिनको हम पालो रह ❀ की असमय में ऐहें काम ॥
कुआँ बियाह्यो जब ऊदन ने ❀ तब हमते यह कियो करार ॥
प्राण निछावरि माता कीन्हे ❀ सो क्या भूलि गये यह बात ॥
तुमसुख निन्दिया में सोवत हो ❀ हम पर बिपति परी अब आय ॥
फिरि कै ऊदन पूछन लागे ❀ माता हाल देउ बतलाय ॥
कौन आपदा तुम पर परि गई ❀ जो तुम रोय २ रहि जाय ॥
बोली मल्हना तब ऊदन ते ❀ पिरथी घेरो नगर महोब ॥
धरी भुजरिया है महलन में ❀ सागर कौन देय सिरवाय ॥
कौन दुसरिहा पृथीराज को ❀ को ऊदनि बिन करै सहाय ॥
तौलों आइ गई चन्द्रावलि ❀ सो मल्हना ते लगी बतान ॥
छोटो योगी ऐसो लागे ❀ मानो मेरो लहुरवा भाय ॥
बाली मल्हना चन्द्रावलि ते ❀ बेटी सुनो हमारी बात ॥
काहे होइहैं ऊदनि योगी ❀ जिनकी जगजाहिर तलवारि ॥
करो इशारा तब लाखनि ने ❀ ऊदन नाम देउ बतलाय ॥
बोले ऊदन तहँ लाखनि ते ❀ नाहीं अबहिं बतैहैं नाम ॥
बोले ऊदनि रनि मल्हना ते ❀ पवनी तुम्हरो दिहैं कराय ॥
मल्हना बोली तब योगिन ते ❀ तुम भिक्षा के माँगन हार ॥
क्या गति जानो तुम लरिबे की ❀ कैसे पवनी देहौ कराय ॥
ऊदन होते जो महुबे में ❀ पवनी देते हमहिं कराय ॥
होते मलिखे या सिरसा में तो बनिजातो काम हमार ॥
तापर ज्वाब दियो ऊदन ने ❀ माता बचन करो परमान ॥
हम योगी हैं बंगाले के ❀ पवनी तुम्हरी दिहैं कराय ॥

मारि भगैहैं हम पिरथी को ❀ हम योगी हैं बुरी बलाय ॥
बोली चन्द्रावलि ऊदन ते ❀ जो तुम गंगा लेउ उठाय ॥
तौ हम जाने अपने मन में ❀ हमरी पवनी दिहौ कराय ॥
गंगा कीन्हीं तब ऊदन ने ❀ तौलों माहिल पहुँचे जाय ॥
देखि हकीकत माहिल लौटे ❀ पृथीराज पै पहुँचे जाय ॥
योगी चलिभे रंगमहल ते ❀ अपने लश्कर पहुँचे जाय ॥
बोले माहिल पृथीराज ते ❀ हमते कछू कही ना जाय ॥
आये योगी बंगाले के ❀ जादू पढ़ैं बीर बैताल ॥
गंगा कीन्हीं उन महुबे में ❀ पवनी तुम्हरी दिहैं कराय ॥
लड़े न जितिहौ तुम योगिन ते ❀ तासे कूच जाउ करवाय ॥
चुगली करिकै परिमाले ते ❀ हम निकराये बनाफर राय ॥
तब ना लूटो तुम महुबे को ❀ अब सब बिगरि गयो है काम ॥
पृथीराज तब पूछन लागे ❀ अब कछु यतन देव बतलाय ॥
कैसे लूटैं नगर महोबा ❀ तब माहिलने कही सुनाय ॥
होय पराक्रम जो तुम्हरे में ❀ तो योगिन को देउ भगाय ॥
पाछे लूटि लेउ महुबे को ❀ यह सुनि पृथीराज चौहान ॥
चौड़ा धाँधू को बुलवायो ❀ औ यह हुक्म दियो फरमाय ॥
जल्दी जावो तुम झावर को ❀ औ योगिनते कहो सुनाय ॥
कूँच कराय जाउ जल्दी ते ❀ नहिं कछु यहाँ तुम्हारो काम ॥
चौड़ा धाँधू दोनों चलिभे ❀ औ योगिन पै पहुँचे जाय ॥
हाथ जोरिके दोनों बोले ❀ बाबा कूच जाव करवाय ॥
बोले ऊदन तब दोनों ते ❀ हम पन्द्रह दिन करैं मुकाम ॥
देखि सलीनो गढ़ महुबे को ❀ तब हम कूच दिहैं करवाय ॥
तापर ज्वाब दियो चौड़ा ने ❀ बाबा मानो बात हमार ॥
पृथीराज घेरो महुबे को ❀ चढ़िके महुबा लिहैं लुटाय ॥
गर्द बर्द बाबा होइजैहो ❀ ताते कूच देउ करवाय ॥

गुस्सा होइ तब ऊदन बोले ❀ क्यों नहिं बोलत बात सम्हारि ॥
जल्दी चले जाउ समुहें ते ❀ क्यों हम कूच जायँ करवाय ॥
आगे बढ़िगे चौड़ा धाँधू ❀ लश्कर देखो योगिन क्यार ॥
मन घबराय गये दोनों के ❀ पृथीराज पै पहुँचे आय ॥
हाल कह्यो सब बैरागिन को ❀ है बैरागी बुरी बलाय ॥
फौज परी है आठ कोस लौं ❀ तँबुअन रही लालरी छाय ॥
जो मुँह लगिहो उन योगिन के ❀ तौ सब जैहैं काम नशाय ॥
परे रहन देउ तुम योगिन को ❀ अपनो लीजौ काम बनाय ॥
यहि बिधि बीते दिन संकट में ❀ अब दिन परो सलीनो आय ॥
ठाढ़ी मल्हना सतखंडा पर ❀ देखैं बाट योगियन क्यार ॥
पहर एक होइ गयो अंटा पर ❀ नाहीं योगी परे दिखाय ॥
बोली चन्द्रावलि मल्हना ते ❀ पवनी कौन दिहैं करवाय ॥
गंगा करि गे रहैं योगी हियँ ❀ सोऊ नाहीं परत दिखाय ॥
मल्हना समझावै बेटी को ❀ बेटी मानो बात हमारि ॥
लेउ भुजरिया तुम महलन ते ❀ सो कुँवटा में देउ सिराय ॥
रोवन लागी तब चन्द्रावलि ❀ लै लै नाम बीर मलिखान ॥
माहिल आये तब महलन में ❀ सो मल्हना ते लगे बतान ॥
डाँड़ पठाय देउ पिरथी को ❀ अपनो करो सलीनौ जाय ॥
बोलन लागी रनि मल्हना तब ❀ क्या हम डाँड़ देय पठवाय ॥
माहिल बोले तब मल्हना ते ❀ यह कहि दियो बीर चौहान ॥
हार नौलखा शहर ग्वालियर ❀ लेइ हैं उड़न बछेड़ा पाँच ॥
बैठक लेहैं खजुहा गढ़ की ❀ डोला लेहैं चन्द्रावलि क्यार ॥
ब्याह रचैहैं सो ताहर संग ❀ पारस पूजा लिहैं अगार ॥
इतनी डाँड़ पठाय देउ तुम ❀ बहिनी मानो बात हमारि ॥
यहसुनि मल्हना रोवन लागी ❀ औ माहिल ते कही सुनाय ॥
डोला देहौं ना बेटी को ❀ चाहे लाख चढ़ैं चौहान ॥

पेटु मारि अपनो मरि जैहौं ❀ देहौं मया मोह बिसराय ॥
बोली चन्द्रावलि मल्हना ते ❀ यह ब्रह्मा ते कहौ हवाल ॥
चलि भै माहिल रंग महल ते ❀ पीछे चली मल्हनदे रानि ॥
लीन्हों संगैं चन्द्रावलि को ❀ औ ब्रह्मा पै पहुँची जाय ॥
चरण लागिकै तब माता के ❀ ब्रह्मा माथे लियो लगाय ॥
बोले ब्रह्मा तब माता ते ❀ आई यहाँ कौन से हेतु ॥
बोली मल्हना तब ब्रह्मा ते ❀ बहिनि कि पवनी देउ कराय ॥
धरी भुजरिया रंग महल में ❀ सो सागर में देउ सिराय ॥
सुनतै ब्रह्मा बोलन लागे ❀ हमना मूँड़ कटैहैं जाय ॥
तुमहिं भरोसा दियो योगिन ने ❀ सोई पवनी दिहैं कराय ॥
यहसुनि मल्हना रोवन लागी ❀ बेटी छाँड़ि दई डिंडकार ॥
देखि हाल यह अभई बोले ❀ बेटा जौन माहिल परिहार ॥
पवनी तुम्हरी हम करवैहें हैं ❀ अपनी त्यारी लेउ कराय ॥
दई चुनौती पृथीराज को ❀ हमते डोला लेयँ छुड़ाय ॥
बोले माहिल तब अभई ते ❀ बेटा अक्किल गई तुम्हारि ॥
जन्म के बैरी महुबे वाले ❀ तिनकी ओर लड़न ना जाव ॥
कही हमारी बेटा मानो ❀ घरमें बैठि रहौ चुप साधि ॥
तापर ज्वाब दियो अभई ने ❀ दादा सुनौ हमारी बात ॥
दोनों राजा हमहिं बराबर ❀ जगमें पृथीराज परिमाल ॥
पृथीराज मनमें जानो यह ❀ काऊ मर्द नगर में नाहिं ॥
बात कहि चुके अब मल्हना ते ❀ पवनी इनकी दिहैं कराय ॥
यह कहि अभई उडि ठाढ़े भे ❀ तुरत नगरची लियो बुलाय ॥
हुक्म दै दियो तब अभई ने ❀ लश्कर डंका देउ बजाय ॥
डंका बाजो तब लश्कर में ❀ चत्री सबै भये हुशियार ॥
पहले डंका में जिनबन्दी ❀ दुसरे बाँधि लिये हथियार ।
तिसरे डंका के बाजत खन ❀ चत्री फाँदि भये असवार ॥

हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगै ❁ बाँके घोड़न के असवार।
कोउ नालकिन कोउ पालकिन ❁ कोऊ गजरथ भये सवार॥
बेटा रञ्जित परिमाले को ❁ सोऊ साथ भयो तैयार॥
घोड़ी हिरौंजिनि त्यार कराई ❁ तापर रंजित भये सवार॥
सब्जा घोड़ा को सजवायो ❁ तापर अभई भये सवार॥
खबरि कराई रंगमहल में ❁ सिगरे डोला लेउ सजाय॥
डोला त्यार भये सखियन के ❁ चहुँ दिशि सब्जा परै दिखाय॥
सब्ज नालकी सब्ज पालकी ❁ तिनपर डारी सब्ज उहार॥
सब्जै झालरि है रेशम का ❁ वरदी सब्ज कहारन क्यार॥
सब्ज भुजरिया सब सखियनकी ❁ सब्जै झूला लिये सजाय॥
सब्जै रस्सा रेशम वाले ❁ सो झूलन को लिये धराय॥
यतनकरी एक मल्हना रानी ❁ सोऊ सुनि लेउ कान लगाय॥
जहर बुझाई एक २ छुरिया ❁ सब सखियन को दइ पकराय॥
मट्ठुका इक इक बाररूदन के ❁ सब पलकिन में दियो धराय॥
पत्थर चकमक लै मल्हना ने ❁ सबसखियनको दियो गहाय॥
डोला लूटैं पृथीराज जो ❁ तो तुम जहर खाय मरिजाउ॥
जहर नलाय मिले तुमको जो ❁ तौ तुम पेट्ठ मारि मरिजाउ॥
आगि लगाय लिओ डोलन में ❁ यह मलहनाने दियो सिखाय॥
यहसुनि सखियाँ बोलनलागीं ❁ हम सब देहैंप्राण गँवाय॥
जैहैं नाहिं जियत दिल्ली को ❁ माता बचन करो परमान॥
चौदह सै डोला सब सजिगै ❁ डोला बीच चन्द्रावलि क्यार॥
डोला आगे रनि मल्हना को ❁ बारह रानि चँदेले क्यार॥
आये डोला जब फाटक पर ❁ अभई रंजित चले अगार॥
चलतैं छींक भई समुहें पर ❁ तब रानीने कही सुनाय॥
असगुन होइ गयो चलते पर ❁ तुम ना चलो हमारे साथ॥

बोले अभई तब मल्हना ते ❀ हमना मनिहैं कही तुम्हार ॥
सगुन चाहिये उन बनियनको ❀ जे धरि मौर बियाहन जायँ ॥
सगुन चाहिये ना क्षत्री को ❀ जे रण चढ़िके लोह चबायँ ॥
करौ भरम नहिं तुम अपने मन❀ दुबिधा छाँड़ि देउ तत्काल ॥
चलि भै डोला तब महुबे ते ❀ सखियाँ गावैं राग मलार ॥
माहिल पहुँचे तब बगिया में ❀ औ पिरथी ते कही सुनाय ॥
रंजित अकिले हैं डोलन पर ❀ डोला सबै लेउ लुटवाय ॥
बोले पृथीराज चौड़ा ते ❀ अबहीं डोला लेउ लुटाय ॥
चलो चौड़िया तब बगिया में ❀ औ लश्कर में पहुँचो जाय ॥
लश्कर सजवायो जल्दी ते ❀ एकदंता पर भयो सवार ॥
कूच कराय दियो लश्कर को ❀ औ सागर पर पहुँचो जाय ॥

अभई रंजितकी चौड़ा आदि से लड़ाई ।

❀ आल्हा ❀

सुमिरण करिके नारायण को ❀ लैके रामचन्द्र को नाम ॥
लिखौं लड़ाई अब सागर की ❀ अभई रंजित को संग्राम ॥
देखो समुहें जब अभई को ❀ डोलन संग चौड़िया राय ॥
बोलो चौड़ा तब अभई ते ❀ अपनो हाल देउ बतलाय ॥
कहाँ की त्यारी तुमने कीन्हीं ❀ क्या यह डोला तुम्हरे साथ ॥
यह सुनि अभई बोलन लागे ❀ है त्यौहार महोबे क्यार ॥
आज सलीनो है महुबे में ❀ हम सागर को भये तयार ॥
हैं रखवारे हम डोलन के ❀ डोला संग मल्हनदे क्यार ॥
बीचमें डोला चन्द्रावलि को ❀ अपनी लिये भुजरिया जाय ॥
साखियाँ सिगरी हैं बेटी का ❀ सोऊ चली साथ में जायँ ॥
सुनि यह बात कही चौड़ाने ❀ डोला हियाँ देउ धरवाय ॥
पाँव बढ़ैयो ना आगे को ❀ नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥

बोले अभई तब चौड़ाते ❀ मुखते बोलो बात सम्हारि ॥
समुहें देखै जो डोलन के ❀ ताके नैन लेउँ निकराय ॥
गुस्सा होय तब चौड़ा ब्राह्मण ❀ लश्कर हुक्म दियो करवाय ॥
डोला लूटि लेउ जल्दी ते ❀ अबना राखो देर लगाय ॥
इतनी सुनतै सब क्षत्रिन ने ❀ अपनी खैंचि लई तलवारि ॥
बढ़े सिपाही दोनों दलके ❀ खटखट चलनलगी तलवारि ॥
पैदल अभिरि गये पैदल सँग ❀ औ असवारन ते असवार ॥
हौदा मिलिगे तब हौदा सँग ❀ हाथिन अड़ो दाँत से दाँत ॥
तीनि घरीभरि चली शिरोही ❀ औ बहिचली रक्तकी धार ॥
झुके सिपाही महुबे वाले ❀ रणमें कठिन करैं तलवारि ॥
भगे सिपाही चौड़ावाले ❀ अपने डारि डारि हथियार ॥
यह गति देखी जब चौड़ाने ❀ तब हाथी को दियो बढ़ाय ॥
समुहें जाय कही अभई ते ❀ तुम्हरो काल रह्यो नियराय ॥
गुर्ज उठाय लियो चौड़ाने ❀ सो अभई पर दियो चलाय ॥
सब्जा घोड़ा आगे बढ़ि गयो ❀ नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
घोड़ा बढ़ायो तब अभई ने ❀ औ मस्तकपर बाजी टाप ॥
करो जड़ाका इक हौदा पर ❀ छतुरी टूक टूक होइजाय ॥
सोने कलश गिरे धरती पर ❀ चौड़ा हाथी दियो भगाय ॥
हटिगयो मुर्चा जब चौड़ा को ❀ लश्कर तिड़ी बिड़ी होइजाय ॥
सुनो हाल जब यह पिरथी ने ❀ सूरज बेटा लियो बुलाय ॥
जल्दी चली जाउ सागर पर ❀ डोला सबै लेउ लुटवाय ॥
डोला लावो चन्द्रावलि को ❀ हमरो नजरि गुजारौ आय ॥
यहसुनि चलिभे तब सूरजमल ❀ लश्कर तीनि लाख सजवाय ॥
कूच कराय दियो लश्कर को ❀ राजा टंक संग सजैवाय ॥
जबही पहुँचि गये सागर पर ❀ सूरज बढ़िकै कही सुनाय ॥
डोला धरि देउ चन्द्रावलि को ❀ सुनि अभइ ने दियो जवाब ॥

नाम जो लेहौ तुम डोला को ❀ मुँहमें धाँसि दिहौं तलवारि ॥
समुहें दिखिहौ जौ डोलन के ❀ दोनों नैन लिहौं निकराय ॥
इतनी सुनतै सूरज जरिगै ❀ गुस्सा गई देह में छाय ॥
हुक्म दै दियो तब लश्कर में ❀ सब की कटा देउ करवाय ॥
खैंचि शिरोही लइ क्षत्रिन ने ❀ खटखट चलन लगी तलवारि ॥
चारि घरी भरि चली शिरोही ❀ लोथिन ऊपर लोथ दिखाय ॥
सूरज मल आगे को बढ़िगे ❀ औ रंजिततें लगे बतान ॥
खबरदार रहियो घोड़ा पर ❀ तुम्हरो काल रह्यो नियराय ॥
यह कहि गुर्ज लियो सूरज ने ❀ सो रंजित पर दियो चलाय ॥
घोड़ी हटी गई तब रंजित की ❀ नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
लई शिरोही तब सूरजने ❀ सो रंजित पर दई झुकाय ॥
तीनि शिरोही सूरज मारी ❀ रंजित लीन्हीं चोट बचाय ॥
कात्रा देके तब रंजितने ❀ अपनी लई शिरोही काढ़ि ॥
चेहरा मारो तब सूरजको ❀ बायें उठी गैड़की ढाल ॥
ढाल फाटि गइ सूरजमल की ❀ धरनी गिरे जाय मुरझाय ॥
देखि हाल यह टंकराज ने ❀ आगे हाथी दियो बढ़ाय ॥
सम्हरो ठाकुर तुम घोड़ापर ❀ यहकहि लीन्ही साँग उठाय ॥
अभई आय गये समुहें पर ❀ औ राजा ते कही सुनाय ॥
हम तुम खेलै रणखेतनमें ❀ दुइमें एक आँकु रहि जाय ॥
साँग उठाई टंकराज ने ❀ सो अभई पर दई चलाय ॥
चोट बचाय लई अभई ने ❀ अपनो भाला लियो उठाय ॥
दियो चलाय टंक राजा पर ❀ सो तोंदी में गयो समाय ॥
मुर्छित होइकै गिरे टंक तब ❀ लश्कर तिड़ी बिड़ी होइजाय ॥
चलो साँड़िया तब लश्कर ते ❀ पृथीराज पै पहुँचे जाय ॥
करी बन्दगी पृथीराज को ❀ औ लश्कर को कह्यो हवाल ॥
बिकट लड़ाई भइ सागर पर ❀ सूरज टंक जूझिगै जाय ॥

लाश उठाय लेउ दोनों की ❀ सुनि घबराय गये महराज ॥
सरदनि मरदनि औ ताहर को ❀ तुरतै राजा लियो बुलाय ॥
हुक्म दै दियो पृथीराज ने ❀ अपनो लश्कर लेउ सजाय ॥
सूरज टंक परे खेतन में ❀ जायके लाश लेउ उठवाय ॥
इतनी सुनि के तीनों चलि भै ❀ लश्कर तुरत लियो सजवाय ॥
अपने अपने तब घोड़न पर ❀ तुरतै फाँदि भये असवार ॥
कूच कराय दियो लश्कर को ❀ मारू डंका दियो बजाय ॥
लश्कर पहुँचि गयो सागर पर ❀ दोनों लाशैं लइ उठवाय ॥
सो पठवाय दई बगिया को ❀ अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
इक ललकार दई ताहर ने ❀ किनने मारो भाय हमार ॥
बोले अभई तब आगे बढ़ि ❀ हमने मारो भाय तुम्हार ॥
करन सलीनों हम आये हैं ❀ क्यों तुम लाये फौज चढ़ाय ॥
तापर ज्वाब दियो ताहर ने ❀ डोला देउ चन्द्रावलि क्यार ॥
बोले अभई तब ताहर ते ❀ अपनो जीभि लौटि मुँह दाबु ॥
अब जो नाम लिहौ डोला को ❀ तुम्हरो शीश लिहौं कटवाय ॥
यह सुनि ताहर गुस्सा होइगयो ❀ औ छत्रिन ते कही सुनाय ॥
अबहीं लूटि लियो डोला सब ❀ सबकी कटा देउ करवाय ॥
खैंचि शिरोही लइ क्षत्रिन ने ❀ क्षत्री बीर रूप होइ जायँ ॥
झुरमुट होइ गयो दोनों दलमें ❀ खटखट चलन लगी तलवार ॥
झुके सिपाही दोनों दलके ❀ सबके मारु मारु रटलागि ॥
आगे बढ़ि गयो ताहर ठाकुर ❀ औ रंजित ते लगे बतान ॥
डोला धरि देउ चन्द्रावलि को ❀ जो जीते सो लेय उठाय ॥
गुस्सा होइके तब रंजित ने ❀ अपनी खैंचि लई तलवारि ॥
चोट चलाई तब ताहर पर ❀ बायें उठी गैंड़ की ढ़ाल ॥
तीनि शिरोही रंजित मारो ❀ ताहर लीन्हीं चोट बचाय ॥
टूटि शिरोही गइ रंजित की ❀ ताहर खैंचि लई तलवार ॥

करो जड़ाका तब रंजित पर ❀ रंजित जूझि गये मैदान ॥
यह गति देखो जब अभई ने ❀ अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
इक ललकार दई ताहर को ❀ अब तुम खबरदार होइजाव ॥
खैंचि शिरोही लइ अभई ने ❀ सो ताहर पर दई चलाय ॥
ढाल अड़ाय दई ताहर ने ❀ अपनो लीन्ही चोट बचाय ॥
कावा देके तब ताहर ने ❀ तुरतै मारि दई तलवारि ॥
अभई गिरि गये जब खेतन में ❀ ताहर लीन्ही शीश उतारि ॥
मल्हना रोय उठी तुरतै तब ❀ औ बेटी ते कही सुनाय ॥
बात हमारी तुम मानी ना ❀ औ सागरपर आई लिवाइ ॥
दोनों लरिका खेत जूझिगे ❀ अबको रखिहैं धरम हमार ॥
बोली आभा तब दोनों की ❀ ब्रह्मै खबरि देउ पहुँचाय ॥
जौलौं ब्रह्मा हिय ऐहैं ना ❀ तौलौं रुंड करैं तलवारि ॥
जगे रुंड अभई रंजित के ❀ रणमें कठिन कियो संग्राम ॥
मुर्चा फेरि दियो ताहर को ❀ क्षत्री लै लै भगे परान ॥
एक हरकारा ते मल्हना ने ❀ भेजो खबरि महोबे माहिं ॥
चलो साँडिया तुरत फौज ते ❀ औ ब्रह्मापै पहुँचो जाय ॥
करी बन्दगी ब्रह्मानँद को ❀ औ सागर को कह्यो हवाल ॥
अभई रंजित रणमें जूझे ❀ चलि कै लाश लेउ उठवाय ॥
ताहर मारो है अभई को ❀ औ रंजित को दियो गिराय ॥

अथ ब्रह्मानन्दकी लड़ाई आल्हा।

सुमिरन करिके रामचन्द्र को ❀ लैके नाम बीर हनुमान ॥
युद्ध बखानौं ब्रह्मानँद को ❀ कायर सुनत होयँ बलवान ॥
पाई खबरि जबहिं लश्कर को ❀ ब्रह्मानद मन कियो बिचार ॥
अब जो जैहौं ना सागर पर ❀ हसिहैं हमहिं सकल संसार ॥
कियो उचित नहिं पृथीराज ने ❀ जो हियँ आय बढ़ाई रार ॥

आजु सामना करि सागर पर ❀ मरिहौं खेदि खेदि चौहान ॥
सोचि समझि यह ब्रह्मानंद ने ❀ तुरत नगरची लियो बुलाय ॥
बीरा दैके हुक्म दियो यह ❀ लश्कर डंका देउ बजाय ॥
डंका बाजो तब लश्कर में ❀ सिगरी फौज भई तैयार ॥
घोड़ा हरनागर सजवायो ❀ तापर ब्रह्मा भये सवार ॥
कूच कराय दियो लश्कर को ❀ औ सागर की पकरी राह ॥
चलिभै क्षत्री बीररूप होय ❀ डंका होत गोल में जाय ॥
हियाँ कि बातैं तो हियँ छोड़ो ❀ अब ताहर को सुनो हवाल ॥
ताहर आये फिरि मुर्चापर ❀ भूरा मुगल शूर लै साथ ॥
कठिन मारु देखा रुंडन को ❀ तब भूराते कही सुनाय ॥
लीलको झंडा फेरि देउ तुम ❀ भुइ में गिरे रुंड भहराय ॥
यह सुनि झंडा लियो लीलको ❀ सो रुंडन पर दियो फिराय ॥
रानी मल्हना के डोला पर ❀ दोनों रुंड गिरे भहराय ॥
तौलों पहुँचे ब्रह्मानद तहँ ❀ दोनों रुंड लियो उठवाय ॥
तुरत भेज दिये महुबे को ❀ औ क्षत्रिन ते लगे बतान ॥
निमक हमारो तुम खाये हौ ❀ सो हाड़न में गयो समाय ॥
पाँव न धरियो तुम पाछे को ❀ हमरो पवनी देउ कराय ॥
धर्म राखि लेहौ हमरो जो ❀ तौ हम तलब दिहैं बढ़वाय ॥
दियो बढ़ावा रजपूतन को ❀ क्षत्री बीर रूप होइ जायँ ॥
सुमिरन करिके नारायण को ❀ क्षत्रिन खैंचि लई तलवार ॥
सुमिर भवानी जगरानी को ❀ लैके हनूमान को नाम ॥
खैंचि शिरोही लइ ब्रह्मानंद ❀ खटखट चलनलगी तलवार ॥
भेड़हा पैठे जस भेड़िन में ❀ ज्यों बन सिंह बिडारे गाय ॥
त्यों ब्रह्मानंद रणमें पैठे ❀ क्षत्रिन काटि करी खरिहान ॥
मुर्चन मुर्चन नाचै घोड़ा ❀ ब्रह्मा कहैं सुनाय सुनाय ॥
भागि न जैयो कोउ समुहें ते ❀ यारो रखियो धर्म हमार ॥

ब्रह्मानँद की तहँ धमकनि में ❀ सबदल तिड़ीबिड़ी होयजाय ॥
झुके सिपाही महुबे वाले ❀ दोनों हाथ करैं तलवार ॥
भगे सिपाही पृथीराज के ❀ अपने छाँड़ि छाँड़ि हथियार ॥
यह गति देखी जब ताहर ने ❀ मन में बहुत गये घबराय ॥
दपटनि झपटनि ब्रह्मानँद के ❀ ताहर देखि देखि रहि जाय ॥
समुहें देखैं जब ब्रह्मा के ❀ ब्रह्मा काल रूप दिखरायँ ॥
सोचि समुझिके तब ताहर ने ❀ इक हरकारा दियो पठाय ॥
खबरि सुनाओ तुम राजा को ❀ जल्दी लावैं फौज चढ़ाय ॥
जो नहिं ऐहैं वे सागर पर ❀ तो सब जैहैं काम नशाय ॥
चलो साँड़िया तब लश्कर ते ❀ औ बगिया में पहुँचो जाय ॥
तौलौं आये माहिल राजा ❀ सो पिरथी ते लगे बतान ॥
जौहर कीन्हें ब्रह्मानँद ने ❀ रण में कठिन करी तलवारि ॥
करौ चढ़ाई अब ब्रह्मा पर ❀ तुरतै मुश्क लेउ बँधवाय ॥
डोला लै के चन्द्रावलि को ❀ महुबा नगर लेउ लुटवाय ॥
सुनतै पिरथी उठि ठाढ़े भे ❀ चौड़ा धाँधू लियो बुलाय ॥
हुक्म देदियो तब जल्दी ते ❀ अबहीं फौज होय तैयार ॥
डंका बाजै तब लश्कर में ❀ सिगरो लश्कर लियो सजाय ॥
दुइ सौ हाथी भूरा साजे ❀ दुइसौ मकुना लियो सजाय ॥
एक सौ हाथी खूनी साजे ❀ एकसौ मुड़िया लियो सजाय ॥
दुइसौ हाथी मुकुट बन्दनी ❀ सो सजवाय बीर चौहान ॥
एक सो हाथी मस्ता कहिये ❀ सो सजवाय पिथौरा राय ॥
आदि भयंकर को मँगवायो ❀ ताको तुरत लियो सजवाय ॥
चकमक पत्थर को हौदा धरि ❀ रेशम रस्सा दियो कसाय ॥
सिढ़ी लगाई मलया गिरिको ❀ औ चढ़ि गये बीर चौहान ॥
नौसै हाथी के हलका में ❀ आदि भयंकर झूमन लाग ॥
हाथी एकदन्ता सजवायो ❀ तापर चौड़ा भयो सवार ॥

हाथी भौरानँद सजवायो ❀ तापर धाँधू भयो सवार ॥
मारू डंका के बाजत खन ❀ लश्कर कूच दियो करवाय ॥
हाहाकारी बीतन लागी ❀ मानौ भई दिवस की राति ॥
लश्कर आयो जब सागर पर ❀ लश्कर जहाँ महोबे क्यार ॥
हुक्म दियो तब पृथीराज ने ❀ डोला तुरत लेउ लुटवाय ॥
खैंचि शिरोही लइ चत्रिन ने ❀ तुरतै चलन लगी तलवारि ॥
लश्कर देखो पृथीराज को ❀ बृह्मा मयामोह दियो छाँड़ ॥
प्राण हथेरी पर धरि लीन्हों ❀ दलमें घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
ज्यों किसान खेती को काटैं ❀ कतरे जैसे तमोली पान ॥
तैसे बृह्मा चत्री काटें ❀ चत्री लै लै भगे परान ॥
झपटनि दपटनि बृह्मानँद को ❀ देखैं खड़े बीर चौहान ॥
सोचें पृथीराज अपने मन ❀ धनि २ बृह्मा राजकुमार ॥
बड़े २ शूर रहे महुवे में ❀ एक ते एक वीर सरदार ॥
देखि लड़ाई बृह्मानँद की ❀ गुस्सा भयो चौड़िया राय ॥
समुहें जाय कह्यो बृह्मा ते ❀ अबतुम खबरदार होइजाव ॥
यहकहिगुर्ज लियो चौड़ा ने ❀ सो बृह्मा पर दियो चलाय ॥
घोड़ा हटिगयो बृह्मानँद को ❀ नीचे गुर्ज गिर्‌यो अरराय ॥
सोचन लागे बृह्मानँद तब ❀ समुहें ब्राह्मण खड़ा हमार ॥
हाथ चलैहौं जो ब्राह्मण पर ❀ तो रजपूती धर्म नशाय ॥
सोचि समुझि यह बृह्मानँद ने ❀ दियो समोहन बाण चलाय ॥
मूर्छित होइतबचौड़ा गिरिगयो ❀ मुर्छा हटा चौड़िया क्यार ॥
धाँधू आये तब समुहें पर ❀ औ यह मनमें सोचन लाग ॥
बृह्मा भैया हमरो लागें ❀ कैसे करों युद्ध ब्योहार ॥
जो नहिं लड़ौं साथ बृह्मा के ❀ गुस्सा होय पिथौरा राय ॥
यह मन समुझि लड़े धाँधू तब ❀ बृह्मा दीन्हों बाण चलाय ॥
धाँधू गिरि गे तब हौदामें ❀ सरदनि मरदनि पहुँचे आय ॥

सरदनि बाले तब ब्रह्मा ते ❁ समुहें डोला देउ धराय ॥
बोले ब्रह्मानँद सरदनि ते ❁ सरदनि अपनी जीभसँभारु ॥
नामजो ले है अब डोलाको ❁ मुँहमें ठाँसि दिहौं तलवारि ॥
गुस्सा हुइके तब सरदनि ने ❁ अपनी लीन्हीं तेग निकारि ॥
चोट चलाई ब्रह्मानँदपर ❁ बायें उठी गैंड़ की ढाल ॥
टूटि शिरोही गइ सरदनिकी ❁ ब्रह्मा खैंचि लई तलवारि ॥
चेहरा मारो तब सरदनि को ❁ सरदनि दीन्हीं ढाल अड़ाय ॥
ढाल फाटिगइ गैंड़ा वाली ❁ सरदनि गिरे धरनिपर जाय ॥
जूझे सरदनि जब खेतन में ❁ मरदनि खैंचिलई तलवारि ॥
चोट चलाई तब ब्रह्मापर ❁ ब्रह्मा लीन्ही चोट बचाय ॥
धार लौटि गइ तब तेग़ाकी ❁ ब्रह्म दीन्ही तेग चलाय ॥
छूटि जनेवा गयो मरदनिको ❁ ताहर घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
भई लड़ाई तहँ दोनों ते ❁ ब्रह्मा भाला दियो चलाय ॥
घोड़ी भगाय गये ताहर तब ❁ देखैं खड़े बीर चौहान ॥
चन्द्रभाट बोला पिरथी ते ❁ ब्राह्मण भक्त ब्रह्म सरदार ॥
जीति न सकिहैं कोउ ब्रह्माते ❁ ताते हाथ लेउ हथियार ॥
यहसुनि सोचे पृथीराज तब ❁ धीरसिंह ते कह्यो सुनाय ॥
बाँधि लेउ तुम ब्रह्मानन्दको ❁ औ सब डोला लेउ लुटाय ॥
यहसुनि चलिभे धीरसिंह तब ❁ औ ब्रह्मापै पहुँचे जाय ॥
आवत देखो धीरसिंह को ❁ तब ब्रह्मा मन कियो बिचार ॥
आजु अखाड़े में बरनी है ❁ आवत धीरसिंह सरदार ॥
बड़ो भक्त है यहु देवीको ❁ भारी शूर जगत सरनाम ॥
बोले धीरसिंह ब्रह्माते ❁ तुम सुनिलेउ 'हमारी बात ॥
डोला धरिदेउ तुम खेतन में ❁ है यह हुक्म पिथौरा क्यार ॥
यहसुनि ब्रह्मा बोलन लागे ❁ सुनियो धीरसिंह बलवान ॥
करौ सामना तुम हमरो यहँ ❁ ऐसो तुमहिं मुनासिब नाहिं ॥

हो तुम परम मित्र आल्हाके ❀ अल्हा भैया लगत हमार ॥
धन्य नीति है पृथीराजकी ❀ हमपर लाये फौज चढ़ाय ॥
बेटी ब्याही है हमरे सँग ❀ फिरि क्यों भूमि मझाई आय ॥
लानति ऐसी रजपूती पर ❀ पानी पीबे को धिरकार ॥
मरजी होवै जो लड़ने की ❀ तो तुम करो सामना आय ॥
जो नहिं इच्छा होय लड़नकी ❀ तौ समुहेंते जाउ बराय ॥
सुनतै गुस्सा होय धीरजने ❀ अपनी साँग चलाई आय ॥
चोट बचाई तब ब्रह्मा ने ❀ लीन्ही गुर्ज धीर सरदार ॥
गुर्ज धमक्को जब ब्रह्मा पर ❀ ब्रह्मा लैगे चोट बचाय ॥
गुस्सा होय तब धीरसिंह ने ❀ अपनी खैंचि लई तलवारि ॥
करो जड़ाका जब ब्रह्मा पर ❀ ब्रह्मा दीन्हीं ढाल अड़ाय ॥
बोले ब्रह्म धीरसिंह ते ❀ हमहू भक्त अम्बिका क्यार ॥
जितने शस्त्र होयँ तुम्हरे सँग ❀ सो हम पर सब लेउ चलाय ॥
यह सुनि सोचेधीरसिंह तब ❀ है यह बड़ा शूर सरदार ॥
चोटैं हमरी खाली पर गईं ❀ ब्राह्मण भक्त धन्य संसार ॥
हाथी लौटायो धीरजने ❀ देखैं खड़े पिथौराराय ॥
देखि हाल यह पृथीराज तब ❀ दाँतन रहे अँगुरिया दाबि ॥
हाथी बढ़ायो पृथीराजने ❀ औ ब्रह्माको घेरो जाय ॥
हुक्म दैदियो महाराजने ❀ सिगरे डोला लेउ लुटाय ॥
चौड़ा ताहर दोनों चलिभे ❀ औ डोलनको लिये घिराय ॥
चौड़ा घेरि लियो मल्हनाको ❀ डोला सबै लिये घिरवाय ॥
डोला घेरो चन्द्रावलिको ❀ ताहर जौन पिथौरालाल ॥
दुइसे जोड़ा बजैं नगारा ❀ बाजैं तुरही औ कंडाल ॥
कान अवाजपरी लाखनिके ❀ सो ऊदनते लगे बतान ॥
हमरे मनमें अस आवत है ❀ सागर चलत विषम तलवारि ॥
जल्दी त्यार होउ लड़बेको ❀ अबना राखौ देर लगाय ॥
ऊदन बोले तब ढेबाते ❀ दादा हाल देउ बतलाय ॥

बोले ढेबा तब ऊदन ते ❀ भैया जल्द होउ तैयार ॥
हुक्म दैदियो तब लाखनि ने ❀ लश्कर डंका देउ बजाय ॥
बजो नगारा तब लश्कर में ❀ चत्री तुरत भये हुशियार ॥
पहिले डंकामें जिनबन्दी ❀ दुसरे बाँधि लिये हथियार ॥
तिसरे डंका के बाजत खन ❀ चत्रिन धरे रकाबन पाँय ॥
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे ❀ बाँके घोड़न के असवार ॥
भरुही हथिनी त्यार कराई ❀ तापर लाखनि भये सवार ॥
घोड़ा बेंदुला को सजवायो ❀ तापर ऊदन भये सवार ॥
घोड़ा मनोरथा त्यार करायो ❀ तापर ढेबा भयो सवार ॥
मीरा सैयद बनरस वाले ❀ घोड़ी सिंहिनि पर असवार ॥
लला तमोली धनुआँ तेली ❀ सोऊ साथ भये असवार ॥
कूच कराय दियो लश्कर को ❀ औ सागर में पहुँचे जाय ॥
लगो मोरचा जहँ धाँधू को ❀ पहुँची फौज योगियन क्यार ॥
बोला धाँधू तब योगिन ते ❀ नाहक प्राण गँवाये आय ॥
पाछे लौटि जाउ झाबर को ❀ इतनी मानौ कही हमारि ॥
यह सुनि ऊदन बोलन लागे ❀ औ लाखन ते लागे बतान ॥
कठिन लड़ाई है सागर की ❀ दादा बहुत रहेउ हुशियार ॥
हुक्म दैदियो तब लाखनि ने ❀ चत्रिन खैंचि लई तलवारि ॥
झुके सिपाही दोनों दलके ❀ खटखट चलनलगी तलवारि ॥
सुमिरन करिके नारायण को ❀ मनियाँ सुमिरि महोबे क्यार ॥
खैंचि शिरोही लइ ऊदन ने ❀ समुहँ गोल गये समुहाय ॥
जैसे :भेड़हा भेड़िन पैठे ❀ ज्यों बन सिंह बिडारे गाय ॥
तैसे ऊदन दलमें पैठे ❀ भाला नागदौनी लै हाथ ॥
बाइस हौदा खाली करिकै ❀ औ धाँधू पै पहुँचै जाय ॥
धाँधू देखो जब ऊदन को ❀ अपनो लीन्हो गुर्ज उठाय ॥
गुर्ज चलायो बघ ऊदन पर ❀ ऊदन लैगे चोट बचाय ॥

एंड़ लगाई तब घोड़ा के * औ मस्तक पर पहुँचे जाय ॥
ढालकी औंफड़ ऊदन मारी * सोने कलशा दियो गिराय ॥
धाँधू सोचे तब अपने मन * है यह योगी बुरी बलाय ॥
मुर्छा लौटि गयो धाँधू को * लश्कर रेन बेन हुइजाय ॥
भगे सिपाही दिल्ली वाले * अपने डारि २ हथियार ॥
ऊँचे खाले कायर भागे * जे रणदुलहा चले बराय ॥
लम्बी धोतिन के पहिरैया * तिन नारेन की पकरी राह ॥
जिनहिं पियारी घरमें तिरिया * अवहीं लाये गौनवां चार ॥
भस्म रमाई तिन देही में * अपने डारि दिये हथियार ॥
हमको मरियो ना क्षत्रिउ तुम * हम भिक्षाके माँगन हार ॥
कहँलगि बरनों मैं क्षत्रिन को * क्षत्री लैलै भगे परान ॥
यह गति देखी जब मल्हना ने * आगे लश्कर दिये बढ़ाय ॥
चौड़ा पहुँचो रनिमल्हना पै * औ मल्हना ते कही सुनाय ॥
हुक्म दियो है पृथीराज ने * रनिमल्हना को लेउ लुटाय ॥
सो हम मानत अदब तुम्हारो * तासे गहना देउ उतारि ॥
यहसुनि मल्हना बोलन लागी * यह पिरथी ते कहियो जाय ॥
धर्म क्षत्रियन के नाहीं यह * जो तिरियन पर डारे हाथ ॥
काहे नाहीं तब चढ़ि आये * जब यहँ हते उदैसिंह राय ॥
यह सुनि बोला चौड़ा ब्राह्मण * हमना सुनिहैं बात तुम्हारि ॥
हार नौलखा हमको दैदेउ * अबना राखो देर लगाय ॥
इतनी सुनतै मल्हना रानी * मनमें बहुत गई घबराय ॥
हाथ जोरिके आसमान को * तहँपर लागी करन बिलाप ॥
हे नारायण दीनबन्धु प्रभु * स्वामी जगत केर करतार ॥
होउ सहायक यहि समया पर * राखो आजु हमारी लाज ॥
ऊदन मिलैं कहाँ हमको अब * जो असमय में आवें काम ॥
होउ सहायक यहि समया पर * हमपर फाटि परो अरराय ॥

तौलों ऊदन आये बाँकुड़ा ❀ औ मल्हना पै पहुँचे जाय ॥
ठाढ़े देखो जब चौड़ा को ❀ घोड़ा बेंदुला दियो बढ़ाय ॥
योगी रूप देखि मल्हनाने ❀ अपने मनमें कियो बिचार ॥
भये सहायक नारायण अब ❀ आई फौज योगियन क्यार ॥
चौड़ा देखो जब योगिन को ❀ तब योगिन ते कही सुनाय ॥
चले शिरोही आठ कोस लों काहे प्राण गँवाये आय ॥
इतनी सुनतै बघ ऊदन ने ❀ अपनी खैंचि लई तलवारि ॥
ऐंड़ लगाई रसबेंदुल के ❀ समुहें गोल गये समुहाय ॥
बाइसहौदा खाली कर दियो ❀ औ चौड़ापै पहुँचे जाय ॥
डपटो घोड़ा बघ ऊदन ने ❀ औ मस्तक पर बाजी टाप ॥
ढालकी औझड़ तुरतै मारी ❀ सोने कलशा दिये गिराय ॥
मुर्चा हटिगयो तब चौड़ा को ❀ सोचन लाग चौड़िया राय ॥
बड़े लड़ैया ये योगी हैं ❀ इनते हम जीतन को नाहिं ॥
मल्हना रानी को डोला जहँ ❀ तहँ पर ऊदन पहुँचे जाय ॥
बोले ऊदन रनि मल्हना ते ❀ भिक्षा हमहिं देउ मँगवाय ॥
हाथ जोरिके मल्हना बोली ❀ हम पर बाबा होउ सहाय ॥
हमरो डोला पिरथी लुटि हैं ❀ फिरि महुवे को लिहैं लुटाय ॥
डोला लैके चन्द्रावलि को ❀ पच पेड़न पै राखो जाय ॥
ब्रह्मै घेरो है पिरथी ने ❀ सो तुम बिपदा देउ हटाय ॥
यह सुनि ऊदन बोलन लागे ❀ तुम्हरी पवनी दिहैं कराय ॥
धीरज राखो अपने मनमें ❀ यह कहिचले उदैसिंह राय ॥
बोले ऊदन नर ढेबाते ❀ दादा बहुत रहेउ हुशियार ॥
लाखनि सैयद को सँग लैके ❀ पच पेंड़न पै पहुँचो जाय ॥
बोले ताहर तब योगिन ते ❀ काहे प्राण गँवाये आय ॥
ऊदन बोले तब ताहर ते ❀ हमने गंगा लई उठाय ॥
कौल हारि गये हैं मल्हनाते ❀ तुम्हरी पवनी दिहैं कराय ॥

डोला धरि देउ तुम ठौरे पर * इतनी मानो कही हमारि ॥
हुक्म दैदियो तब ताहर ने * इन योगिन को देउ भगाय ॥
झुके सिपाही दोनों दल के * रणमें चलन लगी तलवारि ॥
ताहर बढ़िगै खैंचि शिरोही * सो लाखनि पर दई चलाय ॥
चोट बचाय लई लाखनि ने * अपनी लीन्ही गुर्ज उठाय ॥
गुर्ज चलायो तब ताहर पर * ताहर घोड़ा गये भगाय ॥
ऊदन डोला चन्द्रावलि को * लै मल्हना पै राखे जाय ॥
बोले ऊदन तब लाखनि ते * दादा सुनो हमारी बात ॥
पृथीराज घेरो ब्रह्मा को * चलिकै खबर लेउ तत्काल ॥
लाखनि ऊदनि तब धाये तहँ * अब ब्रह्माको सुनो हवाल ॥
कठिन लड़ाई लखि ब्रह्माको * सोचन लगे बीर चौहान ॥
बोला चन्द्रभाट पिरथी ते * अब ब्रह्माको देउ गिराय ॥
सोचि समुझितब पृथीराज ने * अपनी लीन्हीं लाल कमान ॥
तब ब्रह्मानँद सोचन लागे * जैसे हमहिं रजा परिमाल ॥
तैसेइ हमको पृथीराज हैं * पै यह हरत हमारे प्रान ॥
अब चुप साधनको बेरियानहिं * है यह शब्दबेधि चौहान ॥
सोचि समझि यह ब्रह्मानँद ने * लीन्हों मोहन बाण उठाय ॥
धनुष तानि मारो पिरथी को * हौदा गिरे बीर चौहान ॥
हाहाकार होन लागी तहँ * मुर्छित भये पिथौरा राय ॥
तौलों ऊदन दाखिल होइगये * लाखनि सैयद संग लिवाय ॥
चारिहु राजा गांजर वाले * धनुआँ तेली संग तैयार ॥
लला तमोली संगहि आयो * बारह कुँबर बनौधे क्यार ॥
राउ गोरखा बंगाले को * सातनि पट्टी के सरदार ॥
मुरली मनोहर कलपी वाले * औ पत्यंउजके मदनगोपाल ॥
रूपन राजा सिरउंज वाले * जगमनि जिन्सी के सरदार ॥
चंदन राजा दतिया वाले * पूरन पूराके सरदार ॥

मधुकर राजा गढ़ चितौर के ❁ चिन्ता रुसनी के सरदार ॥
मोहन राजा हद्दीगढ़ के ❁ चिन्तामनि गोरखपुर केर ॥
लश्करबढ़िगयो उन योगिनको ❁ कीरति सागर के मैदान ॥
देखो लश्कर जब योगिन को ❁ ब्रह्मा लौटि परे तत्काल ॥
मुर्छा जागो पृथीराज को ❁ आदि भयंकर दियो बढ़ाय ॥
हुक्म दै दियो फिरि पिरथी ने ❁ लश्कर कटा देउ करवाय ॥
हल्ला होइ गयो दोनों दलमें ❁ क्षत्रिन खैंचि लई तलवारि ॥
खटखट तेगा बोलन लागे ❁ कटि २ गिरन लगे बहु ज्वान ॥
रंग बिरंगे घोड़ा होइ गये ❁ क्षत्री रक्त बरण होइ जायँ ॥
बिजुली चमके ज्यों बादल में ❁ त्यों रण चमकि रही तलवारि ॥
लाखनि भुरुही दाबे आये ❁ जहँ पर खड़े पिथौरा राय ॥
टक्कर मारी तब भुरुही ने ❁ आदि भयंकर दियो हटाय ॥
सोचे पृथीराज अपने मन ❁ हमरो हाथी दियो हटाय ॥
क्या बिजरासिनि यह हथिनी है ❁ है यह योगी बुरी बलाय ॥
तौलों ऊदन समुहें आये ❁ जूझको कंगन परी दिखाय ॥
दक्खिन पारिन पर सागर के ❁ लश्कर परी पिथौरा क्यार ॥
उत्तर पाटी में सागर के ❁ लश्कर परी कनौजी क्यार ॥
डोला पहुँचि गये सागर के ❁ तब ऊदन ने कही सुनाय ॥
लेउ भुजरिया अब बहिनी तुम ❁ सो सागर में देउ सिराय ॥
लई भुजरिया तब चन्द्रावलि ❁ सो सागर में दई सिराय ॥
बोले माहिल पृथीराज ते ❁ सगुन को दोना लेउ मँगाय ॥
हुक्म दै दियो तब चौड़ा को ❁ जल्दी दोना लावौ जाय ॥
बढ़ो चौड़िया तब आगे को ❁ तब चन्द्रावलि कही सुनाय ॥
चौड़ा लेहैं जो दोना यहु ❁ खोटी पवनी होय हमारि ॥
ऊदन भैया जो होते यहँ ❁ तो यह दोना लौते उठाय ॥
यहसुनि लाखन बोलन लागे ❁ ऊदन दोना लेउ उठाय ॥

ऊदन झपटे जब दोना पर * तब चौड़ाने कही सुनाय ॥
हाथ चलैयो ना दोना पर * नाहीं लैहौं शीश उतारि ॥
बोले ऊदन तब गुस्सा होइ * चौड़ा बोलो बात सम्हारि ॥
दोना पैहो ना सागर पर * चाहे कोटिन करो उपाय ॥
भाला लैके तब चौड़ा ने * बघ ऊदन पर दियो चलाय ॥
चोट बचाई तब ऊदन ने * दोना लीन्हों झपटि उठाय ॥
सो पकराय दियो बहिनी को * तब चन्द्रावलि लगी बतान ॥
कहँ मैं पाऊँ अब ऊदन को * क्यहि के धुरसि भुजरिया देउँ॥
जबहिं भुजरिया मैं धुरसतिरहौं * मोहिं मुँह माँगा देत मँगाय ॥
बोली मल्हना चन्द्रावलि ते * बेटी सुनो हमारी बात ॥
समुहें तुम्हरे योगी ठाढ़े * तिन यह पक्नी दई कराय ॥
धर्म हमारो इन राखो है * जानो इनहिं लहुरवा भाय ॥
इनके धुरसौ जाय भुजरिया * यह तुम मानो कही हमारि ॥
यह सुनि तुरतै लई भुजरियाँ * सो ऊदन के धुरसन लागि ॥
बोले ऊदन चन्द्रावलि ते * धर्मकी बहिनी लगो हमारि ॥
जेठो योगी यह ठाड़ो है * पहिले धुरसि देउ तुम जाय ॥
ताके पीछे हमरे धुरसो * इतनो मानो कही हमारि ॥
लई भुजरियाँ चन्द्रावलि तब * सो लाखन के धुरसो जाय ॥
हथिनी चालिस चन्द्रावलि को * दीन्हीं बिहँसि कनौजी राय ॥
लई भुजरिया फिरि चन्द्रावलि * सो ऊदन के धुरसी जाय ॥
कंगन अपनो ऊदन देके * चन्द्रावलि को दियो पकराय ॥
देखो कंगन जब चन्द्रावलि * तब मल्हना ते लगी बतान ॥
यह तो कंगन है ऊदन को * माता देखि लेउ पहिचानि ॥
कैसे पायो इन जोगिन ने * सुनि हँसि दियो उदैसिंहराय॥
चमकी बिजुली तब दाँतन में * मल्हना तुरत गई पहिचानि॥

मिलन लगी तुरतै चन्द्रावलि ❀ नयनन बही नीर की धार ॥
बोली चन्द्रावलि मल्हना ते ❀ हमने पहिलेइ ली पहिचानि ॥
ड्योढ़ी पहुँचे रहैं योगी जब ❀ तबहीं हमने दियो बताय ॥
छोटो योगी ऐसो लागे ❀ मानो मेरो लहुरवा भाय ॥
बिना बेंदुला के चढ़वैया ❀ को पिरथी को देय हटाय ॥
मल्हना रानी औ सखियन को ❀ तुरतैं मिले उदैसिंहराय ॥
दोना लैलै सब काहूने ❀ सो सागरमें दियो सिराय ॥
बोले पृथीराज धाँधू ते ❀ बीर भुगंते कही सुनाय ॥
एकतो दोना तुम लै आवो ❀ हमरी नजरि गुजारौ आय ॥
दोनों शूर चले सुनतै यह ❀ तब लाखनि ने कही सुनाय ॥
एकौ दोना दिल्ली जैहैं ❀ तो सब जैहैं काम नशाय ॥
हुक्म दै दियो तब ऊदन ने ❀ क्षत्रिन खबरदार होइ जाव ॥
जान न पावैं दिल्ली वाले ❀ सबकी लूटि लेउ करवाय ॥
खैंचि शिरोही लइ क्षत्रिन ने ❀ तुरतै चलन लगी तलवारि ॥
हाथी बढ़ायो तब धाँधू ने ❀ औ सिढ़ियनपरपहुँचोजाय ॥
हाथ चलैयो ना दोनन पर ❀ यह ऊदन ते कही सुनाय ॥
दपटो घोड़ा तब ऊदन ने ❀ औ हाथीपर राखो जाय ॥
ढालकि औझड़ ऊदन मारी ❀ सोना कलशा दिये गिराय ॥
सोचे धाँधू तब अपने मन ❀ यहु जोगी है बुरी बलाय ॥
मुर्चा फेरि दियो अपनो तब ❀ बीर भुगंता गयो बराय ॥
लीन्हों भाला बघ ऊदन ने ❀ नोकसे दोना लिये उठाय ॥
पैदल डेढ़ लाख पिरथी के ❀ जूझे सागर के मैदान ॥
हाथी नौसै रणमें जूझे ❀ जूझे दस हजार असवार ॥
राजा टंक शूर पिरथी को ❀ जूझे समर खेत में आय ॥
सरदनि मरदनि सूरज जूझे ❀ ऐसो विषम चली तलवारि ॥

बोले माहिल पृथीराज ते ❀ तुम सुनि लेउ पिथौरा राय ॥
जीति न पैहो तुम ऊदनि ते ❀ ताते कूच जाव करवाय ॥
जबही ऊदन कनउज जैहैं ❀ तुरतै खबरि दिहौं पहुँचाय ॥
तीस हजार फौज महुबे की ❀ कटि गइ सागर के मैदान ॥
हाथी बासठ गढ़ महुबे के ❀ जूझे घोड़ा एक हज़ार ॥
रंजित अभई दोनों जूझे ❀ जिनके रुंड करो तलवारि ॥
सुनी खबरि जब चन्देले ने ❀ पवनी ऊदन दई कराय ॥
तुरत पालकी तब मँगवाई ❀ औचलि भये रजा परिमाल ॥
तौलौं पालकि चन्देले की ❀ आई सागर के मैदान ॥
देखि पालकी चन्देले की ❀ ऊदन उठे भरहरा खाय ॥
चरण लागिके परिमालै के ❀ ऊदन माथे लियो लगाय ॥
आँसू बहन लगे नैनन ते ❀ राजा छाती लियो लगाय ॥
झूला झूलन लगि चन्द्रावलि ❀ लैलै बघ ऊदन को नाम ॥
बोले ऊदन तब बहिनी ते ❀ तुम सुनि लेउ हमारी बात ॥
पवनी करवाई लाखनि ने ❀ तिनको नाम लेउ यहिकाल ॥
नाम बखानो तब लाखनि को ❀ गावन लागी राग मलार ॥
बोले चँदेले तब ऊदन ते ❀ बेटा मेरे उदैसिंह राय ॥
सुधि बिसराय दई हमरी तुम ❀ औ कनउज को गये रिसाय ॥
बिना तुम्हारे ऊदन बेटा ❀ हम पर चढ़े पिथौरा राय ॥
अब तुम छाड़ो ना महुबे को ❀ इतनी मानौ कही हमारी ॥
खबरि भेजिके तुम कनउजको ❀ आल्हहिं तुरत लेउ बुलवाय ॥
हाथ जोरि बोले ऊदन तब ❀ दादा सुनिलो बात हमारि ॥
भादौं चिरिया ना घर छाँड़े ❀ ना बनिजरा बनिजको जाय ॥
तब तुम सोचो क्या अपने मन ❀ जो भादौं में दियो निकारि ॥
बात मानिकै तुम माहिल की ❀ हमपर रूठि कियो अपमान ॥

तीनि तिलाकैं दइ हमको तुम ❀ हमरे गई कलेजे साल ॥
जियत महोबे हम जैहैं ना ❀ कागा मरे हाड़ लै जाय ॥
यहसुनि मल्हना रोवन लागी ❀ औ ऊदन ते कही सुनाय ॥
ऊदन तुमको हमने पालो ❀ कुच को दूध पिलाय पिलाय ॥
तुम जब जैहौ गढ़ कनउज को ❀ चढ़ि हैं तुरत वीर चौहान ॥
नगर महोबा वे लुटवैहैं ❀ डोला लिहैं चन्द्रावलि क्यार ॥
आगे करिके ब्रह्मानँद को ❀ औ ऊदनते कही सुनाय ॥
हौ रखवारे तुम ब्रह्मा के ❀ अबना लौटि कनउजै जाउ ॥
करौ राज्य बैठे महुबे में ❀ तब ऊदन ने दियो जवाब ॥
धीरज राखो अपने मन में ❀ हमरे बचन करो परमान ॥
छिपिके आये हम आल्हा ते ❀ हमने करो बहाना जाय ॥
संग जातहैं हम लाखनि के ❀ गाँजर खेलन हेत शिकार ॥
ऐसे छिपिके हम आये हैं ❀ तासों हम रहिबे के नाहिं ॥
लश्कर लावै पृथीराज जब ❀ तुरतै दीजौ खबरि कराय ॥
तब फिरि ऐहैं हम महुबे को ❀ लाखनि रानै संग लिवाय ॥
बोली मल्हना तब लाखनिते ❀ तुम यह पवनी दई कराय ॥
बिछुरे ऊदन हमहिं मिलाये ❀ धनधनि रतीभानके लाल ॥
लाखनि बोले तब बिनती करि ❀ माता सब परताप तुम्हार ॥
आज्ञा लै के रनि मल्हना ते ❀ लाखनि कूच दियो करवाय ॥
सबको लेके रनिमल्हना तब ❀ रंग महल में पहुँचो जाय ॥
इतनो युद्ध भयो सागर पर ❀ सोहम लिखिके दियो सुनाय ॥
आल्हा मनोआ आगे कहिहौं ❀ थारो सुनियो कान लगाय ॥
समय पाय तुम आल्हा गाओ ❀ नित उठि लेव नाम भगवान ॥
भोलानाथ मनाय हिये महँ ❀ सीताराम क्यार धरि ध्यान ॥

इति (सागरपर) भुजरियों की लड़ाई समाप्त ।

पं रामनारायण त्रिवेदी द्वारा दूधनाथ प्रेस हावड़ा में मुद्रित ।

प्रिय महाशयों !

आप लोग पत्र पर पत्र ने नीचे लिखी पुस्तकों के लिये भेजते थे, पर वे अब तक प्रकाशित नहीं हुई थी । अब बडे सज धजसे प्रकाशित हो चुकीं, हैं शीघ्रता कीजिये और मगा कर हृदय को प्रफुल्लित कीजिये ॥

श्रवणगीता [भाषा]

श्रवणकी कथा बहुत पुरानी है, इनका नाम हिन्दू मात्र जानते हैं, पर पूर्ण चरित्र को कम लोग जानते होंगे । अतएव मैने उन्हीं अपने भाइयों के लिये सरल भाषा और दोहो में सम्पूर्ण चरित्र को छपवाया है ताकि वडे आसानी से सम्पूर्ण चरित्र समझ लेवें । सुन्दर तिरंगे तस्वीर से युक्त पुस्तक का दाम सिर्फ ।)

* किस्सा शीतबसन्त *

यह बड़ा पुराना किस्सा है, पर सम्पूर्ण कोई भी नही जानता था, बडे परिश्रम से खोज निकाला गया है, पढ देखिये दाम ≡)

* किस्सा दू[illegible]मरावर *

किस्सा क्याहै माना दिल्लगी का भण्डार है । पढते २ आप बडे जोर हंस पड़ियेगा, यहा नहीं बल्कि इसीके साथ शिक्षित भी हो जाइयेगा दाम ≡)

* कुंवर बृजभान *

आठो भाग ।

इसमें कुंवर बृजभान के पिता से गंगा सिंह का राज्य छीन लेना, बृजभानकी माता का गंगा सिंह के बगान में मालिन बनकर रहना, और राजा गंगा सिंह की रानीसे अधिक स्नेह होना; बृजभानका बागान में जन्म होना उधर गंगा सिंहकी स्त्री को लड़की होना और बृजभान से बदलना, फिर युवा होने पर गंगा सिंहकी लड़की पर बृजभान का मोहित होना और शादी करना. फिर चन्द्रवती का लड़ कर अपने पिता गंगा सिंह को हरा कर अपने श्वसुर को राजगद्दी दिलाना और सुखसे राज्य करना इत्यादि भली भांति कुंवर (बिजई के राग में लिखा है । पढ देखिये ऊपर सुन्दर तीन रंगे तसबीरदार पुस्तक का दाम ॥)

पता—पं०—रामनारायण त्रिवेदी

दूधनाथ प्रेस सलकिया हवड़ा ।

✻ श्रीगणेशाय नमः ✻

✻ अथ आल्हा ✻

✻ चन्द्रावलि की चौथी ✻

✻ मोरंगगढ़ या बाँदोगढ़ की लड़ाई ✻

✻ दोहा ✻

बिनवौं दोउ कर जोरिके, होहु प्रसन्न गणेश।
दया करहु जन जानिकै, हे विधि विष्णु महेश॥

✻ सवैया ✻

जेहिके विनवैं रचिके जो प्रपंच, वही है विरंचि रचै जगती को।
विष्णु वही नित खोज करैं औ, सहाय करैं जो अलक्ष्य गती को॥
शिवयोगी जो नाश करैं यहि सृष्टिको, बीच परै नहिं एक रतीको।
सुमिरैं हम सूरसती को सदा, 'शिव धन्य' भजै पति पारवती को॥

✻ आल्हा छन्द ✻

शुभ्र महीना जो भादों है ✻ तेहिमहँ तिथि अष्टिमि बुधवार॥
सब गुण आगर दयाके सागर ✻ मथुरा कृष्ण लीन्ह अवतार॥
माया साबित कर दुनियाँ में ✻ नितप्रति करैं भक्त को कार॥
प्रभु की प्रभुता कहाँ न जाहिर ✻ भूलत कबहुँ न आठौ याम॥
उनकी रचना मैं क्या बरनौं ✻ ऐसे प्रभू सर्व गुण धाम॥
सुखद भक्ति वर दो यदुनन्दन ✻ निजजन जानि देहु मोहिं ठाम॥
लगा महीना दिन सावन का ✻ युवतिन गावैं राग मलार॥
सबके घर में सजै हिंडोला ✻ सब कोइ करैं मंगलाचार॥
सब सखियाँ त्योहार मनावैं ✻ सावन करैं नृत्य अरु गान॥
क्याछबि बरनौं उन सखियोंकी ✻ शोभा शील गुणोंकी खान॥
सुघर गामिनी राज भामिनी ✻ दमकैं यथा दामिनी क्यार॥
सचि रम्भा की क्या गिनती है ✻ निशिदिन झुरैं कामकी नार॥
चतुर नायिका चपल चंचला ✻ रति रम्भा को घटै गुमान॥

सो सब गावैं राग सुहावन ❀ नाचैं सँभल के तोड़ैं तान ॥
गूँधे केश सँभाल शीश पै ❀ उसपै जड़े लाल सिन्दूर ॥
ज्यो आकाश धनुष इन्दर को ❀ सोहैं काम कला भरपूर ॥
यह सब हालत देखि नगर की ❀ मल्हना मनमें करै विचार ॥
एक बेटी मेरे चन्द्रावलि ❀ उसको कोह न बुलावै जाय ॥
जितनी सखियाँ चन्द्रावलि की ❀ वे सब घर घर गईं बुलाय ॥
ऐसा सोचै वह अपने मन ❀ समरथ होवे पुत्र हमार ॥
चौथी ले जाय उहाँ लै आवें ❀ तब मैं देखौं आँख पसार ॥
ऐसी बातों के दौरे में ❀ मल्हना रोवै जार बेजार ॥
लै लै नाम वो चन्द्रावलि का ❀ क्या सुख समझ महोबे क्यार ॥
वही समैया के अवसर में ❀ ऊदल वहाँ पहुँचा आय ॥
हाथ जोड़ के ऊदल बोला ❀ माता हमें देव बतलाय ॥
कौन मुसीबत से रोती हो ❀ रहि २ मेरा प्राण घबड़ाय ॥
बोली मल्हना तब ऊदल से ❀ बेटा सुन लो कान लगाय ॥
नहीं मुसीबत कुछ हमपै है ❀ तुमसे बात कहूँ समझाय ॥
जबसे ब्याह हुआ चन्द्रा का ❀ ससुरालों में पहुँची जाय ।
सालों बीत गये पातो में ❀ किसीने खबर लिया कुछ नाय ॥
लगा महीना अब सावन का ❀ कजली तीज गईं नगिचाय ॥
जितनी सखियाँ चन्द्रावलि की ❀ वे मैके में पहुँचीं आय ॥
पर मेरे घर हुआ अँधेरा ❀ उसको चौथ कौन लै जाय ॥
ऐसे कहके मल्हना रोवे ❀ ऊदल गया सनाका खाय ॥
हाथ जोड़ के फिर वह बोला ❀ माता साफ़ देव बतलाय ॥
किसकी बेटी चन्द्रावलि है ❀ औ किस देशको ब्याही जाय ॥
क्या है मतलब तुमको उससे ❀ हमसे साँच कहो समझाय ॥
हम तो लड़के ना कुछ जानैं ❀ खेलैं खावैं मौज उड़ाय ॥
लेकिन अबतक जो कुछ गुजरी ❀ उसको तुम देवो भुलवाय ॥

आगे की सब बात बताओ * क्या है हुक्म उदायन राय ॥
जो कुछ आज्ञा हो माता की * पूरा करूँ पलक में जाय ॥
नरमी बानी मल्हना बोली * बेटा कंठ पुतरिया लाल ॥
समय समय की सब बातें हैं * समय बनावै काल सुकाल ॥
क्या गिनती है मानुष तन की * यह क्षणभंगुर सदा कहाय ॥
राजा रंक तलक से आये * सबको काल ने लियो चबाय ॥
उदय अस्त नित सूरज होवै * फरा झरा सा नियम देखाय ॥
अजर अमर नहिं कोइ दुनियाँ में * अब तुम सुनलो कान लगाय ॥
चन्द्रावलि एक बहन तुम्हारी * जो बाँदो गढ़ व्याही जाय ॥
ओछी उमर के तुम अबतक थे * इससे कभी बताया नाय ॥
सुनो हकीकत चन्द्रावलि की * बेटा मेरे उदायन राय ॥
जब वह बढ़कर हुई सयानी * खेलन सखियों के संग जाय ॥
शोहरा मच गया देश में * उसको कोई बरोबर नाय ॥
मानो मूरत जगदम्बा की * या सीतासी जनक दुलार ॥
ऐसी खबर गई बौरीगढ़ * जिसका नाम बन्दोगढ़ क्यार ॥
वहाँ का राजा बीरशाह जो * सेना साजि यहाँ पर आय ॥
एक कोस पर डेरा कर दिया * मोहबे पत्र दिया भेजवाय ॥
बेटा ब्याहन हम आये हैं * बेटी का दो ब्याह कराय ॥
यह मजमून लिखा चिट्ठी में * परमाले को दई पठाय ॥
चिट्ठी पढ़कर तब राजा ने * आकर हमसे किया सलाह ॥
बेटी क्वाँरी रहै न कोइ घर * आखिर पर घर जाय बिआह ॥
जात पाँत में जो अच्छा है * सब में वीर शाह सरनाम ॥
उसका लड़का वीरसेन है * तेजरूप बल बुधि को धाम ॥
मुखसे कही बात ना लौटे * तीर छूट फिर हाथ न आय ॥
पारस पाथर है हमरे घर * लोहा छुअत सान ह्वै जाय ॥
दान दहेज तो इतना दे दो * बैठे सात पुस्त लों खाय ॥

सुनके बातें यह राजा की ❋ मैंने भी दी मोहर लगाय ॥
चला गया राजा बैठक में ❋ स्वीकृति पत्र दिया भेजवाय ॥
क्या मजमून लिखा चिट्ठी में ❋ अब तुम सुनो उदायन राय ॥
स्वस्तिश्री नारायण लिखिके ❋ वीर शाहको लिखा जुहार ॥
नाम चन्देले को जग जाने ❋ जिससे हार गई तलवार ॥
किया सामना कोइ ना हमसे ❋ सबकी ढिल कर दिया कमान ॥
कैसा राजा बौरीगढ़ का ❋ क्या बल लेकर पहुँचा आन ॥
कोट अठासी बावन सुबे ❋ जब कोइ रहा लड़ैया नाय ॥
खाँड़ा फेंक दिया सागर में ❋ सबने किया मित्रता आय ॥
लेकिन दुनियाँ है खोटों की ❋ साधू संत दरेरा खाँय ॥
राजा होकर करे सिधाई ❋ उसको लेजाय मौत उठाय ॥
इसी सिधाई से कड़िया वह ❋ हमपर लाया फौज सजाय ॥
अर्ध निसा में धावा करके ❋ दशपुरवा को लिया घेराय ॥
दस्सराज औ बच्छराज की ❋ उसने मुश्क लई बँधवाय ॥
लूट मचा दिया वह घर घर में ❋ अनहद दुःखदिया तब आय ॥
बिना खेवइया की नैया थी ❋ ऐसे समय पहुँचा आय ॥
देखि हकीकति यह कड़िया की ❋ तब हम मनमें किया उपाय ॥
पिता तुम्हारे मित्र हमारे ❋ उनके पास पहुँचा जाय ॥
लेकिन पता लगा नहिं उनका ❋ फिर हम वापस मोहबे आय ॥
बनी बनी के सब कोइ साथी ❋ बिगड़ी कोई बनैया नाय ॥
अब तुम अपनी फौजें लेकर ❋ ब्याह करन को पहुँचे आय ॥
ब्याह जोग की है चन्द्रावलि ❋ यामें उज्र हमें है नाय ॥
रखो दिलासा तुम अपने मन ❋ जब शुभ लग्न पहुँचे आय ॥
ऐसी चिट्ठी लिख चन्देले ❋ औ धावन को दिया थमाय ॥
अब चल तब चल के चलने में ❋ वीरशाह ढिग पहुँचा जाय ॥
लगी कचहरी वीर शाह की ❋ बैठे बड़े बड़े सरदार ॥
जोश जवानी के सब माते ❋ आगे धरे नग्न तलवार ॥

जाकर चिठ्ठी दिया कासिदने ❀ बीरशाह ने लिया उठाय ॥
काट लिफाफे को खत बाँचे ❀ दिलमें बहुत खुशी हो जाय ॥
आगे लाइन में निज करनी ❀ पढ़कर गर्दन लिया झुकाय ॥
लेकर कागज कलमपीवारो ❀ औ निज कलमदान मँगवाय ॥
लिखा जवाबैं वीर शाह ने ❀ राजा सुनो चन्देले राय ॥
जो कुछ मरजी नारायण की ❀ सो दाता ने दियो बनाय ॥
हमसे भूल चूक जो हो गई ❀ वह सब खता माफ हो जाय ॥
ब्याह काज में करें शीघ्रता ❀ श्रीगणेश जी लगें सहाय ॥
ऐसी बातें लिख राजा ने ❀ औ धामन को दिया थमाय ॥
चल पड़ा धामन तब डेरे से ❀ चन्देले ढिग पहुँचा आय ॥
किया तयारी चन्देले ने ❀ लागे होन मङ्गलाचार ॥
खबर भेज दिया वीरशाह ढिग ❀ तुम भी जल्द होय तैयार ॥
मड़वा छवा दिया बासों से ❀ पण्डित करैं वेद उच्चार ॥
लोकाचार ब्याह का करके ❀ बेटीका डोला दिया निकार ॥
तुम सब थे जब थोड़े दिनके ❀ जिससे बहुत रही लाचार ॥
बिकट राज है गढ़ बौरी को ❀ उससे कोई न पावै पार ॥
बारह बरसैं तबसे बीतीं ❀ बाँकी खबर लगी कुछ नाय ॥
कैसे बेटी है चन्द्रावलि ❀ कैसे वहाँ गुजारै जाय ॥
आज याद उसकी है आई ❀ बेटा मेरे उदायन राय ॥
किसके पैड़े अब मैं देखूँ ❀ तब ऊदल ने कहा सुनाय ॥
आज्ञा दै दो जौं तू माता ❀ मैं बहिनी को लाऊँ बुलाय ॥
तापर ज्वाब दियो मल्हना ने ❀ बेटा मानो कही हमार ॥
बहुत से दुश्मन तेरे देश में ❀ क्या करने को करिहो रार ॥
तुम्हें जाने की नहीं जरूरत ❀ जाने कौन चुगुल चलजाय ॥
दिया जबाबैं तब ऊदल ने ❀ माता खौफ देव भुलवाय ॥
अब मैं एक नहीं मानूँगा ❀ चाहे कोटिन करो उपाय ॥
जो कुछ देना हो बहिनी को ❀ वह सब फौरन देउ मँगाय ॥

जल्दी पहुँचू मैं बौरीगढ़ ❋ गुजरे घड़ी घड़ी पर बार ॥
बिदा कराऊँ ना बहिनी को ❋ तो है जीवन को धिक्कार ॥
ऐसा कहकर वह मातासे ❋ और पिता ढिग चला बराय ॥
जहाँ कचहरी परमाले की ❋ ऊदल वहाँ पहुँचा जाय ॥
हाथ जोड़ बोला राजा से ❋ ओ महाराज चन्देले राय ॥
जाना चाहूँ मैं बौरीगढ़ ❋ हमको हुक्म देओ फरमाय ॥
खर्चा देना जो कुछ चाहैं ❋ वह सब फौरन देयँ मँगाय ॥
बिदा करऊँ चन्द्रावलि को ❋ यह मेरे मन गई समाय ॥
सुनकर बातैं यह ऊदल की ❋ चन्देले ने कहा सुनाय ॥
वाँ जाने का काम न कुछ भी ❋ चन्दावलि याँ आवे नाय ॥
तापर ज्वाब दिया ऊदल ने ❋ दादा सुन लो कान लगाय ॥
अंगुल अंगुल कटै नालकी ❋ चावल चावल कटै ओहार ॥
लेकिन उसको मैं ना छोड़ूँ ❋ दादा सुन लो कान पसार ॥
बहुत दिना भे गये बहन को ❋ मुँह मोहबे का देखी नाय ॥
जिसके भैया हुए सयाने ❋ उसको कौन पड़ी परवाय ॥
मचै लड़ाई उसकी खातिर ❋ चाहे तन धजी २ उड़ जाय ॥
जाकर लाऊँ मैं बहिनी को ❋ जौं मेरा नाम उदयचन्द राय ॥
सुधा घूँट कोइ पी नहिं आया ❋ चाहे काल जबै लै जाय ॥
सुनकर बातैं यह ऊदल की ❋ राजा मनमें कियो बिचार ॥
यह कहने से ना मानैगा ❋ यह ऊदल है जुलुम गुजार ॥
झपट के उठा सिंहासन से ❋ औ महलों में पहुँचा जाय ॥
आता देखा जब रानी ने ❋ फौरन कुर्सी दई बिछाय ॥
सात पान का बीड़ा लेकर ❋ वो समुहें पर पहुँची आय ॥
बोला राजा तब रानी से ❋ क्यों है अकल गई बौराय ॥
हाल बता दिया चन्द्रावलिकी ❋ अब ऊदल माने है नाय ॥
जाना चाहै बौरीगढ़ को ❋ क्या बिधना ने रची बनाय ॥
सुनकर बातैं यह राजा की ❋ तब मल्हना ने कही सुनाय ॥

क्यों घबड़ावे अपने मनमें * प्रीतम सुनो विचार हमार ॥
पारस पत्थर हो जिसके घर * लोहा छुअत सोन ह्वै जाय ॥
धन की चाह किसे ना होवै * जो मन भावै देव पठाय ॥
लाभ पायकर लोभ न किसको * लोभ न देवे किसे नसाय ॥
लोभ में आकर रुखसत कर दे * तुमको कौन पड़ी परवाय ॥
यह मन मान गई राजाके * वह दरबार पहुँचा जाय ॥
कैसी माया है स्त्री की * नाहक फँसके जन्म गँवाय ॥
देश देश में नाम था जिसका * वह भी फँसा जाल में जाय ॥
सोने की चिड़िया कैसी हो * फाँसे ब्याधा जाल बिछाय ॥
चतुर कहाते चतुरानन भी * नारी से नहिं प्यार बसाय ॥
अधिक बयान करैं नारी का * सो फिर कथा बहुत बढ़ जाय ॥
किया तयारी परमाले ने * यारो सुनियो कान पसार ॥
अस्सी गजरथ चालिस हाथी * शुतुर साँड़ियन की भरमार ॥
तोड़ा अशरफी भरे अनेको * घोड़ा नये जो कीमतदार ॥
चीरा कलंगी मोहन माला * खोजे मिले न वैसा हार ॥
सात लाख की सजी पम्पदा * सब ऊदन को दिया गहाय ॥
वस्तु अनेकों भरि मटकों में * चित्तरकारी दिया कराय ॥
यह तो त्यारी थी मल्हना की * आगे कहौं कहाँ लग गाय ॥
बोला राजा तब ऊदल से * बेटा सुनलो कान लगाय ॥
बीच डगर में दिल्ली पड़िहै * मिलिहो जाय पिथौरा राय ॥
जो उपदेश दै दिल्ली वाले * वैसा करिहो जतन बचाय ॥
सुनकर बातें यह राजा की * ऊदन कह्यो भुजाका नाय ॥
नाऊ बारी भाट पुरोहित * इन चारों को संग लगाय ॥
घोड़ बेंदुला को सजवायो * यारो सुनलो कान लगाय ॥
पहले धोया उसको जल से * पीछे दूध से दिया धुलाय ॥
पोंछ पोंछ कर तब घोड़े को * रंग हिरौंजी दिया रँगाय ॥
उमची दुमची को सजवाया * दुमसाजी को दिया सजाय ॥

कछुआ खापड़ रख पीठी पर ❀ ऊपर जीनपोश रखवाय ॥
मोती चूर की जड़ी रकाबैं ❀ औ साँवर के बन्द लगाय ॥
कोड़ा कीमती लै हाथों में ❀ तब घोड़े पै बैठा जाय ॥
किया बन्दगी परमालै को ❀ औ दिल्ली की सुरत लगाय ॥
वही समैया के अवसर में ❀ पहुँचा चुगुल महिल परिहार ॥
लिल्ली घोड़ी का चढ़वैया ❀ जो चुगुली में कहरगुजार ॥
चुगुल चूतिया कैसे चूकै ❀ चाहे जलकर होजाय ख्वार ॥
कहाँ गया है उदन बाँकुरा ❀ सबसे पूछै बारम्बार ॥
भेद न पावै पेट फूल रहा ❀ दिलमें पड़ गया खलल खँभार ॥
बोधशून्य एक अहिरका लड़का ❀ जिसका घर उरई के माँय ॥
मोहबे में ससुराल थी जिसकी ❀ उससे पूछै महलिया राय ॥
सारा भेद बताया उसने ❀ तब माहिल दिल पड़ा करार ॥
बहुत खुशी तब उसको होगइ ❀ मानो लूटा भरी बजार ॥
लिल्ली घोड़ी को सजवाया ❀ फौरन उस पर हुआ सवार ॥
राह पकड़कर गढ़ दिल्ली की ❀ पहुँचा पृथीराज दरबार ॥
भरी सभा राजा की बैठी ❀ बैठे बड़े बड़े सरदार ॥
मोढ़े मोढ़े क्षत्री बैठे ❀ ठेहुना नगन धरे तलवार ॥
सात हाथ ऊँचा सिंहासन ❀ बैठा दिल्ली का सरदार ॥
वही समैया के अवसर में ❀ पहुँचा चुगुल महिल परिहार ॥
किया सलामैं पृथीराज को ❀ राजा कुर्सी दई बिठाय ॥
जाकर बैठा था ऊदन भी ❀ अपनी हालत रहा सुनाय ॥
लेकिन माहिल के जाने पै ❀ सारे सहसदम्म पड़ जायँ ॥
बात छोड़ दिया तब माहिल ने ❀ औ कानों में रहा बताय ॥
सम्मति यह है चन्देले की ❀ दिल्ली को ले जल्द लुटाय ॥
इससे पहले ऊदन आया ❀ पीछे आवेगा मलखान ॥
सुनकर बातैं यह मालिन की ❀ पिरथी बन्द कर लियो कान ॥
बड़ा ताज्जुब उसको हो रहा ❀ औ हिरदे में नहीं समान ॥

बोला राजा तब माहिल से * तुम हो चुगुल महलिया राय ॥
क्योंकर लूटे मेरि नगरी को * हमसे खता हुई कुछ नाय ॥
ऐसी बातें तुम क्यों कहते * यह विश्वास परे हैं नाय ॥
जबहीं आते हो मेरे ढिग * बातें झूठी कहत बनाय ॥
यह सुन माहिल ऐसे सहमा * जिमि जवास पर पावस जाय ॥
फौरन उठ पड़ा तब कुर्सी से * बौरीगढ़ की सुरत लगाय ॥
बोला राजा दिल्ली वाला * औ ऊदल से कहा सुनाय ॥
आओ आओ बीर उदायन * अपना हाल कहो समझाय ॥
कहाँ की त्यारी तुमने कीनी * सँग में नेगी लियो लगाय ॥
खुश है ज्वाब दिया उदल ने * औ महराज पिथौरा राय ॥
बहिन हमारी चन्द्रावलि है * बाँदौगढ़ में ब्याही जाय ॥
उसे बुलाने मैं जाता हूँ * जैसा होवे हाल बताय ॥
बोले पिरथो तब ऊदल से * इसमें कोई मुजाका नाय ॥
एक बात का मुझे अन्देशा * सो तुम सुनो उदायन राय ॥
जुल्मी राजा है बाँदो का * वह तो बिदा करेगा नाय ॥
इससे लौट जाव मोहवे को * नाहक राड़ बढ़ावौ जाय ॥
तापर ज्वाब दियो ऊदल ने * यह मेरे मन नहीं समाय ॥
बिदा न करिहैं जो बहिनी को * तो मैं किला लेऊँ लुटवाया ॥
जितना ऊँचा है बौरीगढ़ * उतना नीचा देऊँ कराय ॥
सुनकर बातैं यह ऊदन की * पिरथी सोच सोच रह जाय ॥
कलहा लड़का दच्छराज का * मेरा कहा मानिहै नाय ॥
सवा लाख की चीरा कलँगी * फौरन पिरथी लिया मँगाय ॥
सो पकड़ाय दिया ऊदल को * औ यह बात दई दर्शाय ॥
यह कलँगी देना राजा को * जिससे बहुत खुशी हो जाय ॥
करैं बिदाई चन्द्रावलि की * सारा काम फते हो जाय ॥
खबर पहुँच गई रंगमहल में * ऊदन यहाँ पहुँचा आय ॥
उसे बुला लिया रनवासों में * आदर बहुत किया सत्कार ॥

जितनी तिरियाँ रंगमहल की ❋ सब ऊदन को रही निहार ॥
बोली अगमा तब ऊदन ते ❋ बेटा मेरे बनाफल राय ॥
कहाँ का ध्यान लगाकर चलपड़ा ❋ वह राजा है बुरी बलाय ॥
कठिन मवासी गढ़ बाँदो है ❋ तुमसे विपद न झेली जाय ॥
क्यों विष जान बूझ के खावे ❋ नाहक देवे जान गँवाय ॥
हाथ ततइयाँ में जौं डाले ❋ तौ वे लिपट गात में जाँय ॥
जुलमी राजा वीर यादवा ❋ हरगिज बिदा करैगा नाँय ॥
बोला ऊदल हाथ जोड़के ❋ माता खता माफ हो जाय ॥
ऐसी बातैं मैं ना मानूँ ❋ मेरी जात बनाफल राय ॥
सोता बन्द होयँ कुँवना के ❋ गंगा लौट बहैं हरद्वार ॥
मैं ना लौटूँ गढ़ मोहवे को ❋ चाहे दिनरात चलै तलवार ॥
सुनकर बातैं यह ऊदन की ❋ रानी सोच सोच रहि जाय ॥
बड़ा हठीला यह ऊदन है ❋ मेरा कहा मानिहै नाय ॥
रस्ता चलते राड़ बढ़ावै ❋ इसको नहीं कुछ परवाह ॥
सवा लाख की सुन्दर साड़ी ❋ फौरन रानी लइ मँगवाय ॥
सो पकड़ाय दई ऊदन को ❋ औ यह बात दई समझाय ॥
भेंट में देना यह समधिन को ❋ तब वह बिदा देयँ करवाय ॥
यह सुन समझ प्रसन्न होयके ❋ ऊदन चलपड़ा शीश नवाय ॥
बाहर आकर पृथीराज को ❋ लम्बा करी बन्दगी जाय ॥
करि हहास सब त्रास छोड़के ❋ बौरीगढ़ की सुरत लगाय ॥
रातदिनों की मंजिल करके ❋ वह बौरीगढ़ पहुँचा जाय ॥
एक कोस जब बाकी रह गया ❋ वहाँ पै तम्बू दिया गड़ाय ॥
फिर एक सादा कागज लेकर ❋ क्या खत लिखै सम्हार सम्हार ॥
पहले लिख दिया ओंकारको ❋ फिर तब कुशल महोवे क्यार ॥
चौथी लिख दिया चन्द्रावलि की ❋ उदयचन्द है नाम हमार ॥
बहन बिदाई की हैं अरजी ❋ मरजी जो होवै सरकार ॥
थोड़े लफ्ज यही है मेरे ❋ मुझको और नहीं दरकार ॥

यह मजमून पत्र में लिखकर ❀ धावन हाथ दिया पकड़ाय ॥
लेकर चिट्ठी धावन चल पड़ा ❀ पहुँचा वीर शाह के द्वार ॥
भरी कचहरी राजा बैठा ❀ मस्माभूत लगा दरबार ॥
बीस कदम से कुन्नस करके ❀ जा नजदीक में किया सलाम ॥
चिट्ठी फेंक दिया गद्दी पर ❀ राजा पढ़ने लगा मुदाम ॥
बहुत खुशी अब उसको होरहि ❀ मनमें बार बार मगन हो जाय ॥
एक बेटे को तुरत बुलाकर ❀ चिट्ठीका दिया हाल सुनाय ॥
जैसे बेटा तुम मेरे हो ❀ वैसे लगे उदयचन्द राय ॥
आदर सहित उसे याँ लाओ ❀ जो देखे से नैन जुड़ाय ॥
फौरन वह उस तरफ को चलपड़ा ❀ औ अब सुनो इधर का हाल ॥
बँगला सजा दिया राजा ने ❀ हर रंग सज गये लालगुलाल ॥
सिर पे लाल रंग की पगड़ी ❀ तगड़ी सुब्जरंग दिखाय ॥
साह मुसाहिब दरबारी सब ❀ उनकी दी पोशाक सजाय ॥
पहुँचा लड़का जब ऊदन पै ❀ जिसका जोरावर था नाम ॥
उठकर ऊदन मिला प्रेम से ❀ बैठाया दोनों भुज थाम ॥
बोला जोरावर तब ऊदल से ❀ अब क्यों याँ पै करो अबार ॥
फौरन चले चलो द्वारे पर ❀ गुजरे घड़ी-घड़ी पर बार ॥
यह सुन बातें जोरावर की ❀ खुश होगया बनाफल राय ॥
पहन पोशाकें तब यह अपनी ❀ औ बेन्दुल को लिया सजाय ॥
सज कर ऊदल ऐसा हो गया ❀ मानो इन्द्र अखाड़े जाय ॥
फौरन बैठ गया घोड़े पर ❀ जिसकी शान बरन ना जाय ॥
चला बेंदुला धावा करके ❀ अपने पंख दिया फैलाय ॥
उत्तर से दक्षिण को जावे ❀ पूरब से पश्चिम चल जाय ॥
कहिं कहिं उड़ जाय आसमान में ❀ औ कहि चले जमींपर आय ॥
लाले बादल की लाली में ❀ जैसे कला कबूतर खाय ॥
सर सर सर सर चले बेंदुला ❀ जैसे बाज चिड़ी पर जाय ॥
चितरंगी घोड़ी से जन्मा ❀ जिसके बदन पंख अँकुराएँ ॥

इस तरह उसे नचाता ऊदन ❋ पहुँचा वीरशाह के द्वार ॥
देखके सूरत नर ऊदन की ❋ क्या एकटक सब रहे निहार ॥
जहँ जहँ टाप गिरे बेंदुल को ❋ तहँ तहँ अजब दृश्य दिखलाय ॥
रंग साँवला उदयचन्द को ❋ नैना मृगशावक अनुहार ॥
ऐसे लखके सब मोहित भे ❋ कोइ ना सन्मुख रहे निहार ॥
ऊदन चला गया बँगले में ❋ देखे नजर उठाय उठाय ॥
जहाँ पै राजा वीरशाह है ❋ सारी सभा एक दिखलाय ॥
एक अवस्था सब को देखी ❋ सब सिर पाग एकरंग क्यार ॥
चीरा कलँगी एक रंग की ❋ यह लखि ऊदन हुआ हुश्यार ॥
अब वह समझगया अपने मन ❋ यह है ठाट यादवा राय ॥
फिर मुसकाते देखा उसको ❋ फौरन किया बन्दगी जाय ॥
पत्र लिखा जो परमालै ने ❋ वह राजा को दिया थमाय ॥
फिर जो साथ सम्पदा लाया ❋ वह भी सम्मुख दिया रखाय ॥
यह सामान देख चौथी का ❋ राजा वार मगन हो जाय ॥
पढ़कर चिट्ठी और खुशी हुआ ❋ सब मजमून देख रह जाय ॥
गले लगा लिया नर ऊदन को ❋ औ निज पास लिया बैठाय ॥
हाल चाल सब पूछन लागा ❋ वह खुश हो हो रहा बताय ॥
क्यों तुम भूल गये थे बेटा ❋ जो तुम अब तक यहाँ न आय ॥
चौथी पाकर अब हम खुश भे ❋ बात तुम्हारी भी बन जाय ॥
हाथ जोड़ के ऊदन बोला ❋ किरपा सभी यादवा राय ॥
किसमिस भरे जो ये हैं मटके ❋ इन्हें महल में दें पठवाय ॥
यह सुन राजा बहुत खुशी हुआ ❋ औ मटकेको दिया भेजाय ॥
फिर समुझाय कहा बेटे से ❋ सारा नगर देव सजवाय ॥
खबर करा दो रंगमहल में ❋ आये यहाँ उदायन राय ॥
गाने वाली नव युवतिन से ❋ मंगल गान देव करवाय ॥
सारे शहर गली के अन्दर ❋ सुमन सुगन्ध देव बगराय ॥
बन्दनवार जल्द सजवाओ ❋ सुबरन कलश द्वार सजवाय ॥

गाना बजाना हो द्वारे पर ❋ नौबत अभी देव बजवाय ॥
खुशखबरी का बजै नगारा ❋ बनता बरन करी ना जाय ॥
तब तक खबर मिली अन्दरसे ❋ ऊदन आवैं महल के माँय ॥
चल पड़ा ऊदन अब महलों में ❋ धावन बाँदी संग लगाय ॥
चन्द्रावलि की बहुत खुशी हुइ ❋ ज्यों शशि उगे होय उँजियार ॥
जिस रस्ते से चला उदयचन्द ❋ क्या खुशबू की है भरमार ॥
रंग केसरिया पिचकारिन भर ❋ ऊदन के अंग पड़ै फुहार ॥
लै लै रंग उमँग में सखियाँ ❋ औ ऊदन से करें किलकार ॥
लाले रंग की झड़ी लगा दें ❋ ज्यों घन बरस कुसुम रंग क्यार ॥
धन्य कहैं सब उदयचन्द को ❋ धन्य कोख जहँ लिय अवतार ॥
बौरीगढ़ की यह शोभा लख ❋ ऊदन वार मगन हों जाय ॥
झूमता चला जाय अन्दर को ❋ पहुँचा राजद्वार पर जाय ॥
दगी सलामी सब द्वारे पर ❋ शोभा देखत ही बन आय ॥
सुनो हकीकत अब महलों की ❋ रानी लखैं उदायन राय ॥
जो थी रानी वीरशाह की ❋ सुबरन थाल लई मँगवाय ॥
साज आरती पानी चलि भइ ❋ औ ऊदन पै पहुँची आय ॥
पूजि बाहुबल उदयचन्द की ❋ औ फिर आरति करी उठाय ॥
सुनो हकीकत उदयचन्द की ❋ चरनों में दिया शीश झुकाय ॥
जितना सुनहला था दिल्ली का ❋ लहर पटोर महोबे क्यार ॥
चीरा कलँगी सवा लाख की ❋ सो रानी के धरी अगार ॥
चौथ के मटके जो किसमिस के ❋ सो सब ऊदन दिया लखाय ॥
सोने चाँदी के जो जेवर ❋ सो नेगिन को दिये थमाय ॥
बाकी जेवर और कीमती ❋ वह रानी को दी पकड़ाय ॥
जो कोइ नेगी बाकी होवे ❋ उनको आप देयँ बटवाय ॥
वह सब पाकर नेगी खुश भे ❋ करें प्रशंसा औ हर्षाय ॥
आशीर्वाद देयँ ऊदन को ❋ युग युग जियो उदायन राय ॥
वही समैया के अवसर में ❋ चन्द्रा वहाँ पहूँची आय ॥

पाँव पकड़ के नर ऊदन की ❀ भैया भैया रही सुनाय ॥
कुशल पूछ रही सब मोहबे की ❀ अलग २ सब नाम गिनाय ॥
वही समैया के अवसर में ❀ माहिल उरई का सरदार ॥
आकर बैठा वीरशाह ढिग ❀ जो चुगली में कहर गुजार ॥
बात बनाकर जाल बिछाया ❀ ओ महाराज यादवा राय ॥
आफत आई है मोहबे पे ❀ भये नराज चन्देले राय ॥
आल्हा ऊदन दोनों भइयों को ❀ अपने राज से दिया भगाय ॥
तब यह ऊदन यहाँ को आया ❀ आपसे करै बहाना आय ॥
हित बन बैठा महल के अन्दर ❀ ये सब पूरे हैं ठगहार ॥
बिदा जो करिहो चन्द्रावलि को ❀ नाहक हँसी होय संसार ॥
दाग लगेगा रजपूती में ❀ नीलका टीका लगै लिलार ॥
जीते जन्म छुटैं ना धोये ❀ इससे मानो बात हमार ॥
जिन्दा इसे न भेजो मोहबे ❀ नहिं तो और बढ़ै तकरार ॥
बात बैठ गइ वीरशाह को ❀ उसकी बात हुई स्वीकार ॥
भोजन करने जावे ऊदन ❀ उसमें जहर करी भरमार ॥
पता लग गया चन्द्रावलि को ❀ उसने मनमें किया बिचार ॥
हाय गोसैयाँ मेरे परमेश्वर ❀ यह क्या होरहा अत्याचार ॥
जितने टहलू नेगी सब रहे ❀ वे सब समझ हुए हुश्यार ॥
गेडुआ जल भरि टहलू लेकर ❀ ओ ऊदन के खड़ा अगार ॥
भोजन त्याग महलके अन्दर ❀ पाँव पखार देउँ सरकार ॥
धोता जावै रोता जावै ❀ मुखसे छूट गई भुभकार ॥
रो-रो बात कहै ऊदन से ❀ भोजन मत करिहो सरकार ॥
किह्यो बहाना जा चौके पर ❀ कुछ भारी है पेट हमार ॥
जहर मिलाया है भोजन में ❀ याते साफ किह्यो इन्कार ॥
यह सुन समझलिया नर ऊदन ❀ तब लै लिया हाथ तलवार ॥
जब याँ देखा इन्द्रसेन ने ❀ तब ऊदन से कहा ललकार ॥
क्यों तलवार लगाकर चलते ❀ क्या कुछ तुम्हें दगा दिखलाय ॥

यातें छोड़ धरो इसको अब ❀ औ विश्वास करो दिल माँय ॥
खाली हाथ चला ऊदन तब ❀ इन्द्रसेन चौके पै जाय ॥
राह में छिपी रही चन्द्रावलि ❀ वह ऊदन को दइ समझाय ॥
थाल खींच लेना जीजा का ❀ अपना देना उनको टार ॥
जब पूछे तब किह्यो बहाना ❀ हमरे कुल यही व्योहार ॥
ईश्वर देह की रक्षा करना ❀ भैया यह मानो कहनाय ॥
इन बातों को रख हिरदे में ❀ फौरन गया उदायन राय ॥
सातौं लड़के वीरशाह के ❀ बैठे एक साथ में जाय ॥
थालैं परस गईं जब सबको ❀ तब ऊदन का सुनो हवाल ॥
थाल खींच लिया जीजा वाली ❀ उसको बना रहा वह ख्याल ॥
गुस्सा खाकर वे लड़के तब ❀ बोले यह क्या है महराज ॥
दिया जवाबै तब ऊदन ने ❀ तुमको क्या हो गया अकाज ॥
मेरे देश की यही चाल है ❀ थाली बदल करैं ज्योनार ॥
गुस्सा आ गया उन लड़कोंको ❀ सारा देह हुआ जल छार ॥
काली पुतली लाली हो गइ ❀ दोनों नैन लाल हो जाय ॥
बातन बातन बतबढ़ हो गइ ❀ गेड़ुआ से दिया मार मचाय ॥
गेड़ुआ चलावें वे ऊदन पर ❀ यह गेड़ुआ से दे टरकाय ॥
गड़बड़ मच गइ रंगमहल में ❀ उदन रहा सबै विचलाय ॥
तब सातों शरमाकर मनमें ❀ अपनी खैंच लई तलवार ॥
ऊदन आड़ रहा गेड़ुये पै ❀ औ गेड़ुये से कर रहा मार ॥
अष्टधातु का बदन था उसका ❀ वह था बली भीम अवतार ॥
बहुत उपाय कर रहे वे सब ❀ ऊदन जरा न माने हार ॥
फेंक के गेड़ुआ तब ऊदन ने ❀ महल का खम्भा लिया उखार ॥
सर सर सर सर खम्ब चलावै ❀ होने लगी मारही मार ॥
ऐसी दशा वहाँ जब हो रहि ❀ तब चन्द्रावलि किया विचार ॥
फौरन चली गई अन्दर को ❀ पति की उठा लाय तलवार ॥
वह पकड़ाय दिया ऊदन को ❀ पै ऊदन मन करै बिचार ॥

गर में वार करूँगा इससे ❀ तो फिर जीत न हुई हमार ॥
अब बन आई उन सातों की ❀ ऊदन को लिया कैद कराय ॥
मुश्क बाँधकर नर ऊदन की ❀ चोओ भकसी दिया गिराय ॥
अस्सी हाथ के नीचे देकर ❀ ऊपर पत्थर दिया सरकाय ॥
फुलवा मालन दूर से लखकर ❀ चन्द्रावलि पै पहुँची जाय ॥
हाल बताकर नर ऊदन की ❀ चोआ भकसी दिया बताय ॥
गाज पड़ गइ अब आ उसपै ❀ रोने लगी बहुत बिलखाय ॥
मारा दोहथ्थड़ है छाती पै ❀ धक्का गया कलेजे खाय ॥
छुटा पसीना तब शरीर से ❀ सारी सराबोर हो जाय ॥
लेकिन हालत कहे वह किससे ❀ उसकी कोई सुनैया नाय ॥
हिचकी बँध गइ चन्दावलि की ❀ रो हाय हाय डेकराय ॥
फिर भी दिलको बहुत थामकर ❀ फौरन भोजन लिया बनाय ॥
एक हाथ से भोजन लेकर ❀ एक से रस्सा लिया उठाय ॥
लेकर पहुँच गई भकसी पर ❀ औ पत्थर को दिया हटाय ॥
रस्सा छोड़ दिया भकसी में ❀ बोली सुनो हमारे भाय ॥
इस रस्से से ऊपर आजा ❀ पहरा यहाँ पै बैठो आय ॥
भोजन कर लो मेरे हाथ से ❀ जिससे मुझे धैर्य हो जाय ॥
बोला ऊदन तब भकसी से ❀ अब तू सुन ले कान लगाय ॥
गर मैं निकलूँ तेरे निकाले ❀ तो क्षत्रीपन जाय नसाय ॥
अगर असल है बहन हमारी ❀ फौरन खबर देश करवाय ॥
सज के आवे मोहबे वाला ❀ गढ़िया गर्द देय करवाय ॥
यह मन मान गई चन्द्रा के ❀ फौरन लौट महल को आय ॥
मन ही मन में गौर करे है ❀ किससे चिट्ठी दूँ पहुँचाय ॥
हाय गोसैयाँ मेरे परमेश्वर ❀ कर्ता भली बनाई आय ॥
याद आ गई उसे सुआ की ❀ फौरन पिंजड़ा लिया उठाय ॥
खिला पिलाकर उस पक्षी को ❀ सारा भेद दिया बतलाय ॥
गले में बाँध दिया चिट्ठी को ❀ जिसमें लिखा रहा सब हाल ॥

लेकर चिट्ठी उड़ा सूआ तब ❋ उसको ज्यादा हुआ मलाल ॥
जाते उसको माहिल देखा ❋ तब वह सोच-सोच रह जाय ॥
यह तो सुगना है मोहबे का ❋ यह कुछ खबर रहा पहुँचाय ॥
इससे इसको अब पकड़ायें ❋ सारा भेद अभी खुल जाय ॥
लिल्ली घोड़ी पै चढ़ बैठा ❋ सूआ के पीछे चलता जाय ॥
चलते चलते बहुत दूर जा ❋ नरवरगढ़ में पहुँचा आय ॥
राजा नरपति के बागों में ❋ सूआ बैठ वहाँ पै जाय ॥
माहिल चला गया राजा पै ❋ अपनी बात कहा समझाय ॥
सुनकर नरपति बहुत खुशी भै ❋ मकरन्दी को लिया बुलाय ॥
भेद बताकर तब सुग्गे का ❋ बोला उसे लेउ पकड़ाय ॥
बधिक बुलाया मकरन्दी ने ❋ उसको लीन्ह्यो सङ्ग लगाय ॥
फौरन चला गया बागों में ❋ औ सुग्गे को लिया पकड़ाय ॥
तब तक खबर महल से आई ❋ सीधे मेरे सामने आय ॥
हाथ में लेकर उस सुग्गे को ❋ जिसका रहा हिरामन नाम ॥
गौर से देखे औ पुचकारे ❋ बोला कहाँ तुम्हारा धाम ॥
चिट्ठी खोल लई गर्दन से ❋ सारा भेद लिया बैठाय ॥
फौरन चिट्ठी गले में बाँधी ❋ औ सुग्गे को दिया उड़ाय ॥
उड़कर तोता चला वहाँ से ❋ फौरन पहुँच महोबे आय ॥
जो थी बैठक रनि मल्हना की ❋ सबै ताकि-ताकि रह जाय ॥
नजर बदल गइ तब रानी की ❋ औ चिट्ठी पै नजर पड़ जाय ॥
बोली मल्हना तब तोते से ❋ ऐ तोते सुन कान लगाय ॥
कहाँ से आया कहाँ जायगा ❋ क्या कुछ दुःख-सुख चला उठाय ॥
सीधे आकर बैठ गोद में ❋ देखूँ कहाँ की चिट्ठी आय ॥
फौरन तोता उड़ा वहाँ से ❋ सीधे गिरा गोद में जाय ॥
खोल गले से खत को देखा ❋ दस्तखत तुरत लिया पहचान ॥
चिट्ठी भेज रही चन्द्रावलि ❋ ऊदन का मुश्किल में जान ॥
फौरन ज्वाब लिखा बेटी को ❋ बेटी धीर धरो मनमाय ॥

कछुक देर केरे अरसे में ❀ पहुँचे वहाँ बनाफल राय ॥
दूध भात देकर तोते को ❀ चिट्ठी दिया गले में बाँध ॥
बहुत खुशी से तोता उड़ चला ❀ उसकी पूरण हो गई साध ॥
सुनो हकीकत अब मल्हना की ❀ उसने छोड़ दई डिडकार ॥
मार दोहत्थड़ क्या महलों में ❀ रोने लगी जार बेजार ॥
रोहारोह पड़ा महलों में ❀ सारा गूँज उठा रनिवास ॥
हल्ला हो गया खलभल्ला ❀ लल्ला पड़ा आम औ खास ॥
रूपन बारी को बुलवा कर ❀ तब मल्हना ने कहा सुनाय ॥
जल्दी चला जाय सिरसे को ❀ औ मलखे को लाउ बुलाय ॥
सुनकर बातें यह रानी की ❀ रूपन सिरसे पहुँचा जाय ॥
सुनकर समाचार मोहबे का ❀ मलखा सहदम्भ पड़ जाय ॥
घोड़ी कबुतरी पर चढ़ बैठा ❀ औ मोहबे में पहुँचा जाय ॥
चरन लागि कै रनि मल्हना के ❀ सन्मुख खड़ा है शीश नवाय ॥
क्यों बुलवाया है माता ने ❀ मनका भेद कहो समझाय ॥
तब वह चिट्ठी चन्द्रावलि की ❀ नर मलखे को दी पकड़ाय ॥
चिट्ठी बाँचत परलै हो गई ❀ औ कुछ रहा ठेकाना नाय ॥
हाथ जोड़कर मलखे बोला ❀ माता सुन लो कान लगाय ॥
अब मैं देखूँ उस दुश्मन को ❀ जिसने धोखा किया बनाय ॥
चौथी लाऊँ मैं बहिनी की ❀ इसमें कोई मुजाका नाय ॥
ऐसा कहकर मलखे चल पड़ा ❀ औ आल्हा ढिग पहुँचा जाय ॥
हाल बताया नर ऊदल का ❀ आल्हा गया तामड़ा खाय ॥
फौरन बुला लिया ढेबा को ❀ अब तुम सगुन देव बतलाय ॥
कैसे काम बनै बाँदों में ❀ धोखा किया यादवा राय ॥
नरमी बानी ढेबा बोलै ❀ औ महाराज बनाफल राय ॥
भेष जोगिया हम सब कर लें ❀ तौ सब काम फते हो जाय ॥
हुआ मशवरा तब उन सबमें ❀ सबने कहा नहीं पर्वाय ॥
काम बनावै सभी तरह से ❀ वही है पक्का चतुर सुजान ॥

GP Dixit

ले सिद्धान्त समय जो खोवै ❀ वह है महा मूर्ख अज्ञान ॥
हुक्म लगा दिया नर मलखे को ❀ सारी फौज लेय सजवाय ॥
फौरन चला गया फौजों में ❀ जंगी चोप दई ठोकवाय ॥
मारू बाजा बजने लागा ❀ क्षत्री सावधान हो जायँ ॥
पहली लकड़ी के बाजे में ❀ सब घोड़ों को लिया सजाय ॥
दूसरी लकड़ी के बाजे में ❀ सबने उठा लई तलवार ॥
तीसरी लकड़ी के बाजे में ❀ ज्वानन कूदि भये असवार ॥
पचशावद हाथी सजवाकर ❀ आल्हा उसपर हुआ सवार ॥
लौट गरदना नाहर कशा ❀ घोड़ा हर नागर तैयार ॥
उसपर बैठ गया ब्रह्मानन्द ❀ जिसके बलका नहीं शुमार ॥
घोड़ी कबुतरी फौरन सज गई ❀ उसको सजत न लागी बार ॥
उसपर चढ़ गया मलखाना तब ❀ जिसके बल का नहीं शुमार ॥
नाम मनोरथा का जो घोड़ा ❀ उसपर देवनन्दन असवार ॥
तोपैं लद गईं हैं चरखिन पर ❀ औ आगे को दियो चलाय ॥
कूच नगाड़े को बजवाकर ❀ फौरन कूच दिया करवाय ॥
रात रेंगावै दिन भर धावै ❀ और कहीं ना करैं मोकाम ॥
पाँच दिनों की मंजिल करके ❀ पहुँचे दिल्ली जाय तमाम ॥
खेमे तम्बू गड़े बाग में ❀ मलखे घोड़ी रुकायो नाय ॥
सीधे चला गया पिरथी ढिग ❀ भस्माभूत लगा दरबार ॥
घोड़ी कबूतरी से पैदल हो ❀ आकर सन्मुख किया जुहार ॥
बोला पिरथी जीते रहियो ❀ आओ मेरे वीर मलखान ॥
कहाँ की त्यारी तुमने कीनी ❀ किसपर कोप भये भगवान ॥
हाथ जोड़ तब मलखे बोला ❀ ओ महराज धनी चौहान ॥
चन्द्रावलि को बिदा कराने ❀ ऊदन गया जा रही जान ॥
पापी राजा वीरशाह है ❀ उसने भकसी दिया गिराय ॥
सिर्फ आपके हुक्म की देरी ❀ फौरन उसे लूट लू जाय ॥
थोड़ी मदद आप भी देवें ❀ जाऊँ अभी कूच करवाय ॥

जितना ऊँचा गढ़ बौरी है ❀ उतना नीचा देऊँ कराय ॥
सुनकर बातैं यह मलखे की ❀ पिरथी कान हिलायो नाय ॥
सूरज बेटे को बुलवाकर ❀ औ यह हुक्म दिया फरमाय ॥
चौड़ा ब्राह्मण को सँग लेकर ❀ थोड़ी फौज लेव सजवाय ॥
जल्दी चले जाव मलखे सँग ❀ ऊदल पड़ा कैद में जाय ॥
जालिम राजा गढ़ बाँदौं का ❀ पहले उसे देना समझाय ॥
बिदा करा दें चन्द्रावलि को ❀ नहिं सब जावै काम नसाय ॥
घड़ी न बीती ना पल गुजरा ❀ दोनों फौज लिये सजवाय ॥
हाथी एकदन्ता के ऊपर ❀ फौरन चढ़ा चौंड़िया राय ॥
सब्ज बछेड़े की पीठी पर ❀ सूरज झपट हुआ असवार ॥
आकर दोनों एक दल हो गये ❀ मोहबे दिल्ली के सरदार ॥
सात रोज मारग में बीते ❀ तब बौरीगढ़ पहुँचे जाय ॥
थोड़ा फासला जब बाकी रहा ❀ वहाँ पै डेरा दियो लगाय ॥
कमर खुल गई रजपूतों की ❀ सबने भोजन लिया बनाय ॥
कर विश्राम रात भर क्षत्री ❀ प्रातः युक्ति बनाई जाय ॥
रात गुजरते सूरज निकला ❀ बोला तब बीर मलखान ॥
हुक्म लगायो नोनिआल्हा को ❀ जोगिन गुदड़ी लो मँगवाय ॥
भेष बनावैं सब जोगी को ❀ जिससे छूटें उदायन राय ॥
यह मन मान गई आल्हा के ❀ चार गुदड़ियाँ ली मँगवाय ॥
डाले गुदड़ी सब काँखों में ❀ तन में लिया भभूत रमाय ॥
माला छोड़ लिया गर्दन में ❀ घिसकर चन्दन लिया लगाय ॥
लिया बांसुरी ब्रह्मानन्द ने ❀ आल्हा लिया सितार उठाय ॥
खँजड़ी ले लिया नर ढेबा ने ❀ मलखे डमरू रहा बजाय ॥
चारों जोगी ऐसे सज गये ❀ क्या कोइ उन्हें सके पहिचान ॥
चारों चल पड़े गढ़ बौरी को ❀ करते हरि कीर्तन गुणगान ॥
शहर पनाह का जो फाटक था ❀ उसपर चारों पहुँचे जाय ॥
सुनो हकीकत दरबानी की ❀ वह जोगिन से कहा सुनाय ॥

कहाँ से आये औ कहाँ जइहो ❀ अपना हाल देव बतलाय ॥
लौट जवाब दिया मलखे ने ❀ फाटक अभी देव खोलाय ॥
बंगाले के रहने वाले ❀ हिंगलाज की सुरत लगाय ॥
भिक्षा माँगें जा नगरी में ❀ अपनो अलख जगावैं जाय ॥
सुनकर बातें यह दरवानी ❀ फौरन फाटक दिया खोलाय ॥
आगे कदम बढ़ा जोगिन का ❀ गाते भजन चले सब जायँ ॥
राग मोहनी वे सब गा रहे ❀ सुनकर मोह गईं नरनार ॥
रूप अनूप देख जोगिन को ❀ सब यह मनमें करें बिचार ॥
सर्वगुणों के ये सब लायक ❀ कैसा रूप दियो कर्तार ॥
धन्य भाग उन माँ बापों को ❀ जिनको कोख लिया औतार ॥
कोई इनाम दें मोहन माला ❀ कोई दुशालों की भरमार ॥
धीरे धीरे वे सब योगी ❀ पहुँचे राजद्वार पै जाय ॥
अलख जगाई बंभोला की ❀ राग रागनो रहे सुनाय ॥
सुनकर गाना उन जोगिन का ❀ बाँदी एक पहुँची आय ॥
जाकर खबर दिया रानी को ❀ रानी फौरन लई बोलाय ॥
अन्दर महल के जोगी पहुँचे ❀ राग रागनी रहे सुनाय ॥
जितनो तिरियाँ रंगमहल की ❀ रानी सहित मोह रहि जाँय ॥
बोली रानी आधीनी से ❀ बाबा नाच देव दिखलाय ॥
बजी बाँसुरी ब्रह्मानन्द की ❀ ढेबा खँजरी रहा बजाय ॥
बजै सितारा नोनिआल्हा का ❀ मलखे डमरू रहा बजाय ॥
नाचैं गावैं भाव बतावैं ❀ हँस हँस सबको रहे रिझाय ॥
रहँस जोगियों के दर्शन में ❀ रानी गई सनाका खाय ॥
बाजै खँजरी जो ढेबा की ❀ उसका हाल कहा ना जाय ॥
किटकिट धाकिट किटधा धिन्ना ❀ धिधकिट धाय धाय धिंकाय ॥
घुँघरू पैर में बँधे जो उनके ❀ छम छम नाच रहे दिखलाय ॥
छम छम पाँय जमीं में ठोकैं ❀ तब रानी ने कहा सुनाय ॥
हाथ जोड़ तब रानी बोली ❀ बाबा मानो कही हमार ॥

रहो महल में राग सुनाओ ❋ खिदमत करूँ मैं ताबेदार ॥
सुनकर बातैं मलखे बोला ❋ रानी सुनलो बात हमार ॥
बड़ी है मुश्किल हम यात्री हैं ❋ कहीं पर रुकना है बेकार ॥
रमता जोगी बहता दरया ❋ इनको रोक सकै कोइ नाय ॥
वही समइया के अवसर में ❋ बाँदी एक पहूँची आय ॥
आकर बोली महरानी से ❋ मेरी खता माफ हो जाय ॥
बहू बोला रहिं हैं जोगिन को ❋ जौं दें आप हुक्म फरमाय ॥
वह भी नाच देखैं जोगिन की ❋ रानी ने दिया हुक्म लगाय ॥
नहीं मुजाका कुछ इसमें है ❋ देहैं जोगी नाच देखाय ॥
लेकर बाँदी चली वहाँ से ❋ चन्द्रावलि ढिग पहुँची जाय ॥
सूरत देखा जब जोगिन की ❋ चन्द्रावलि ने कहा सुनाय ॥
तुम सब जोगी समझ पड़ो ना ❋ क्या हो किसी के राजकुमार ॥
किस कारण से जोगी होगये ❋ क्या दै दई विपत करतार ॥
चन्द्रावलि की यह बातैं सुन ❋ तब मलखे ने कहा सुनाय ॥
रूप अनूप दिया ईश्वर ने ❋ भगवत भजन करैं मनलाय ॥
एक समय हम सब गये कनवज ❋ राजा जयचन्द के दरबार ॥
भारी राजा बड़ा है दानी ❋ सब कुछ उसे दिया करतार ॥
उसके बाद गये मोहबे में ❋ जहँ परिमाल चन्देले राय ॥
उनकी महरानी मल्हना जो ❋ सुबरन कड़ा दिया पहनाय ॥
दिया जवाबैं चन्द्रावलि तब ❋ वह तो माता लगै हमार ॥
ब्रह्मानन्द हैं भाय हमारे ❋ पूरे तख्तनशीं सरकार ॥
जल्दी जावो जो मोहबे में ❋ तो मेरि खबर सुनावो जाय ॥
ऊदन गये जो विदा कराने ❋ उन्हें भकसी में दिया गिराय ॥
फौरन आवैं ब्रह्मा भैया ❋ लेकर फौज बड़ी बलवान ॥
कियो इशारा तब जोगिन ने ❋ इतनी मानो बहन हमार ॥
ब्रह्मा खड़े तुम्हारे सम्मुख ❋ और ये हैं आल्हा सरदार ॥
छोटा मोटा यही है ढेबा ❋ हमको सभी कहैं मलखान ॥

कहाँ है भकसी जहाँ है ऊदन * अभी बता दे ठीक ठेकान ॥
यह मन मानी चन्द्रावली के * वह रो-रो कर लगी बतान ॥
महल के पीछे जो खंदक है * उसमें पड़ा उदय बलवान ॥
पता लगा सब चले वहाँ से * और भकसी को देखे जाय ॥
फिर वे चले गये लश्कर में * वहाँ से रहे सुरंग खोदाय ॥
भकसी तलक सुरंग को खोदा * औ ऊदन को लिया छोड़ाय ॥
अब वह पहुँच गया लश्कर में * औ आल्हा को किया सलाम ॥
ढेबा मलखे ब्रह्मानन्द को * सबको उसने किया परनाम ॥
ऐसा खुशी हुई उन सबको * मानों रंक खजाना पाय ॥
फौरन हुक्म दिया आल्हा ने * सारा पल्टन लेव सजाय ॥
बजा नगाड़ा तब दलगंजन * जंगी फौज हुई तैयार ॥
बीर बहादुर मुश्क मरोड़ैं * लै लै मिट्टी कोठर यार ॥
गिरैं धमाका जमीं पै लोटैं * ज्वानन करैं डण्ड तैयार ॥
कबजे मल रहे तलवारों के * ऐसे वीर महोबे क्यार ॥
घड़ी न बीती ना पल गुजरा * सब दल साज हुआ तैयार ॥
हाथी पचशावद सजवाकर * उसपर आल्हा हुआ सवार ॥
घोड़ी कबुतरी के पीठी पै * उसपर मलखे हुआ सवार ।
लोट गरदना हरनागर पै * ब्रह्मानन्द हो गया सवार ॥
घोड़ा मनोरथा जो ढेबा का * उसपर वह भी हुआ सवार ॥
सब्जा घोड़ा त्यार खड़ा था * उसपर सूरज हुआ सवार ॥
एकदन्ता हाथी के ऊपर * फौरन होदा दिया सजाय ॥
उसपर चढ़ गया वीर चौंड़िया * बख्शी जोन पिथौरा राय ॥
जितनी तोपें थीं लश्कर का * वह सब चलीं अगाड़ी जाय ॥
परा बाँधकर सब लश्कर का * पहुँचे गढ़ बौरा में जाय ॥
खबर हो गई बीर शाह को * आई फौज बनाफल क्यार ॥
सातों बेटों को बुलवा कर * कहने लगा यादवा राय ॥
क्या कुछ खबर नहीं है तुमको * लड़ने आये बनाफल राय ॥

मारू बाजे को बजवाओ ❀ और फौजों को लेव सजाय ॥
जाकर देखो उन गुण्डों को ❀ सबकी शेखी दो भुलवाय ॥
फौजें सज गई गढ़ बौरी को ❀ जिनको सजत न लागी नार ॥
सूरज और जोरावर दोनों ❀ आकर हाँक दई ललकार ॥
कौन सा दुश्मन चढ़ आया है ❀ क्यों मरने को है तैयार ॥
घोड़ी बढ़ाकर मलखे बोला ❀ सुन लो मेरी बात सरकार ॥
मैं चढ़ आया हूँ मोहबे से ❀ और मलखाना नाम हमार ॥
कैसी खता हुई ऊदन से ❀ जो भकसी में दिया गिराय ॥
किसकी लड़की ना सावन में ❀ मैके जाकर करै त्योहार ॥
बिदा कराने ऊदन आया ❀ उसको डाल दिया बनसार ॥
अभी छोड़ दो उदयचन्द को ❀ नाहक क्यों करते तकरार ॥
बहन नाते बहनोई हो ❀ सो तुम बुरा कियो व्यवहार ॥
तापर ज्वाब दिये सूरज ने ❀ मलखे सुनलो कान लगाय ॥
सङ्ग तुम्हारे बिदा न करिहौं ❀ चाहे मूड़मार मर जाय ॥
सुनकर बातें यह सूरज की ❀ मलखा गया रोस में छाय ॥
काली पुतरियाँ लाली हो गईं ❀ आँखें अगिनज्वाल हो जायँ ॥
दिया जवाबें तब सूरज को ❀ मुझको तुम जाने हो नाय ॥
मथा समुन्दर नारायन ने ❀ चौदह रतन लिये कढ़वाय ॥
मलखे मथकर सब क्षत्रिन को ❀ उनका भेद लिया पँजि आय ॥
पुष्य नक्षत्तर में जन्मा हूँ ❀ बरहें पड़े बृहस्पति आय ॥
सूत भवानी मैं ना पूजूँ ❀ कंकड़ पत्थर पूजूँ नाय ॥
मैं एक जानूँ नारायन को ❀ शङ्का करूँ काल का नाय ॥
अमरित पीकर ना कोइ आया ❀ चाहे आज काल मर जाय ॥
इससे बात हमारी मानो ❀ बहिन को बिदा देव करवाय ॥
बिदा न करिहो जो बहिनी को ❀ तौ कुछ बात बनेगी नाय ॥
पल्टन प्यादे को क्या समझूँ ❀ क्या चमकाते हो तलवार ॥
जितने मेरे पड़ा सामने ❀ मारूँ खोज खोज सरदार ॥

जितना ऊँचा गढ़ बौरी का ❀ उतना नीचा दूं करवाय ॥
खोदके गढ़िया तेरे दादा की ❀ नदी नरवदा दूँ वहवाय ॥
सुनकर बातें यह मलखे की ❀ सूरज लाल बरन हो जाय ॥
हुक्म लगा दिया तोपखान का ❀ तोपन बत्ती देउ लगाय ॥
यह बातें सुन झुके खलासी ❀ तोपन आग दइ धधकाय ॥
छुटा भुसुंडा दोनों दल से ❀ धुँवना आसमान मेड़राय ॥
अररर अररर गोला छूटै ❀ गोली भन्न भन्न भन्नाय ॥
बारिश हो रहि बारूदों की ❀ जैसे मघा बूँद झरलाय ॥
एक घण्टे तक गोली बरसी ❀ फिर सब खैंच लिए तलवार ॥
चलै जुनब्बी औ गुजराती ❀ ऊना चलै विलायत क्यार ॥
पैदल भिड़गये हैं पैदल संग ❀ औ असवारों से असवार ॥
मारैं काटैं जमी गिरावैं ❀ कब्जा कठिन करैं तलवार ॥
वही समैया के अवसर में ❀ मोर्चा हटा यादवा राय ॥
भगे सिपाही बौरीगढ़ के ❀ दिल में बहुत रहे घबड़ाय ॥

❀ अथ राजकुमारों की लड़ाई ❀

सुमरन करके रामचन्द्र का ❀ लै बजरंगबली का नाम ॥
धरम मना के महाबीर का ❀ वीर वारा लिखौं बनाय ॥
मलखाने को लिखौं लड़ाई ❀ जिससे लड़ा यादवा राय ॥
वही समैया के अवसर में ❀ सूरज बढ़ा अगाड़ी जाय ॥
किया सामना तब मलखे ने ❀ औ सूरज को दी ललकार ॥
जीजा होकर करो सामना ❀ क्या मत मार दई करतार ॥
रुखसत करता नहीं बहन को ❀ औ ऊदन की हाल बेहाल ॥
मैं रिश्ते को बचा रहा हूँ ❀ नहिं बकरा सा करूँ हलाल ॥
सुनकर बातें यह मलखे की ❀ सूरज काल बरन हो जाय ॥
गाँसी चला दिया मलखे पै ❀ औ वह ले गया चोट बचाय ॥
बड़ा खेलाड़ी वह जोधा था ❀ मारा सिरसे का सरदार ॥

भाला मार्‍यो फिर सूरज ने ❋ उसे मलखे घोड़ा दिया हटाय ॥
तीसरा वार किया तेगे का ❋ उसे ढाल पै दिया टकराय ॥
चौथा वार करे था ज्योंही ❋ त्योंही मलखे कहा सुनाय ॥
वार तुम्हारी हमने झेली ❋ अब तुम सहो हमारी वार ॥
ऐसा कह के उसे रोक दिया ❋ नंगी खैंच लई तलवार ॥
चला झड़ाका ज्योंहीं करने ❋ त्योंहीं आल्हा कह्यो सुनाय ॥
खबरदार तुम इसे न मानो ❋ ना सब जावे काम नसाय ॥
मुश्क सिर्फ बाँध लो इसकी ❋ औ डेरे को चलो लिवाय ॥
औझड़ मार दिया सूरज को ❋ औ धरती में दिया गिराय ॥
यह गत देखी जोरावर जब ❋ फौरन किया सामना आय ॥
वार चलाय दिया मलखे पर ❋ मलखे ढाल से दिया गिराय ॥
खैंच के मारा जोरावर को ❋ औ धरती पर दिया गिराय ॥
फौरन बाँध लिया जोधा को ❋ औ डेरे को चला लिवाय ॥
भगे सिपाही बौरी वाले ❋ बीरशाह को हाल जनाय ॥
दोनों लड़के बँधे तुम्हारे ❋ भगे सिपाही पीठ देखाय ॥
अब तुम चले जाओ खेतोंको ❋ मारो फौज महोवे क्यार ॥
यह सुन बातैं बीरशाह ने ❋ फौरन खैंच लई तलवार ॥
इन्द्रसेन को साथ लगाकर ❋ जंगी फौज लिया सजवाय ॥
मारू बाजा बजने लगा ❋ लाल निशान दिया घुमवाय ॥
समरभूमि में फौजें डट गईं ❋ औ कुछ रहा ठेकाना नाय ॥
धै ललकारा इन्द्रसेन ने ❋ क्षत्री खबरदार हो जाय ॥
मार भगाओ महोबियों को ❋ जिसने बाँधा बन्धु हमार ॥
आगे बढ़कर मलखे बोला ❋ क्यों नाहक करते तकरार ॥
लड़े भिड़े में नहीं फायदा ❋ हमसे पेश मिलेगा नाय ॥
लगा महीना दिन सावन का ❋ कजरी तीज गई नगचाय ॥
हर देशों की यही प्रथा है ❋ बेटी सबकी नइहर जायँ ॥
आया बुलाने भाई ऊदल ❋ उसको कैद लिया करवाय ॥

जब तक ऊदन नहीं छुटैगा ❋ बहन का बिदा नहीं हो जाय ॥
मैं ना छोड़ूँगा मोरचे को ❋ चाहे तन धजी-धजी उड़ जाय ॥
दिया जवाबै इन्द्रसेन तब ❋ मलखे सुन लो बात हमार ॥
तुमरे सँग तो बिदा न करिहौं ❋ चाहे दिन रात चले तलवार ॥
हुक्म लगा दिया तोपवान को ❋ तोपन बत्ती देउ लगाय ॥
सुनकर बातैं झुके खलासी ❋ फौरन बत्ती दई लगाय ॥
छुटी भुसुण्डी दोनों दलसे ❋ गोला गरजै घम्मासान ॥
जिस रस्ते को गोला जावै ❋ कुछ भी रहे न नाम निशान ॥
अररर करके गोला छूटै ❋ सन सन करती लाल कमान ॥
भनन भनन कर गोली भनके ❋ कुह कुह करैं अगिनियाँ बान ॥
घड़ी न बीती ना पल गुजरा ❋ तोपवान हो गये हैरान ॥
हुक्म लग गया दोनों दल में ❋ तेगा उठा लेहु धनु बान ॥
बढ़े सिपाही तब आगे को ❋ जीवन आश दियो भुलवाय ॥
ज्यों पानी में पानी मिल जाय ❋ त्यों दोनों दल इक हो जाय ॥
सुण्ड लपेटा हाथी भिड़ गये ❋ घोड़े बाग पकड़ असवार ॥
पैदल पल्टन लड़े आपस में ❋ कीन्हें अजब गजब की मार ॥
कट-कट मुण्ड गिरैं धरती पर ❋ उठ उठ रुण्ड करैं तलवार ॥
जितने ज्वान रहे मोहबे के ❋ मारु मारु कर रहे पुकार ॥
जैसे बढ़ई बन को काटै ❋ औ बबुरी बन करै उजार ॥
ज्यों किसान खेती को काटैं ❋ पीछे लौनी देय लगाय ॥
जैसे बन्दर चढ़ तरुवर पर ❋ औ फल खाय-खाय सो जाय ॥
वैसे काटैं मोहबे वाले ❋ बाँदो वाले चले पराय ॥
तब ऊदन अपना दल लेकर ❋ फौरन हुआ सामने जाय ।
किया सामना तब मोहन ने ❋ औ यह बात कही समझाय ॥
खबरदार तुम रहो सँभल कर ❋ क्यों यम चढ़े भुजों पर आय ॥
मार गिरा दूँ अभी खेत में ❋ शेखी शान खत्म हो जाय ॥
किया जड़ाका नर ऊदन पै ❋ ऊदल ले गया चोट बचाय ॥

तीन वार मोहन के हो चुके ❀ तब ऊदन ने कहा सुनाय ॥
ओसरी-ओसरी लड़ो सामने ❀ दो में एक आँकु रह जाय ॥
भाला लेकर नागदवन का ❀ औ मोहन पर दिया चलाय ॥
वार चला गया वह घोड़े पर ❀ घोड़ा गिरा धरन पर जाय ॥
मोहन पैदल खड़ा जमीं पर ❀ ऊदन ने लिया उसे बँधाय ॥
देख हकीकत यह मोहन की ❀ जगमन वहाँ पहूँचा आय ॥
किया सामना तब देबा ने ❀ क्यों शिर काल रहा मँड़लाय ॥
गुस्सा खाकर तब जगमन ने ❀ फौरन भाला दिया चलाय ॥
वार बचाया उसे ढाल पै ❀ जगमन देख देख रह जाय ॥
डाँट बताई तब देबा ने ❀ जगमन खबरदार हो जाय ॥
अब ना छोड़ूँगा मैं तुमको ❀ लालसा तेरे प्राण सँग जाय ॥
ढाल की झोंफड़ से धै मारा ❀ जगमन गिरा भरहरा खाय ॥
मुश्कैं बाँध लिया देबा ने ❀ अपनी फौज में दिया पठाय ॥
मोती पूरन आये तड़कते ❀ उन्हें ऊदन ने लिया बँधाय ॥
देख हकीकत महोबियों की ❀ मोरंग वाले गे घबड़ाय ॥
तब ललकारा इन्द्रसेन ने ❀ ज्वानौं खबरदार हो जाय ॥
सारे भाई बँधे हमारे ❀ उनको लेओ जल्द छोड़ाय ॥
नौकर चाकर तुम्हें न जानूँ ❀ तुम सब भैया लगो हमार ॥
जैसे हमें आश थी उनसे ❀ वैसी आशा करें तुम्हार ॥
खेद महोबियों को तुम मारो ❀ नहिं रजपूती जाय नशाय ॥
ऐसे बढ़ावा दै ज्वानों को ❀ औ आगे को दिया बढ़ाय ॥
जोश में भर कर बौरी वाले ❀ करने लगे गजब की मार ॥
यह गत देखी जब मलखे ने ❀ फौरन खैंच लई तलवार ॥
जैसे भेड़िया दल में पैठे ❀ जैसे खेती लुनै किसान ॥
जैसे तमोली पान को कतरै ❀ मलखे काट करै खरिहान ॥
चौंड़ा चौंड़ा को ललकारै ❀ बख्शी जलहर को सरदार ॥
किसके पैड़े अब तुम देखो ❀ यह सर पड़ी तुम्हारे यार ॥

मार भगावो इन पाजिन को ❋ ऐसा वक्त मिलेगा नाय ॥
सुनकर बातें मलखाने की ❋ चौंड़ा हाथी दियो बढ़ाय ॥
साँकल लेकै तब चौंड़ा ने ❋ एकदन्ता को दिया थमाय ॥
हाथी बिगड़ गया फौजों में ❋ औ ज्वानन को रहा गिराय ॥
देखि हकीकति यह हाथी की ❋ क्या सब छोड़ भगे मैदान ॥
यह मनमानी इन्द्रसेन के ❋ तब मन माहिं किया अनुमान ॥
किया सामना नर मलखे से ❋ आगे घोड़ा दिया बढ़ाय ॥
गुर्ज चला दिया मलखाने पै ❋ उसने घोड़ा दिया हटाय ॥
खाली वार गया क्षत्री का ❋ सम्मुख गुर्ज गिरा अरराय ॥
मारा भाला तब मलखे ने ❋ औ घोड़े को दिया गिराय ॥
इन्द्रसेन अब पैदल हो गया ❋ मलखे ने लिया उसे बँधाय ॥
हल्ला मच गया औ खलभल्ला ❋ सबदल तितीबिड़ी हो जाय ॥
सातौं लड़के वीरशाह के ❋ इस तरह मलखे लिया बंधाय ॥
फौज भागि गइ वीरशाह की ❋ अपना फेंकि फेंकि हथियार ॥
ये गति देखी वीरशाह ने ❋ मलखे पास पहूँचा जाय ॥
डपट के बोला मलखाने से ❋ अब तुम खबरदार हो जाय ॥
अबकी बचिजा मेरे लोहा से ❋ जानो नया लिया औतार ॥
तेगा मारा बर्दवान का ❋ जामे धरी चीरमा बाढ़ि ॥
ये तो खेलाड़ी मोहबे वाला ❋ तरवरिया में पट्टेबाज ॥
ढाल अड़ा दइ गैंड़ेवाली ❋ वीरशाह लखि गये सरमाय ॥
अङ्ग बचाके मलखे चल दिया ❋ आल्हा पास पहुँचा जाय ॥
नरमी बानी मलखे बोले ❋ भइया सुन लो बात हमार ॥
तुम्हरी बरनी वीरशाह से ❋ अबहीं उन्हें लेव बँधवाय ॥
ये बातें सुन मलखाने से ❋ आल्हा कहेव मुजाका नाय ॥
किया सामना वीरशाह का ❋ अपनो बातें रहा सुनाय ॥
कही हमारी मानि जाहु तुम ❋ बहिन को बिदा देहु करवाय ॥
कैद से छोड़ो उदयचन्द को ❋ हमहूँ लौटि महोब्बे जायँ ॥

ये बातें सुनि सुनि आल्हा की * वीरशाह नहिं सके सम्हार ॥
दिया जवाबें तब आल्हा को * अबहीं लौटि महोब्बे जाव ॥
धोखे न रहिहो तुम माड़ो के * जहँ लै लियो बापके दाव ॥
भागे बचिहो ना मोहबा लै * अबहीं लौटो जान बचाय ॥
ये बातें सुन कर आल्हा ने * वीरशाह से कहि समुझाय ॥
सो सो मनके वजन बने हैं * रजपूती में न दाग लगाय ॥
पाँव बढ़ाय जो पीछे टारै * जीना मेरा वृथा हो जाय ॥
जब तक बहिन बिदा ना होवै * तबलग लौटब है दुशवार ॥
अंगुल अंगुल कटै नालकी * चावल चावल कटै ओहार ॥
बाँस नालकी तबौं न छोड़ें * बरु हो जाये बंटाढार ॥
ये बातें सुन ली आल्हा की * वीरशाह जल हुआ खँभार ॥
भाला मारा है आल्हा को * आल्हा लीन्हेउ अङ्ग बचाय ॥
गुर्ज उठाई वीरशाह फिर * वै आल्हा पर दियो चलाय ॥
हाथी हटा दियो आल्हा ने * भुइँ महँ गुर्ज गिरी अरराय ॥
बढ़ि गई हाथी उस आल्हा की * हौदे से हौदा मिलि जाय ।
तीसरा वार किया तेगा का * गैंड़ ढाल पर दियो अड़ाय ॥
आल्हा मन-मन सोचन लागे * अब हम कौन करैं मनुसार ॥
सोच समुझि के वै हाथी को * जेहि पर वीरशाह असवार ॥
हौदा गिरि गै वीरशाह के * राजा कौन करै उपचार ॥
टक्कर मारै वै हाथी को * जेहि पर वीरशाह असवार ॥
आल्हा उतरि के पचशावद से * वीरशाह को बाँधेउ धाय ॥
समै न बिगड़े यार किसी का * सच्चा मित्र दाव दे जाय ॥
लखिके बंधन वीरशाह को * सेना बारह बाट हो जाय ॥
झुकी सफर मैना मोहबा की * बौरीगढ़ को लियो घेराय ॥
हुकुम लगा गयै नोनिआल्हा के * ब्रह्मानन्दको लिया बोलाय ॥
आल्है कहिदियो ओहि ब्रह्मासे * एहि गढ़में दो आग लगाय ॥
ये बातें सुनि वीरशाह ने * तब आल्हा से कहा सुनाय ॥

केहिकर लड़िका यह जो आये * हमको अभी देहु बतलाय ॥
बोला आल्हा वीरशाह से * लड़िका यहै मल्हन दे क्यार ॥
चन्देले हमरे सँग भेजे * रनि मल्हना की यही है राय ॥
बहिन बुलाने यह आये हैं * यह तुम समुझि लेउ मस मायँ ॥
नाम तो वीरशाह ऐसो है * सो दिल बुजदिल दियो बनाय ॥
भेजा रानी ने ऊदन को * उसको डाल दिया बनसार ॥
ये बातैं सुनि वीरशाह ने * मुखसे बचन कहे बिलखाय ॥
चुगुल महिलबै चाकी मारै * बनी बात को दी बिगड़ाय ॥
दोष हमारो कछु नाहीं है * साँची मानो कही हमार ॥
बिदा कराने की तैयारी * हम सबही विधि दियो कराय ॥
तौलौं चुगुला उरई वाला * सो हमसों अस आय सुनाय ॥
बिदा न करिहौं तुम ऊदन सँग * नहिं तो बात बिगड़ि सब जाय ॥
आल्हा ऊदन को परिमालिक * मोहबा राजसे दियो निकार ॥
मारे इरखा के यहाँ आये * बिदा की बात बनावैं आय ॥
बिदा जो करिहो इनके सँगमें * आपन दासी लिहैं बनाय ॥
हँसी करैहैं देस देस में * सब पति पानी जाय तुम्हार ॥
ये बातैं सुनि वै चुगुला की * हमहूँ जानि लीन सतभाव ॥
गंगा झँपिया हाथे लै कै * किरिया किया महिलिया राय ॥
अब जो कहो करैं सोई हम * तुमसे तनिक उजर ना बाय ॥
कैदसे छोड़ो इन लड़िकन को * अपनी बहिन संग ले जाय ॥
गंगा करि जो तुमहिं बिगाड़े * तेहिकर गंग बिगड़िहैं जाय ॥
होनी कै अनहोनी होवै * अनहोनी होनी हो जाय ॥
यहाँ बजार लगी याही कै * सब कोइ देखै नैन उघार ॥
ये मन मानी तब आल्हा के * सो कहि दियो भुजाका नाय ॥
सातो सुत जो वीरशाह के * उनको आल्हा दियो छोड़ाय ॥
यह गति लखिकै वीरशाह तब * पहुँचे महल जनाने मायँ ।

रानी बोली वीरशाह से ❀ स्वामी तेरी बलैया जायँ ॥
अबहिं बिदा करो बहुआरि को ❀ जो कछु मानों बात हमार ॥
ये लड़के गढये नाते के ❀ जे हके है पारस की खानि ॥
तेहि से शंका नाहक राखो ❀ केहि विधि कुशल करैं भगवान ॥
ये बानी सुनि निज रानी की ❀ वीरशाह लीनी मनमान ॥
सबै बोलायो तब राजा ने ❀ आदर कीनी गरे लगाय ॥
सातौ सुत रहे एक ठौर सम ❀ जाके मिले भवन ढिग जाय ॥
मन प्रसन्न करि सब सबही से ❀ बनता बरनि जाय सो नाहिं ॥
दुखी व्यापि गई तब रानीको ❀ साजि आरती सुबरन थार ॥
परछन करिके चन्द्रावली की ❀ जाको निछावरि दई करार ॥
बैठि पालकी चन्द्रावलि तब ❀ पहुँची तुरत पालकी मायँ ॥
तब सब चलिभे वे बौरी से ❀ खुसीको गाना गावत जायँ ॥
अब चल तब चल के चलने में ❀ ओहि मोहबा को गये नेराय ॥
यह सुनि पाई रनि मल्हना ने ❀ सजि धजि खड़ी द्वार पर आय ॥
तबलौं पहुँचि गयो द्वारे पर ❀ मल्हना देखि खुशी हो जाय ॥
उतरि पालकी से चन्द्रावलि ❀ मल्हना महल में गई लिवाय ॥
चैन की बंशो बाजन लागी ❀ दगैं सलामीं बारम्बार ॥
जेहि विधि युद्ध भयो बौरी में ❀ तेहि विधि साँची लिखौं बनाय ॥
आगे लड़ाई है दिल्ली की ❀ जहँ ब्रह्मा कर भयो विवाह ॥
जेहि विधि व्याह हुआ बेलाका ❀ सो सुनिये सब कान लगाय ॥
भजन विष्णुपद दिनमें गावो ❀ सोरठ रात्रि समै में गाय ॥
आल्हा पँवारा तब भल लागै ❀ जब बारिस की समय नगिचाय ॥
शिव योगी को सुमिरि हिये में ❀ करके पारवती का ध्यान ॥
भाँग धतूरों से जो खुश हो ❀ गलमें मुण्डमाल शशि भाल ॥

॥ इति चन्द्रावलि की चौथी (बाँदौं गढ़) की लड़ाई समाप्त ॥

मुद्रक—बम्बई प्रेस, वाराणसी।

N. 13810388

SCP GANESH PRASAD